॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥

संस्थापक : सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश

वर्ष : 24
अंक : 6

15 अप्रेल 2004

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र
अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



कुम्भ के पावन पर्व पर - सतूगुरू की लें शरण,
आचार्य टेऊँराम जी के - लें पकड़ प्यारे चरण ।
सतूगुरू के चरनामृत का -निज अंचुली में भरके जल,
कर पान जो महातृप्त हो - ये कुम्भ उसका है सफल ॥



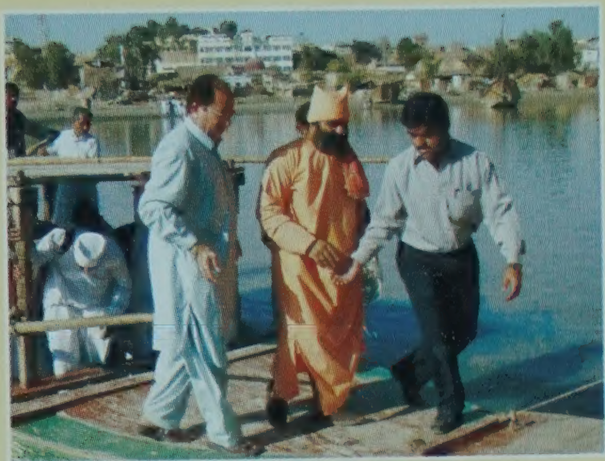


कुम्भ मेला स्मृति शेष अंक

उज्जयिनी कुम्भ महापर्व 2004

महाकालेश्वर मंदिर, उज्जैन

वार्षिक शुल्क
50/- भारत वर्ष में
350/- विदेश में



साधु बेला में जाते हुए सद्गुरु महाराज जी



शिकारपुर दरबार



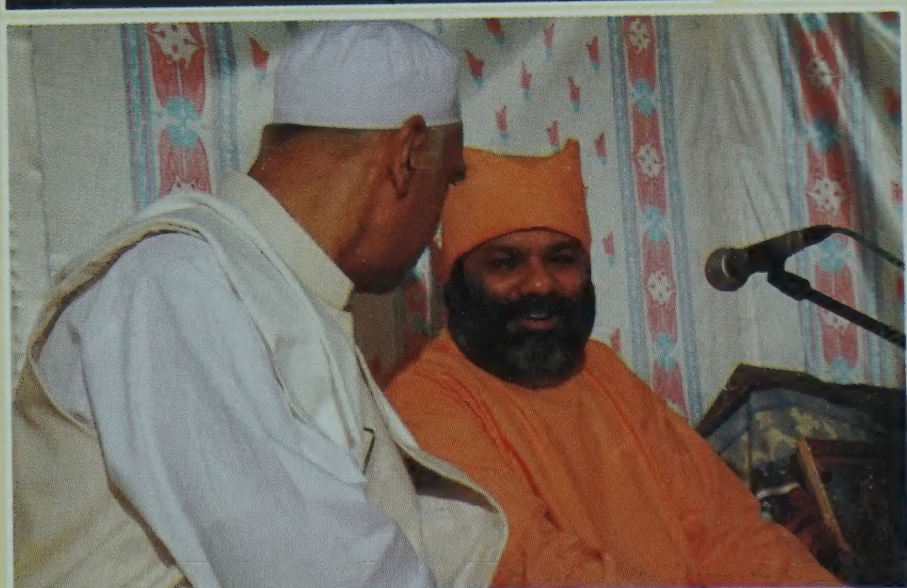
कराची में भगवान शंकर के मंदिर में दर्शन करते हुए सद्गुरु महाराज जी

सिंध यात्रा दर्शन





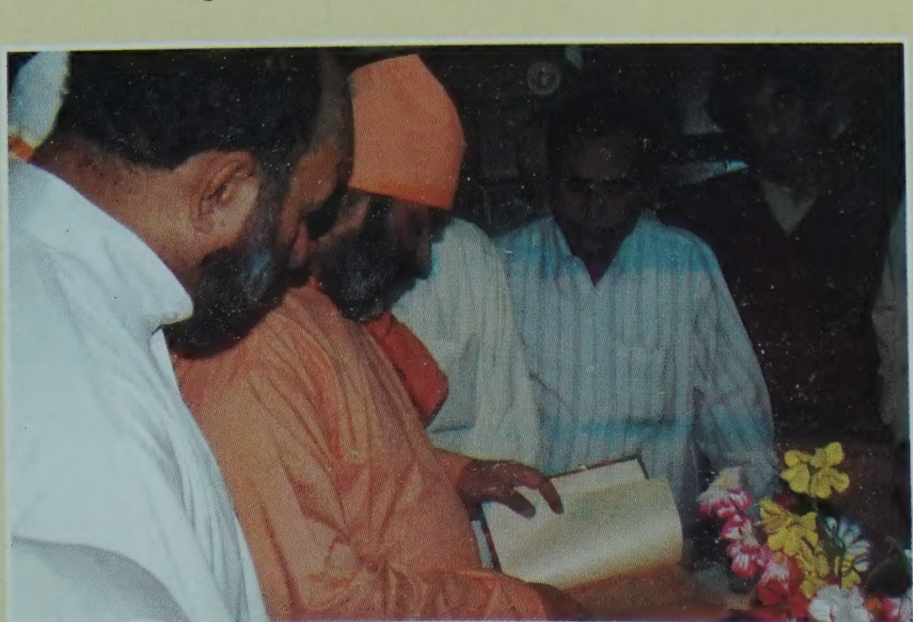
ऐतिहासिक कंडी वृक्ष के साथ सद्गुरु महाराज जी व सन्त मण्डल



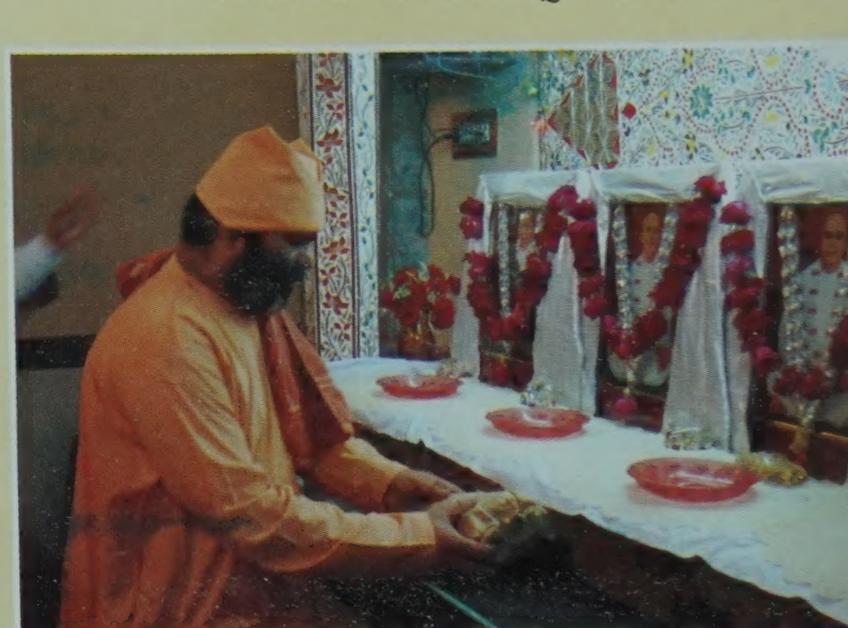
संत चाण्डुराम साहेब से वार्तालाप करते हुए सद्गुरु महाराज जी



संत साधराम जी के साथ सद्गुरु महाराज जी



सखर में पुस्तकालय का अवलोकन करते हुए सद्गुरु महाराज जी



ॐ श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र
अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

वर्ष 24 अंक 6

प्रेम प्रकाश संदेश

अनुक्रम

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए –	50 रू.	350 रू.
तीन वर्ष के लिए –	140 रू.	1000 रू.

मूल्य एक प्रति 10 रूपए (इस अंक का)

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए.

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :–
व्यवस्थापकः– प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम,

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति शनिवार व रविवार प्रातः 8 से 12 बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए शुल्क जमा किया जा सकता है.

समुद्र मंथन से  प्राप्ति हुई अमृत-कलश की

(पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

अमृत पान करने के लिए देव असुरों में छीना झपटी हुई और अमृत की बून्दें, जहां जहां पर कलश से छलक कर गिरीं, व वहां कुम्भ का मेला लगता है, ऐसा वृतान्त प्रसिद्ध है. वास्तव में सनातन धर्म का यह विराट मेला अपना कोई सानी नहीं रखता. वि भर में अनन्त मेले आयोजित होते रहते हैं, विभिन्न धर्मावलम्बी अपनी अपनी विचारधारा का प्रचार प्रसार करने के लिए अनेक समा आयोजित करते रहते हैं. लेकिन कुम्भ-मेला सबसे निराला है. हिन्दू सनातन धर्म रूपी वट-वृक्ष की अनन्त शखाएं हैं-तैंतीस करोड़ दे देवताओं के विभिन्न उपासकगण-संख्या में अनन्त होते हुए भी सनातन धर्म के झण्डे के नीचे एक हो जाते हैं. अनेकता में एकता दुर्लभ उदाहरण इस मेले में दृष्टिगोचर होता है.

वास्तव में प्रत्येक आयोजन के पीछे कुछ उद्देश्य अवश्य होता है. अनन्त मानव समुदाय गण की रूचि के भी अनन्त रूप एक विचारधारा, एक उपासना पूजा पद्धति में सबका मन रम जाय, ऐसा होना असम्भव है. मानव के मन के संस्कार, बनावट श्र आस्था की मात्रा में अंतर ही विभिन्न मत सम्प्रदायों के आविर्भाव का मूल कारण है, अपनी अपनी रूचि संस्कारों के अनुसार मा अलग अलग मत पन्थों का अनुयायी बन जाता है-इस प्रकार अनन्त मत पंथों का विकास होता है. उन सब पंथों को एक सूत्र में पि का कार्य सम्पन्न करने के लिए-कुम्भ मेले का वृहद् आयोजन-हमारे ऋषियों-मुनियों प्राचीन मनीषियों द्वारा किया गया. पवित्र न के पावन तटों पर अध्यात्म गंगा का प्रवाह निरन्तर बहता रहे. परिवर्तनशील समाज-बदलते समय बदलते परिवेश-बदलते मूल्य के भी मानव अपने पुराने मूल्यों को न भूले-इस महत् कार्य में इन उत्तव आयोजनों का अमूल्य योगदान है.

इन सब के अतिरिक्त अध्यात्म की ओर मन का रूझान बढ़ाने में भी इन आयोजनों का विशेष महत्व है. भौतिक सुख सम के पीछे भागते रहने से स्वार्थमयी एवं क्षुद्र मनोवृत्तियां उत्पन्न होती हैं परिणाम स्वरूप समाज में क्लेश झगड़े झंझट अपराध बढ़ हैं. थोड़ी देर के लिए आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होने से एवं सत्संग सत्पुरूषों के सान्निध्य से मन की कलुषता धुल जाती है- अ संस्कार एवं सत्विचारों का मन में प्रस्फुटन होता है- सांसारिक प्राणियों के लिए यह अमूल्य लाभ हैं.

जो उच्चतर स्थिति प्राप्त करने के जिज्ञासु हैं- मोक्ष के आकांक्षी हैं-उनके लिए भी वैरागी निर्मोही महापुरूषों के सदुपदेश मेले में सुलभ होते हैं.प्राचीन वाङ्मय के गूढ़ज्ञान की विशद् व्याख्या करने वाले मनीषी अपनी ज्ञान गंगा के प्रवाह से भक्तजनों को करते हैं.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का जब से आविर्भाव हुआ है तब से मण्डल के सत्पुरूषों के नेतृत्व में-प्रेम प्रकाश छावनी का आयो कुम्भ मेले में होता रहा है-प्रेम प्रकाशीगण-इस मेले में सम्मिलित होकर ज्ञान गंगा में डुबकी लगाते हैं. साथ ही भारतवर्ष की सांस्कृ विरासत से परिचित होते हैं. कुम्भ मेला दर्शन भी ईश्वर कृपा-गुरू कृपा से ही प्राप्त होता है.

कुम्भ का मतलब कलश – अमृत भरा घट जानिए
हृदय अमृत कुण्ड भी – हर घट में व्यापक मानिए
अमृत की छलकी बून्द को – जिस जन को पीना आ गया
सतगुरू कृपा से उस सुजन को – जग में जीना आ गया

विष से भरा संसार है – जीवन बना है हालाहल
झंझट अनन्त असंख्य हैं – चारों तरफ है कोलाहल
अशान्त इस संसार में – मिल गई जिसे महाशान्ति है
गुरूवर की समझो हुई कृपा – उसकी मिटी सब भ्रान्ति है

कुम्भ के पावन पर्व पर – सतगुरू की लें शरण
आचार्य टेऊँराम जी के – लें पकड़ प्यारे चरण
सतगुरू के चरणामृत का – निज अंचुली में भरके जल
कर पान जो महातृप्त हो – ये कुम्भ उसका है सफल

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर
1 अप्रेल 2004

आभार

पुण्य सलिला क्षिप्रा के तट पर स्थिति पवित्र देवनगरी उज्जैन में सदी के प्रथम सिंहस्थ के पावन अवसर पर प्रकाशित प्रेम प्रकाश संदेश का यह विशेषांक पाठकों को सौंपते हुए हम बहुत हर्षित हैं और हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि विगत वर्षों के विशेषांको की भांति यह विशेषांक भी आपकी अपेक्षाओं की कसौटी पर खरा उतरेगा और इस विशेषांक की रचनायें/लेख आपको आध्यात्मिक/धार्मिक विचारों से सराबोर कर देंगे. इस विशेषांक में विविध ग्रंथों व सतपुरूषों की वाणी को उन श्रद्धासद लेखकों के सत्प्रयास से संकलित किया गया है. अतः सारा श्रेय उन्हीं को है, हमने तो केवल उनको एक जगह सजाने भर का प्रयास मात्र किया है, इस प्रयास में हम से प्रमादवश अनेक प्रकार की त्रुटियां हुईं होगीं, उनकी जिम्मेदारी हमारी है, हम उन गलतियों के लिए सतपुरुषों, लेखकों, पाठकों के क्षमाप्रार्थी हैं.

इस कुम्भ स्मृति शेष सिंहस्थ अंक में हमने प्रयास किया है कि सिंहस्थ से सम्बंधित धार्मिक विचार/लेख आपको पढ़ने को मिलें, पर हम इस अंक के प्रति अपना दायित्व निर्वाह सफलतापूर्वक कर सके हैं या नहीं यह निर्णय तो आपको ही करना है.

आपकी प्रेम प्रकाश संदेश के प्रति अंगाध श्रद्धा एवं आपके द्वारा भेजे गये सुझाव प्रेम प्रकाश संदेश के स्तर उन्नयन में अवश्य ही प्रेरणा स्त्रोत बनेंगे. आपकी समीक्षा रूपी ज्ञान शलाका प्रेम प्रकाश संदेश के प्रगति का मार्ग सदैव आलौकित करती रहेगी, ऐसा हमारा विश्वास है. आपके द्वारा भेजे गये अमूल्य सुझाव हमारे आगामी अंको की उत्कृष्टता के लिए मील के पत्थर साबित होंगे.

एक बार फिर हम अपने सुहदयी पाठकों का आभार ज्ञापित करते हैं जिनके द्वारा दिये गये सुझावों ने प्रेम प्रकाश संदेश को इस मुकाम तक पहुंचाया है. साथ-ही अंत में हम पूज्य गुरूजनों के श्रीचरणों में सादर दण्डवत् प्रणाम करते हुए प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के वर्तमान पीठाधीश्वर पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का सदी के प्रथम सिंहस्थ के पावन अवसर पर हृदय से सादर अभिनन्दन करते हुए नतमस्तक हैं क्योंकि आपकी ही असीम आशीष से हम प्रेम प्रकाश संदेश आप तक पहुंचाने में सफल हुए हैं.

सम्पादक

सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का संत मण्डली के साथ हरिद्वार कुम्भ दर्शन

सन् 1926

अतीत के पन्नों से

दिनांक पच्चीस फाल्गुन को स्वामी ग्वाललाल और अन्य साधुओं ने महाराज जी से निवेदन किया, हे प्रभो! इस वर्ष बारह वर्षीय कुम्भ का मेला हरिद्वार में है, जिसकी महिमा सभी सन्त महात्मा करते हैं, हमारी मर्जी है कि यह मेला देखना चाहिए. सद्गुरू महाराज जी ने कहा, यहाँ भी चैत्र मेला है, उसे भी छोड़ना नहीं है. इसलिए सब मिलकर आपस में सलाह करिए कि क्या करना चाहिए. इस पर सब साधु हाथ जोड़कर सद्गुरू महाराज जी से कहने लगे हे प्रभो! दो तीन साधु यहाँ पर मेले की तैयारी करें और मेला लगवाएं. हम भी कुम्भ मेले का दीदार (दर्शन) कर, प्रथम डुबकी लगाकर, वापस आकर मेला मनाएंगे. जिनको आप आज्ञा दें वे यहाँ रुक जाएं, शेष आप के साथ कुम्भ मेले पर चलें .सद्गुरू महाराज जी ने मुस्करा कर कहा, यहाँ सर्वानन्द,शान्तिप्रकाश,प्रेमानन्द,माधवदास चन्दनराम को छोड़ते हैं. यह कार्यक्रम बनाकर दिनांक अट्ठाईस फाल्गुन सवत् १९८३ सन् १९२६ को सद्गुरू महाराजजी स्वामी ग्वाललाल, गुरुमुखदास, बसन्तराम, ऊधवदास, मुरलीधर, भगवानदास, सन्तदास, मंघनदास और अन्य प्रेमियोंके साथ मण्डली बनाकर,लाहौर मेलमें चढ़कर रवाना हुए.

इधर स्वामी सर्वानन्दजी ने सन्तो से मिलकर मेले की तैयारी शुरू की जैसे कि कच्ची झोपड़ियाँ बनाना, खाद्य सामग्री और अन्य आवश्यक सामान एकत्रित करना इत्यादि. दिनांक पहली चैत्र को बाहर के भी बहुत से सेवाधारी आ पहुंचे. बाहर के सन्त स्वामी आसूराम जी और बेरानी के सन्त आलूराम जी, सन्त केशवदास, सन्त तुलसीदास, सन्त भीखाराम जी, सन्त चरणदास, सन्त धण्डूराम, भगत मोटणराम, भगत चेताराम, कृष्णदास, सत्यप्रकाश और बीस पच्चीस मण्डलीयाँ भी दरबार पर आयीं. दिनांक बारह चैत्र, प्रातःकाल हवनकर, सत्यप्रकाश जी ने प्रेम प्रकाश मण्डल का ध्वजारोहण किया. शाम को बैण्डबाजों, ढोलकों और शहनाइयों के साथ एक बड़ा भारी जलूस (शोभायात्रा) निकाली गयी, जिसमें सब मण्डलियाँ पीछे-पीछे भजन करती चली. सभी सन्त जुलूस के साथ, सारे शहर में घूम फिर कर वापस दरबार साहब पर आए. स्वामी सर्वानन्द जी ने पल्लव पाकर, दामन फैलाकर प्रार्थना की और सत्संग का शुभारम्भ किया.

तत्पश्चात् दरबार के साधुओं ने बाहर के साधु सन्तों, भक्तों और भजन मण्डलियों का समय निर्धारित कर दिया. रात को ग्यारह बजे सब

प्रवास– स्वामी चेतनदेव कुटिया कनखल में

सन्तों के व्याख्यान और भजन चलते थे. उसके बाद प्रातः छह बजे तक सारी रात भक्त मण्डलीयाँ अपना कार्यक्रम करती थीं. भगत लीलाराम, भाई झमटराम, महाराज लच्छीराम, महाराज मकूराम, महाराज जीवणराम, गुरनि जी भगत आदि सब मिलकर बड़ी मौज मचाते थे. मेले की बड़ी सुन्दर मौज हुई परन्तु सब सतुगुरू महाराज जी को याद करते थे.

दिनांक तेरह को हरिद्वार से सतुगुरू महाराज जी का आशीर्वाद पत्र आया. चन्दन प्रकाश जी ने सबको पढ़कर सुनाया. उन्होंने सब प्रेमियों को बतलाया कि सद्गुरू महाराज जी चौदह तारीख को लाहौर मेल से यहाँ आ रहे हैं. सारी संगत सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और उन्होंने ताली बजा बजाकर बड़ी बुलन्द आवाज में सद्गुरू महाराज जी का जय-जयकार किया. दिनांक चौदह को स्वामी सर्वानन्द जी और अन्य कई सन्त और प्रेमी स्टेशन पर जाकर सद्गुरू महाराज जी को अमरापुर स्थान पर ले आए. सब साधु मेहमान सद्गुरू महाराज जी के दर्शन कर अत्यन्त हर्षित हुए. उस रात को यात्रा की थकान होने के कारण सद्गुरू महाराज जी ने विश्राम किया.

दूसरे दिन प्रातःदस बजे भगत मंघनदास ने, जो कि भण्डारे की सेवा पर नियुक्त थे, हाथ जोड़कर सद्गुरू महाराज जी से कहा: हे प्रभो! कुएं में पानी बहुत ही कम रह गया है, मेले के लिए अपर्याप्त रहेगा. अब आप जैसी आज्ञा दें. सद्गुरू महाराज जी ने उनसे कहा, ईश्वर सब अच्छा ही करेंगे. सद्गुरू महाराज जी ने सन्त ऊधवदास जी को अपनी चिप्पी (कमण्डल) देकर कहा: जाओ और "सतुनाम साक्षी" कहकर इस चिप्पी का सारा पानी कुएं में उड़ेल दो. पानी डालने से कुएं का जलस्तर बढ़ा और फिर पहले जैसा ही हो गया. उसके पश्चात् कुएं मे कभी भी पानी की कमी नहीं रही. सद्गुरू महाराज जी ने रात को आठ बजे सत्संग शुरू किया, जिसमें उन्होंने सन्तों और सत्संग की महिमा पर प्रवचन किये.

दोहाः *सत्संग सम साधन नहीं, कहे टेऊँ जग माहिं.*
व्रत, नेम, जप, जोग, तप, पहुंच सके तहं नाहिं.

चौपाईः *सब साधन हैं सत्संग माहीं. मूढ़ जीव जड़ जानत नाहीं.*
सर्व कर्म का सत्संग राजा. कहे टेऊँ सब सरहैं काजा.
सत्संग सूर्य सम प्रकाशा. संशय भ्रम करहिं तम नाशा.
साध संगत की बहुत बड़ाई. कहे टेऊँ सब ग्रन्थनि गाई.

तात्पर्य यह है कि सभी साधनों का मूल सत्संग है परन्तु अज्ञानी जीव उसे नहीं जान सकते. जैसे प्रयागराज सब तीर्थों का राजा है, उसी

प्रकार सत्संग भी सब कर्मों और साधनों का राजा है जिसके करने से इस जीव के सब कार्य सिद्ध होते हैं. जिस प्रकार सूर्य अंधकार को नाश करता है, उसी प्रकार सत्संग रूपी सूर्य संशय, भ्रम और अज्ञानरूपी अंधेरे को नष्ट कर देता है. सत्संग की महिमा सब सन्त महात्मा, शास्त्र वेद पुराण गाते हैं.

चौपाई: *सत्संगति मुद मंगल मूला, सोइ फल सिद्ध सब साधन मूला.*
अमिय मूरि मय चूरण चारू, समन सकल भव रूज परिवारू.

अर्थात् सत्संग सुख और कल्याण की जड़ है. सत्संग मिला तो समझना चाहिए, सब कर्मों का फल प्राप्त हुआ. सन्तों सदगुरू की चरण रज सब रोगों की दवा है, जिसको लगाने से सब दुःख दर्द दूर हो जाते हैं. सन्तों के दर्शन का बड़ा ही फल मिलता है. सन्त महात्मा तत्व ज्ञान रूपी अमृत की वर्षा करते हैं. अमृत पांच प्रकार का है.

१. पतिव्रता स्त्री के मुख में अमृत रहता है.
२. चन्द्रमा में अमृत है जिसके कारण अनाज, फल-फूल रसमय बनते हैं.
३. प्रेम का जो अमृत भगवान श्री कृष्ण ने ब्रजवासियों को पिलाया था.
४. ज्ञान का अमृत जो सन्त महात्मा जिज्ञासुओं और प्रेमियों को पिलाकर, जन्म मरण के दुःख से छुटकारा दिलाकर, उन्हे अमर बनाते हैं. वह ही सच्चा अमृत है.
५. क्षीर सागर का मंथन कर अमृत निकाला गया था. विष्णु भगवान ने सब देवताओं और दैत्यों को एकत्रित कर, मन्दराचल पर्वत की मथानी बनाकर, शेषनाग की रस्सी बनाकर, एक ओर देवता और दूसरी ओर दैत्यों को खड़ा कर, क्षीरसागर का मंथन कराया. इसमें से सबसे पहले विष निकला, जिसको देखकर सब डरने लगे. शंकर भगवान ने उस हलाहल विष को अपने कंठ में धारण किया, इस कारण उनका नाम नीलकण्ठ पड़ा.

उसके बाद उसमें से कामधेनु गाय, घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, अप्सरा, लक्ष्मी, वारूणी, धनवन्तरी वैद्य आदि निकले. अन्त में उसमें से अमृत कलश निकला, उस कलश के लिए देवताओं और दैत्यों मे झगड़ा हुआ. भगवान ने मोहिनी अवतार धारण कर, अमृत कलश ले जाकर हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन, और नासिक में देवताओं को अमृत पिलाया. इन चारों स्थानों पर क्रम से हर तीसरे वर्ष कुम्भ का मेला लगता है, सद्गुरू महाराज जी ने कहा:-
एक बार हम कुम्भ मेले पर हरिद्वार गये थे. वहाँ हमने क्या क्या देखा- वह आप को बतलाते हैं:-

भजन राग तिलंग

टेक: *दिव्य रूप दर्शन गुरां के निजारे.*
देखा मेला कुम्भ का गंगा के किनारे.

1. *योगी वैरागी, त्यागी बेरागी,*
रागी अनुरागी, हरिहर पुकारे.

2. *संन्यासी, उदासी प्रेमी प्रकाशी.*
अकाशी, बनवासी, नंगे थे हजारे.

3. *ब्रह्मचारी पुजारी आर्य अचारी.*
संसारी उदारी, करत बहु भण्डारे.

4. *भेष पन्थ बहुते, जड़ चेतन पूजते.*
सन्त महन्त वक्ते, अखण्ड ज्ञान उच्चारे.

5. *कहे टेऊँ कार्हीं, ऐसा मेला नाहीं.*
देखे जो जन तार्हीं, तिसे भाग भारे.

तात्पर्य यह है कि सद्गुरू की कृपा से गंगा के किनारे पर कुम्भ का मेला देखा. उसका ऐसा अलौकिक दृश्य देखा कि यहां पर योगीराज महात्मा वैरागी और त्यागी (जो कि पैसे को हाथ से छूते तक नहीं) पुजारी, भजनीक, श्रद्धालु, प्रेमी सभी 'हर हर गंगे' गंगा मैया की जय! पुकार रहे थे. सन्यासी, उदासीन महात्मा, प्रेम प्रकाशी महात्मा, आकाशी अर्थात् उत्तराखण्ड में रहने वाले महात्मा, जंगलों और पहाड़ों की कंदराओं में रहने वाले महात्मा, जो कभी भी शहर में नहीं आते, नागा (बिल्कुल नग्न) महात्मा भी कुम्भ के मेले पर आए थे. कितने ही श्रद्धालु प्रेमियों ने यहां आकर पक्के भण्डारे खोल दिए. इन भण्डारों से साधु सन्त महात्मा मेहमान, मुसाफिर, अतिथि भोजन पाकर भगवान का भजन कर रहे थे. संसार में हिन्दू जाति के सभी पंथो सम्प्रदायों के महात्मा और प्रेमी वहाँ आए हुए थे. बड़े-बड़े पीठाधीश्वर, महात्मा ज्ञान और सत्संग के दीवान अर्थात् सभाएं लगा रहे थे. सब ओर सन्तों के सत्संग चल रहे थे. ऐसा सुन्दर मेला अन्य किसी भी जाति में नही लगता

दोहा:- *मेला तीन प्रकार का, राजस तामस दाइ.*
तीजा मेला सात्विकी, कुम्भ जैसा नहिं कोइ.

नाटक, तमाशे, सिनेमा आदि रजोगुणी मेले होते हैं. मांस, मदिरा सेवन, जुआ वैश्याओं के गाने आदि तमोगुणी मेले हैं और सत्पुरूषों महात्माओं के सत्संग धर्म का प्रचार, यज्ञ, हवन, पाठ, पूजाएं ये सात्विक मेले हैं.

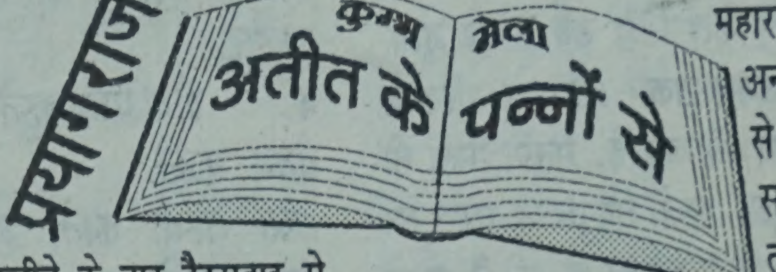
कुम्भ का मेला उपरोक्त तीनों प्रकार के मेलों से न्यारा है. जहाँ पर सन्तों का संग, राम का रंग, प्रेम का प्रसंग, तीर्थ यात्रा का चलना इत्यादि, मन को पवित्र करने वाली कई वस्तुएं हैं. जिसके पूर्व जन्म के भाग्य जाग्रत होते है, उसे ही ऐसा मेला प्राप्त होता है. इस प्रकार से सन्तों, सत्संग और कुम्भ मेले की महिमा बतलाकर ग्यारह बजे सत्संग समाप्त किया.

(सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत से)

सन् 1929

सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वार

प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी)का शुभारम्भ



सद्गुरू महाराज जी ने करीब एक महीने के बाद हैदराबाद से स्वामी ग्वाललाल और सर्वानन्द जी को अपने पास बुलाकर सभी साधुओं को एकत्रित करके कहा, इस साल सम्वत् १९८६ में मकर संक्रान्ति पर प्रयागराज में कुम्भ का मेला है, उसके बारे में आपका क्या विचार है? सभी साधुओं ने कहा कि मेले पर चलना चाहिए. सद्गुरू महाराज जी ने स्वामी ग्वाललाल जी से कहा, आप हैदराबाद जाकर कुम्भ के मेले पर चलने के लिए समाचार पत्र में 'सूचना' अथवा विज्ञापन दीजिए. एक बोगी रेल जिसमें कि लगभग एक सौ पचास व्यक्ति बैठ सकें वह भी बुक करवाइए. सद्गुरू महाराज जी ने स्वामी सर्वानन्द जी से कहा, आप कृष्णदास, हंसाराम, खीयाराम, हंसराज, सत्यप्रकाश और दो तीन साधु व सेवाधारियों के साथ जाकर साधुओं के रहने की व्यवस्था कीजिए.

प्रयागराज जाकर सन्तों ने अत्यन्त ही उत्तम व्यवस्था की. त्रिवेणी के किनारे एक सुन्दर स्थान, सड़क के पास देखकर, उन्होंने घास फूस की कुटियाएं बनाने का काम शुरू किया. दस बारह दिनों के अन्दर एक अत्यन्त उत्तम छावनी (शिविर) बना ली. इस शिविर में एक बड़ा सत्संग मण्डप, उसके निकट ही सद्गुरू महाराज जी के रहने के लिए घास फूस की कुटिया और उनके बाद सन्तों और गृहस्थियों के लिए अलग-अलग कुटियाएं, भण्डारा, कोठार और भोजन पाने के लिए घास फूस का एक अलग मण्डप बनाया.

जयप्रकाशजी शिकारपुर के भाई भावनदासजी को लेकर सेवा के लिए वहाँ आये थे जो कि कागज के बहुत ही सुन्दर फूल बनाते थे. उन्होंने ही सत्संग मण्डप, सद्गुरू महाराज जी की कुटिया और प्रवेश द्वार को बहुत ही आर्कषक ढंग से सजाया था. जयप्रकाशजी खाती के काम में निपुण थे. अतः उन्होंने कुटियाएं बनाने और द्वार को सुन्दर और मनोहर बनाने में अच्छी सेवा की.

शिविर निर्माण के पश्चात् सन्तों ने सद्गुरू महाराज जी को निर्माण कार्य सम्पन्न होने की सूचना भेज दी. सूचना पाकर शीघ्र गुरू महाराज जी सन्त मण्डली और कुछ प्रेमीजनों को साथ लेकर प्रयागराज पहुंचे. सभी सन्तों-महात्माओं ने गुरू महाराज जी का बहुत जोर-शोर से स्वागत सत्कार किया. तत्पश्चात् गुरू महाराज जी को लगाये शिविर की रूपरेखा दिखाने लगे. शिविर का पूरा निरीक्षण करवाया. तब सद्गुरू महाराज जी ने उस छावनी का नाम प्रेम प्रक अन्न क्षेत्र छावनी रखा. जिसमें सुबह ७ से ९ बजे तक विभिन्न छावनियों से अ सन्त मण्डलीयों को भोजन कराया जाता तत्पश्चात् आश्रम पर रहने वाले सन्तों मेहमानों के लिये ११ बजे भोजन का समय रखा गया. शाम को तीन से बजे तक सत्संग का समय रखा गया. उसके बाद भोजन का समय गया. प्रातःसायं हजारों व्यक्ति सत्संग में आते थे. सन्त और साधु क्षेत्र में आते थे. उन्हें बिना किसी भेदभाव के भोजन दिया जाता था. सन्त बारी-बारी से सत्संग करते थे.

प्रथम स्नान के दिन सद्गुरू महाराज जी सब सन्तों और प्रे के साथ संगम पर स्नान के लिए गये. स्नान करके उन्होंने जाकर छावनियाँ (शिविर) देखीं. इनमें बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर, महन्त, सोने चांदी की पालकियों में बैठे हुऐ थे. सहस्त्रो नागा जिन्होंने लंगोट तक पहन रखी थी, वे अपने शिविर के पीछे-पीछे चल रहे थे. जुलूस अ शोभायात्रा में आगे, पीछे, बीच में बैण्ड, बाजे, ढोलक, शहनाइयाँ, न घण्टे, तुरहियाँ, शंख आदि बज रहे थे, जिनकी आवाज से आकाश रहा था. सभी लोग बड़ी ऊँची आवाज में गंगा मैया की जय, यमुना की जय बोल रहे थे. यह दिव्य दृश्य देखने के बाद सद्गुरू महाराज लौटकर अपने स्थान पर आए. दूसरे दिन सद्गुरू महाराज जी सभी प्रे को साथ लेकर पाण्डवों का किला देखने गये. वहाँ पर उन्होंने अक्षय बेणी माधव जी का मन्दिर, महार्षि भारद्वाज का आश्रम और कई सुन्दर स्थान देखे.

एक सप्ताह बाद सद्गुरू महाराज जी प्रसाद लेकर, सब सा के साथ सन्तों से मिलने के लिए गये. उदाहरण के लिए महन्त हरिनाम सक्खर साधुबेला वाले, स्वामी गंगेश्वरानन्द और स्वामी अखण्ड चित्रकूट वालों से मिलकर आध्यात्मिक परिचर्चाएं करके लौट आए. ने भी सद्गुरू महाराज जी का बड़ा ही सुन्दर स्वागत किया. दो तीन के पश्चात् सद्गुरू महाराज जी महन्त हंसदेव, स्वामी कंवलदास और कमली वाले सन्तों से मिलकर आध्यात्मिक विचारों का आदान-प्रदान लौट कर अपने स्थान पर आए. सभी सन्त एवं महन्त भी सद्गुरू मह जी से मिलने आते थे क्योंकि सद्गुरू महाराजजी भेख, पंथ आदि से अभेदी, निर्मानी सन्त थे और सबका अच्छा सत्कार करते थे.

कुम्भ के मेले में सारी दुनिया के भेख पंथ, सब मत मत और सम्प्रदायों के संत महात्मा आकर इकट्ठे हुए थे. जिधर देखो वह

नाम का प्रचार, कीर्तन और सत्संग होता था. उन्हीं छावनियों में से सद्गुरू महाराज द्वारा भी प्रेम प्रकाश छावनी लगाई गई थी. जिसमें सद्गुरू महाराज जी प्रेम का प्रचार करते थे. वे किसी भी भेख, पंथ, मत मजहब की निन्दा अथवा खण्डन नहीं करते थे. वे केवल कपट, दम्भ, पाखण्ड का खण्डन करते थे. वे सब से यही कहा करते थे कि भगवान की सच्ची भक्ति का फल है आत्मज्ञान, संतोष शान्ति और संसार की भक्ति करने का फल है अनात्म अभिमान, विषय भोग और अन्त में अशान्ति. इस प्रकार से सद्गुरू महाराज जी के सत्संग में सरलता, सच्चाई, सहज-ग्राह्यता थी. सद्गुरू महाराज जी की वाणी प्रत्येक के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ती थी. इसलिए ही सद्गुरू महाराज जी के सत्संग में जनता बड़ी संख्यामें आती थी, फिर भी उनके सत्संगमें दिव्यशान्ति दृष्टिगोचर होती थी.

सद्गुरू महाराज जी ने एक दिन सत्संग की महिमा करते हुए कहा कि सत्संग संसार से पार जाने के लिए एक जहाज है. सत्संग करने से विवेक शक्ति बढ़ती है. विवेक से वैराग्य उत्पन्न होगा. वैराग्य होने से संसार के सब विषय भोग फीके लगने लगेंगे. एक प्रभु का ध्यान और सद्गुरू द्वारा प्रदत्त 'नाम' ही मीठा लगेगा. मन अभ्यास में सहज ही लग जायेगा. जब मन एकाग्र होगा. तब शान्ति और सुख दूर नहीं होंगे. इसलिए सत्संग सबका मूल है. एक जिज्ञासु सद्गुरू महाराज के पास आकर हाथ जोड़कर पूछने लगा, हे प्रभो!

दोहा: *जग साचो मिथ्या किधों, ग्रह्यो तज्यो नहिं जात.*
ग्रहे छछुंदर सर्प ज्यों, उगलत बनत न खात.

अर्थात् यह संसार सच्चा है अथवा झूठा? अगर यह सच्चा है तो इसे ग्रहण नहीं किया जा सकता और अगर यह झूठा है तो छोड़ा भी नहीं जा सकता. जिस प्रकार सांप, छछुंदर को मेंढक समझकर पकड़ लेता है परन्तु पकड़ने पर उसे मालूम पड़ता है कि यह मेंढक नहीं छछुंदर है. फिर वह उसे खा भी नहीं सकता और उसे छोड़ भी नहीं सकता क्योंकि उसे खाने से सांप मर जाता है और अगर सांप, उसे छोड़ देता है तो छछुंदर ऐसी विषैली फूंक मारता है जिससे सांप की आँखे खराब हो जाती हैं. उसी प्रकार से इस संसार को छोड़ा भी नहीं जा सकता और पकड़ा भी नहीं जा सकता. इससे बचने के लिए क्या कोई रास्ता (उपाय) है? गुरूजी ने कहा:

दोहा: *ग्रहे छछुंदर अहि मरे, तजे दूगनि की हान.*
जल पाये सुख होत है, त्यों सत्संग प्रमान.

यह सही है कि छछुंदर को खाने से सांप मर जायेगा और छोड़ देने से अंधा हो जायेगा परन्तु अगर जल में जाकर छछुंदर को पानी में छोड़कर, स्वयं डुबकी लगाकर दूसरी ओर निकल जायेगा तो बच जायेगा. ठीक उसी तरह जो भी जिज्ञासु सत्संग में आकर, सत्गुरू का ज्ञान सुनकर, उस पर चलने का प्रयास करेगा, तो वह संसार के महाजाल से बच जायेगा.

दोहा: *सत्संग से सत्गुरू मिले, सत्गुरू से निज ज्ञान.*
कहे टेऊँ निज ज्ञान से, मिलहैं पद निर्बान.

सत्संग करने से सद्गुरू और सन्तों की परख होती है. सद्गुरू और सन्तों की कृपा से 'सत्ज्ञान' की प्राप्ति होती है और सत्ज्ञान से अपने 'स्वयं' के विषय में जानकारी होती है जब स्वयं अपने आपको पहचान लेगा, तब मोक्ष प्राप्त होगा. इन सब बातों का मूल कारण अपने मन को वश में करना है. जब तक मन वश में नहीं, तब तक कुछ भी नहीं हो सकता.

दोहा: *जबहीं मन गुरू से मिले, तबहीं शान्ति होय.*
कहे टेऊँ मन के बिना, काज सरे ना कोय.
गुरूमूर्ति में मन लगे, सुरति शब्द के संग.
कहे टेऊँ कट भेद सो, राचहिं आत्म-रंग.

इसलिए प्रत्येक जिज्ञासु को सत्संग करना चाहिए. इस विषय पर निम्नलिखित भजन कहकर, सत्नाम साक्षी की धुनी लगवाकर, सद्गुरू महाराज जी ने सत्संग समाप्त किया.

राग जोग भजन

टेक: *रे मन मेरा सत्संग करिये, जिससे तेरा कारज सरिये.*

1.सत्संग जानो नाव समाना, तां पर चढ़ ले तज अभिमाना.
भव सागर से सहजे तरिये.
2 सत्संग सम को साधन नाहीं, सब साधन हैं सत्संग माहीं.
तांमे जाकर भव दुःख हरिये.
3. सत्संग सुरतरू चिन्तामणि सम, सेवन से दे सब फल हरदम.
पूर्ण निश्चय हृदय धरिये.
4. सत्संग कर पाओ सुखरासी, कहे टेऊँ काटो जम फासी.
हो निर्भय किससे ना डरिये.

इस प्रकार से सत्गुरू महाराज जी प्रतिदिन दो बार सत्संग किया करते थे. लगभग सवा महीना प्रयागराज में कुम्भ के मेले पर रहे. अन्त में अमवस्या की डुबकी लगाकर, भिन्न-भिन्न प्रकार के सत्संग शिविर देखकर, वे अपनी छावनी में लौट आए. मेले के यात्री सद्गुरू महाराज जी से विदा लेकर अपने-अपने गाँव गये. सद्गुरू महाराज जी भी अपने पीछे दो तीन साधुओं को साज सामान समेटने के लिए छावनी पर छोड़कर स्वयं मण्डली सहित चित्रकूट पधारे. (सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत से)

कुम्भ मेला छावनी में बीड़ी सिगरेट न पियें
कोई उपयोग करे तो उसे विनयपूर्वक-बलपूर्वक रोकें

15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश
सिंहस्थ 2004
विक्रम संवत् 2061

हरिद्वार में प्रथम बार प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी) का आयोज

सन् 1938 सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज द्वारा

अतीत से

स्वामी सर्वानन्द जी ने हरिद्वार में सप्त सरोवर के पास स्वामी कंवलदास जी की कुटिया के पास, गंगा तट पर जमीन लेकर छावनी बनाकर तैयार की. सतुगुरू महाराज जी ने कुम्भ के मेले का विज्ञापन (लेख) समाचार पत्र में छपवाया. रेल की चार बोगियां (डिब्बे) आरक्षित कर, कुछ साधु दरबार पर छोड़, अन्य साधुओं और प्रेमियों को साथ लेकर गाड़ी में बैठकर सतुगुरू महाराज हरिद्वार पहुंचे. स्वामी सर्वानन्द, स्वामी बसन्तराम, सन्त माधवदास, सन्त चन्दन प्रकाश व अन्य प्रेमी बैंड बाजों के साथ सतुगुरू महाराज जी को लेने स्टेशन पर आए.

सतुगुरू महाराज जी और स्वामी ग्वाललाल जी को उन्होंने एक सुन्दर मोटर में बैठाया और शेष साधु घुंघरू मंडित डंडे, इकतारे, बाजे, ढोलक और मंजीरे बजाते और भजन गाते हुए चले. शोभयात्रा के शुरू-शुरू में बैण्ड बजता रहा. सभी साधु लोग सतुगुरू महाराज जी को लेकर छावनी में आए. सतुगुरू महाराज जी और साधु-सन्त यथा योग्य अपने-अपने स्थान पर बैठे. शाम को सतुगुरू महाराज जी सरोवर पर भ्रमण कर आए. रात को सभी साधुओं और प्रेमियों को उनकी योग्यता के अनुसार सेवा वितरित (बांट दी) की गयी. प्रातः काल योग-वशिष्ट निर्वाण प्रकरण और श्रीमद्भगवतुगीता के पाठ रखकर सत्संग का शुभारम्भ किया गया. उन्होंने अन्नक्षेत्र भी शुरू किया. शाम को चार बजे सत्संग हुआ. पहले अन्य साधुओं ने सत्संग किया और सात बजे सतुगुरू महाराज जी ने सत्संग आरम्भ किया. अपने प्रवचन में उन्होंने कहा:-

दोहा: ***देश काल पात्र जभी, तीनों शुभ मिल जाइ.***
कहे टेऊँ शुभ कर्म कर, मन-इच्छित फल पाइ.

अर्थात् भूमि पवित्र हो, तीर्थ स्थान, गुरू भगवान का मन्दिर हो, समय भी शुभ हो, जैसे ग्यारस (एकादशी), पूर्णमासी (सत्यनारायण), गुरू भगवान का जन्मदिन या कोई उत्सव अथवा पर्व हो और हृदय भी पवित्र हो, ऐसे शुभ अवसर पर शुभ कार्य करने से मन वांछित फल मिलते हैं. वे शुभ कर्म ऐसे फलते (बढ़ते) हैं जैसे सभा में द्रौपदी के चीर (वस्त्र).

एक दिन द्रौप्दी सोमवती अमावस्या के दिन अपनी सहेलियों को साथ लेकर यमुना तट पर स्नान करने गयी. प्रभु की लीला ऐसी बनी कि जिस घाट पर द्रौपदी स्नान करने गयी थी, उस घाट पर महर्षि दुर्वासा पहले से ही स्नान कर रहे थे. द्रौपदी वहाँ ही घाट पर बैठ गयी, उन्होंने अपनी सखियों से कहा, दुर्वासा जी स्नान कर जाएँ उसके बाद ही हम लोग स्[illegible] करेंगी. दुर्वासा ऋषि को बहुत देर स्नान करते हो गयी परन्तु फिर भी जल से बाहर नहीं निकले. द्रौपदी समझ गयी कि शायद ऋषि की ल[illegible] (कोपीन) पानी में बह गयी है और वे लज्जा के मारे पानी से बाहर निकल रहे हैं. उसे कोई वस्त्र दे दिया जाये तो ठीक रहेगा.

यह विचार मन में धारण कर उसने साड़ी फाड़कर, दुर्वासा के लिए वह वस्त्र पानी में फेंक दिया परन्तु पानी के तेज बहाव के क[illegible] वह कपड़ा दुर्वासा जी के हाथ नहीं लगा. इसी प्रकार से साड़ी का दू[illegible] टुकड़ा भी पानी में वह गया. तीसरा टुकड़ा ऋषि ने पा लिया, ऋषि ल[illegible] धारण कर बाहर निकले और द्रौपदी को आशीर्वाद देते हुए उन्होंने [illegible] भगवान सदैव तुम्हारी भी लज्जा रखेंगे. इसी आशीर्वाद के कारण भग[illegible] ने द्रौपदी की लाज दुर्योधन की सभा में रखी.

इसी प्रकार हरिद्वार में गंगा के किनारे हर की पैड़ियां, सन्त[illegible] आश्रम आदि पवित्र स्थान हैं. कुम्भ के मेले का अवसर भी शुभ है. हम पात्र बनकर, श्रद्धा और विश्वास रखकर स्नान दान, पूजा पाठ, स[illegible] और सन्तों की सेवा करके मन वांछित फल प्राप्त करें और अपने स्वरूप को जानकर सच्चा सुख एवं शान्ति प्राप्त करें. ऐसा मनुष्य [illegible] और ऐसा सुन्दर अवसर फिर हाथ नहीं लगेगा. मनुष्य जन्म का मुख्य [illegible] ही है, अपने आप को पहचानना. इसलिए सन्तों, महात्माओं के वचन[illegible] विश्वास रखकर, अपना वास्तविक स्वरूप हमें समझना चाहिए. इस [illegible] पर सतुगुरू महाराज जी ने निम्नलिखित भजन कहकर सतुनाम साक्षी धुनि लगाकर अपना सत्संग समाप्त किया:-

राग पहाड़ी भजन

टेक: *पूरण धर विश्वास, गुरुमुख गुरु के वचन में*

1. *साक्षी चेतन रूप तुम्हारा, चार वस्था माहिं प्यारा.*
   खेलत बारह मास, जैसे भूप भवन में.
2. *बैठ अकेला तत्व विचारो, अपना आतम रूप संभारो.*
   होवे संसा नास, पाओ आनन्द मन में.
3. *देह मलिन का तज अभिमाना, भेद भ्रम हरके अज्ञा[illegible]*
   आदि पुरुष अविनास, देखो दिल दर्पन में.
4. ***अपने अन्तर ध्यान लगाए, कहे टेऊँ स्वरूप समाए.***
   निशदिन करो निवास, निर्भय शान्ति सदन में.

एक सप्ताह बाद सद्गुरू महाराज जी प्रसाद लेकर महात्मा[illegible] मिलने गये. सतुगुरू महाराज जी का किसी पंथ भेख से भेद भाव न[illegible]

करता था. इसलिए ही सद्गुरू महाराज जी के पास सभी पंथो के सन्त आया करते थे. सतुगुरू महाराज जी उन्हें बड़े आदर के साथ बैठा कर भोजन एवं जलपान कराया करते थे. जाते समय उन्हें द्वार तक पहुंचाने भी जाते थे. सतुगुरू महाराज जी सभी सन्तों से मिलकर अपने स्थान पर लौट आए और आकर सत्संग शुरू किया.अपने प्रवचनों में उन्होंने कहा इस जीव को,अनात्म अभिमान ने ही, गुरू एवं भगवान से अलग किया है.

दोहाः *जब मैं था तब गुरू नहीं, अब गुरू है हम नाहिं.*
एक म्यान में दो खड्ग, देखा सुना न काहिं.

जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं ठहर सकती, उसी प्रकार जब तक मैंपना अथवा अहंकार है, तब तक गुंरू और भगवान दूर हैं. जब यह जीव अपना अभिमान खोएगा अथवा छोड़ देगा, तब यह जीव स्वयं भगवान बन जायेगा. जब बीज अपने आप को जमीन मे नष्ट कर देगा तब ही वृक्ष बन सकेगा! इसी प्रकार यह जीव भी मैंपने (अहं) को गंवा कर परमात्मा हो जाता है. जीव का अभिमान गया, तो वह भगवान हो गया.

दृष्टान्तः एक प्रेमी अपने घरेलू कार्यों से तंग आकर सत्संग में आया. सत्संग समाप्त होने के बाद सन्तों ने सभी श्रोताओं से सप्रेम अनुरोध किया, बाबा! आप सभी भण्डारे में प्रसाद पाकर ही जाना. उस दिन किसी सत्संगी जिज्ञासु ने भण्डारा करवाया था. वह प्रेमी भी औरों के साथ पंक्ति में बैठ गया. उसी दिन के भंडारे में कचौड़ियां, पकौड़े, गुलाब जामुन, खीर, पूरियां आदि थीं. पक्का भण्डारा था. प्रेमियों ने खाकर आनन्द की अनुभूति की. उस प्रेमी ने मन में विचार किया, यहां सन्तों के पास तो मौज ही मौज है, इसलिए मैं भी सन्तों से गुरूमन्त्र लेकर, साधु बनकर यहॉ ही रह जाऊं नो अच्छा. यह विचार मन में धारण कर उस प्रेमी ने हाथ जोड़कर महात्मा जी से कहा, हे स्वामी जी! कृपा कर मुझे भी गुरूमंत्र देकर साधु बनाइए.महात्मा जी ने स्नेहपूर्वक उससे कहा, ठीक है बाबा ! अभी आप थोड़ी सेवा कर, अपने आपको अधिकारी बनाओ, तब हम आप को बाद में उपदेश देंगे.

महात्मा की आज्ञा मिलते ही वह प्रेमी सेवा करने लग गया परन्तु उसे खाने पीने का लालच अधिक था. दो-तीन महीने तक सेवा करने के पश्चात् उसने पुनः महात्मा जी से कहा, हे प्रभो! अब मुझे गुरूमंत्र प्रदान कीजिए. महात्मा जी ने देखा, यह अभी इस योग्य नहीं हुआ है अतः उन्होंने उससे कहा, अभी और सेवा कर अपना स्वभाव बदलिए, फिर हम आपको गुरूमंत्र देंगे. उस प्रेमी ने छह महीने तक और सेवा की.एक दिन फिर उस प्रेमी ने महात्मा जी से गुरूमंत्र देने के लिए विनती की. महात्मा जी ने देख लिया कि यह अभी भी गुरूमंत्र लेने का पात्र नहीं हुआ है. अतः उस प्रेमी से कहा कि अभी और सेवा करो.

दो तीन दिन बाद एक वैरागी उत्तम जिज्ञासु महात्मा के पास [illegible] उनके चरण स्पर्श कर हाथ जोड़कर उनसे कहने लगा, हे [illegible]! कृपा कर मुझे भगवान का रास्ता (भगवत् प्राप्ति का मार्ग) [illegible] मुझे [illegible] के चक्र से छुटकारा दिलवाइए. क्योंकि मैं अनन्त योनियों में भटकने के कारण बहुत ही दुःखी हुआ हूं. अब मुझ पर दया कीजिए. मै आप की शरण में आया हूं. महात्मा जी ने जिज्ञासु की ओर देखकर और अधिकारी समझकर उसे गुरूमंत्र दे दिया. महात्मा जी ने उसे बड़े वात्सल्य पूर्वक कहा, हे पुत्र! अब तुम एकान्त में जाकर, कमरे का दरवाजा बन्द कर, इसका (गुरूमंत्र का) अभ्यास करो. वह जिज्ञासु महात्मा जी के चरण स्पर्श कर कुटिया में जाकर दरवाजा बन्द कर पदमासन लगाकर अभ्यास करने बैठ गया.

उधर उस पहले वाले प्रेमी ने, जो सेवा कर रहा था, देखा कि महात्मा जी ने इस दूसरे प्रेमी को गुरूमंत्र देकर कुटिया में बिठाया है, वह क्रोधित होकर महात्मा जी से कहने लगे, आप अपना सारा सामान सँभाल कर मुझसे ले लीजिए, मैं अब घर जाऊँगा. आपको द्वैतपना है और सेवा करवाने का लालच है. मैंने कितने ही समय तक आपकी सेवा की है, तो भी आप कहते हैं अभी लायक (योग्य) नहीं बने हो और वह दूसरा जिज्ञासु आज ही आपके कमरे में आया है और आपने उसे गुरूमंत्र देकर, कमरे में गुरू बनाकर बिटा दिया है.

सन्त ने मुस्करा कर उस पहले वाले प्रेमी से सस्नेह कहा, बच्चे मुझमें द्वैत भाव नहीं है और न ही सेवा लेने का लालच है. मेरे लिए सभी एक समान हैं परन्तु इस जिज्ञासु में न जाने कैसा अद्वितीय आकर्षण था कि मैंने एकदम उसे गुरूमंत्र दे ही दिया. इसमें मेरा कोई भी कसूर (दोष) नहीं है. उस प्रेमी ने महात्मा जी से कहा, अच्छा उसे बुला लीजिए जरा देखें तो सही, वह मेरे जितना भार उटा सकता है या नहीं, या मेरे साथ पंजा लड़ाके देखे तो उसे मालूम हो. महात्मा जी ने कहा, यहाँ पर शरीर की बाहरी शक्ति का काम नहीं है, परन्तु आन्तरिक प्रेम वैराग्य और हृदय की शक्ति होनी चाहिए. उस प्रेमी ने महात्मा जी से कहा, इसका तात्पर्य यह है कि उसमें प्रेम है और मुझमें नहीं. जरा देखें, वह मेरे जितनी सेवा भी कर सकता है कि नहीं. महात्मा जी ने मन में कहा, यह तो मूर्ख है, इसकी वृत्ति बहिर्मुखी है परन्तु फिर भी इसका संशय दूर करना चाहिए. यह विचार मन में धारण कर महात्मा जी ने उससे कहा, जाओ उस प्रेमी (दूसरे जिज्ञासु) को बुला लाओ ताकि मैं उससे पूछ सकूँ.

तब वह पहले वाला जिज्ञासु कुटिया के द्वार पर, द्वार खटखटा कर उसे बुलाने लगा परन्तु भीतर से इसका कोई भी उत्तर नहीं मिला.फिर जोर-जोर से द्वार खटखटाने के बाद उसे जोर जोर से आवाज लगाकर बुलाने लगा. तब उस प्रेमी की समाधि खुल गयी.दरवाजा खोलकर उस दूसरे प्रेमी ने पहले वाले जिज्ञासु से कहा, [illegible] कीजिए. उस प्रेमी ने क्रोधित होकर कहा, [illegible] आपको आवाज दे रहे हैं और आप हैं क

द्वार तक भी नहीं खोलते. कितनी देर तक दरवाजा खटखटाया है मैंने. अब शीघ्र मेरे साथ चलो. तब दोनों ही मिलकर महात्मा जी के पास आए.

दूसरे जिज्ञासु ने महात्मा को दण्डवत् प्रणाम कर,हाथ जोड़कर कहा,हे भगवन्! आज्ञा कीजिए. महात्मा ने उससे पूछा, आपने आने में इतनी देर क्यों लगायी? उस गुरुमुख ने कहा, हे प्रभु! मैं आपके द्वारा बतलाए हुए मार्ग पर चल रहा था तो मुझे भगवान मिले. मिलने से हम दोनों (भगवान और मैं) बड़े ही प्रसन्न हुए. भगवान ने मुझसे कहा, आपको धन्यवाद हो क्योंकि बहुत दिनों के बाद ही आकर मुझसे मिले हो और अब आओ, कुछ हास-विलास के लिए आपस में कोई खेल खेलें, जो कि पहले भी आपके और मेरे द्वारा खेला गया हो (भक्त व भगवान मिलन के दिव्य खेल).तब भगवान ने मुस्करा कर कहा, आओ लुका छुपी का खेल खेलते हैं, जो कि आप कई बार मेरे साथ पहले भी खेल चुके हो. अब पहले आप छुप जाओ और मैं (भगवान) तुम्हें ढूंढ लेता हूँ, फिर तुम मुझे खोज लेना.

मैंने भगवान से कहा, पहले आप छुप जाइए, मैं आपको ढूंढ लेता हूँ. भगवान ने कहा, ठीक है और ऐसा कहकर भगवान जा छुपे. पाँच मिनट के अन्दर ही मैंने भगवान को ढूंढ लिया. हम दोनों बड़े ही प्रफुल्लित हुए. उस प्रसन्नता का वर्णन ही नहीं किया जा सकता. फिर मैं जा छुपा और भगवान मुझे ढूंढने लगे परन्तु वे (भगवान) मुझे ढूंढ ही नहीं पाये और अभी तक भगवान मुझे ढूंढ रहे हैं.

यह सुनकर प्रथम जिज्ञासु ने गुस्से होकर गुरुजी से कहा, मान्यवर! जरा देखिए तो सही, यह कितना झूठ बोल रहा है, कि भगवान भी उसे ढूंढ नहीं पाये. इस जैसा झूठा कोई और संसार में नहीं होगा. महात्मा जी ने उस प्रथम जिज्ञासु का उतावलापन देखकर उससे कहा, आप जरा धीरज रखिये, इससे पूछ ही लेते हैं कि भगवान इसे क्यों नहीं ढूंढ पाये?

प्रथम कोटि के उत्तम जिज्ञासु ने कहा, प्रभु! मैं तो हूँ ही नहीं. जो कुछ भी है वह भगवान ही है, मैं होता तो ही मिल पाता. यह सुनकर महात्मा ने जिज्ञासु से कहा, शाबाश! ' है ही मैं-पने को गंवाना.' यह ही ज्ञानी महात्माओं की आखिरी मंजिल (अंतिम ध्येय) है.

शैरः *हर जगह पर ढूंढता था, पाया पता तेरा नहीं.*
जब पता तेरा लगा, तो फिर पता मेरा नहीं.

तब पहले वाला जिज्ञासु मन में कहने लगा कि शायद सारा झमेला ही 'मैं-पने' में है. यह विचार कर हाथ जोड़कर उसने महात्मा जी से कहा, 'मै हूँ ही नहीं,' मुझे भी गुरुमन्त्र दीजिए. महात्मा जी ने मुस्कराकर कहा, यह कोई कहने की बात नहीं है. जिज्ञासु ने कहा, अब आप जैसे भी कहेंगे, वैसा ही करूँगा . महात्मा जी की आज्ञा मानकर निष्ठा और लगन से से‍ कर, उस जिज्ञासु ने भी अपना स्वरूप जान लिया. तात्पर्य यह है कि ज‍ तक यह जीव 'मैं' और 'मेरा' नहीं गंवाएगा, तब तक सुख शान्ति प्राप्त न‍ कर सकता.

रागु लोड़ाऊ भजनु

थलः *छदि तूं मां ऐं मुंहिजो, हिति कुछु भी नाहे तुंहिंजो.*

1. *जग में जंहि कयो मां ऐं मुहिंजो, पातो तंहिं दुखु भारी*
ख़ाली हथें सो वियड़ो, थ्यो न संगी को तंहिंजो.

2. *मिट माइट थी सभ मतलब जा, तिन जो माणु न करि तू*
अन्तकाल में पासि अची ना, साथ कन्दइ को संहिंजो.

3. *मां मां करि दुर्योधन मार्यो, रावण लंक जलाई.*
सारो वंसु विञाए पंहिंजो, अन्नु कयाऊं अंहिंजो.

4. *कहे टेऊँ अभिमान त्यागे भजनु हरीअ जो करि तूं.*
दुनिया में दिलि ना अटिकाइजि, प्रभूअ ख्रे करि पंहिंजो.

अन्त में सत्नाम साक्षी की धुनी लगाकर, सद्गुरू महाराज जी ‍ सत्संग समाप्त किया. तत्पश्चात् भण्डारा शुरू हुआ. इस प्रकार से कुम्‍ मेले में भजन और भोजन कार्य बड़े जोर-शोर से चलता रहा. जब मेले ‍ अन्तिम डुबकी लगाने में केवल एक सप्ताह का समय रह गया तब ए‍ छावनी (शिविर) में आग लग गयी. वायु भी पश्चिम दिशा से बड़े वेग ‍ चलने लगी. आग लगने से पन्द्रह बीस छावनीयां जल गयीं.सतुगुरू महारा‍ जी के पास वाली दादूपन्थ वाली छावनी में भी आग लग गयी. सतुगु‍ महाराज जी की छावनी वाले लोग छावनी से अपना सामान निकालने ल‍ बड़ा ही हाहाकार मच गया क्योंकि छावनी में सभी कुटियाएं घास-फूस ‍ बनी हुई थी. दूसरी बात यह थी कि पश्चिम दिशा की वेगवती वायु मा‍ प्रलयकाल की अग्नि थी. सतुगुरू महाराज जी ने प्रेमियों को अपना सामा‍ बाहर निकालते हुए, उदास देखकर अपनी छावनी के चारों ओर लाठी लेक‍ घूमकर (परिक्रमा कर) अपनी चिप्पी से जल छिड़का और सभी प्रेमियों ‍ कहा, कुटियाओं से कोई भी सामान बाहर न निकाले. सभी ने बैठक‍ सत्नाम साक्षी की धुनी लगाई. पाँच-सात मिनट के बाद ही पश्चिम दि‍ से बहने वाली वायु पूर्व दिशा से चलने लगी और सारी आग शान्त हो गय‍ सतुगुरू महाराज जी की यह शक्ति देखकर सभी प्रेमी खुशी से बड़ी ऊँ‍ आवाज में सतुगुरू महाराज जी की जय-जयकार करने लगे. मेला सु‍ शान्तिपूर्वक समाप्त हुआ.

सतुगुरू महाराज जी ने छावनी समेटकर जो भी खाद्य सामग्री ब‍ थी, वह स्वामी कंवलदास जी की कुटिया में सन्तों, महापुरूषों को बांट ‍ दे दी. सतुगुरू महाराज जी प्रेमीयों के सप्रेम प्रार्थना करने पर मन्थोगी ‍ शहर से होते हुए, वहां से मुल्तान, सक्खर,नवाबशाह, शहदादपुर होते ‍ अमरापुर स्थान टण्डा आदम आए. कुम्भ मेले के होने के कारण उन्‍ उस वर्ष चैत्रमास का मेला नहीं मनाया.

(सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत

सिंहस्थ 2004
विक्रम संवत् 2061

सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज द्वारा प्रयागराज पूर्ण कुम्भ मेले में अन्न क्षेत्र (छावनी) आयोजन

अतीत में

लाड़काना से प्रयाग में कुम्भ मेले के आयोजन और व्यवस्था करने के लिए सत्गुरू महाराज जी ने स्वामी सर्वानन्द जी, सन्त चन्दन प्रकाश, सन्त गंगाराम, सन्त आत्मानन्द, सन्त सत्यप्रकाश, भाई भगतूराम जी को भेजा. सत्गुरू महाराज जी अमरापुर स्थान टण्डो आदम वापस लौट आए.

कुम्भ मेले का विज्ञापन सत्गुरू महाराज जी ने समाचार पत्रों में दिया और सभी शहरों में चिट्ठियां (निमंत्रण पत्र) भी भेजी. पौष मास के दिनांक ६ संवत् १९९८ को सत्गुरू महाराज जी मण्डली सहित रात की गाड़ी से बैठकर कुम्भ मेले के लिए रवाना हुए. मार्ग में एक दिन दिल्ली ठहरकर वे प्रयागराज पधारे.दूसरे दिन ही श्रीमद्भगवत्गीता और योग वसिष्ठ के निर्वाण प्रकरण के पाठ रखवाकर, सत्संग आरम्भ किया गया. अन्नक्षेत्र और भण्डारा भी चालू रखा गया. उस वर्ष वहां पर (प्रयाग क्षेत्र) वर्षा नहीं हुई थी. वहां के किसान और दूसरे लोग ऐसा कह रहे थे कि सन्तों ने अपनी आय बढ़ाने के लिए यह धंधा (सत्संग आदि) खोल रखा है. कोई भी ऐसा सत् पुरूष पूर्ण महात्मा नहीं है जो कि वर्षा करवाकर सभी प्रेमियों का दुःख दूर करे. यह बात प्रत्येक स्थान पर फैल गयी और सत्गुरू महाराज जी के कानों तक भी पहुंची.

सत्गुरू महाराज जी ने अपने सत्संग में कहा, सन्त महात्मा तो राजाओं के भी राजा हैं. उनके पास किसी भी वस्तु की कमी नहीं है. महात्मा धन कमाने के लिए नहीं बैठे हैं, परन्तु परोपकार के लिए ही सत्संग भण्डारे और क्षेत्र खालते हैं. उन्हें तो किसी भी पदार्थ की इच्छा नहीं है.

दृष्टान्तः एक राज अपने मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों को साथ लेकर तीर्थयात्रा पर निकला. मार्ग में जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए एक महात्मा को उन्होंने देखा.राजा ने मन में विचार किया कि इस महात्मा की कुछ सहायता की जाए तो ठीक रहेगा. यह विचार कर राजा ने अपने मंत्री से कहा कि उन्हे पाँच सौ रूपये प्रेमपूर्वक दे आएं. मंत्री ने महात्मा के पास जाकर वह भेंट रखी. महात्मा ने मंत्री से कहा, मुझे नहीं चाहिए,किसी गरीब कंगाल को दे दीजिए. मंत्री ने बड़ी अनुन्य विनय की, और कहा कि राजा ने आपके पास यह भेंट भेजी है, वह कृपया वापस न लौटाएं परन्तु महात्माजी ने वही उत्तर दिया. मंत्री ने राजा को जाकर पूरा वृतान्त कह सुनाया.

राजा ने विचार किया'शायद यह रकम कुछ कम है, इसलिए मैं स्वयं जाकर महात्मा को जितने भी धन की आवश्यकता होगी, वहीं दे आता हूँ. यह विचार धारण कर राजा स्वयं महात्मा जी के पास आए. महात्मा जी के आगे अच्छी खासी भेंट रखकर, हाथ जोड़कर कहाः हे प्रभु! अन्य आप जो भी आज्ञा करेंगे. वह भी मैं देने को तैयार हूँ. कृपा कर मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें. महात्मा जी ने कहा, हे प्रभु! आपके रहने के लिए अच्छी कुटिया भी नहीं है, न सोने के लिए अच्छी चारपाई है, पहनने के लिए वस्त्र भी नहीं है खाने पीने के लिए खर्च तक नहीं है. आप से अधिक दरिद्र और कौन होगा?

महात्मा ने राजा से कहा, मैं गरीब हूँ, मैं तो राजाओं का भी राजा हूँ आप से भी अधिक राज्य मेरे पास है. राजा ने हंसकर कहा,राजाओं के पास तो पूरा ठाठ-बाट, रानियां, नौकर और खजाना होता है,आपके पास तो कुछ भी नहीं है. महात्मा ने राजा को बतलाया, मेरे पास सब कुछ है-पांच ज्ञान इन्द्रियां, पांच कर्म इन्द्रियां और ग्यारहवां मन है. ये सब मेरे नौकर प्रति क्षण मेरी सेवा में उपस्थित रहते हैं. शील, संतोष आदि दैवी सम्पदा के गुण ये मेरी सेना हैं. वैराग्य मेरा सेनापति है, जिसने काम, क्रोध आदि विकारों को जीत लिया है. सत् शास्त्रों के वचन मेरे हथियार (आयुध) हैं. मेरे पास ब्रह्म ज्ञान रूपी बम है. आत्मज्ञान रूपी धन की मेरे पास खान है, जो धन कभी भी कम नहीं होता. शान्ति रूपी रानी है. इनके अतिरिक्त बाह्य धन की मुझे कोई भी आवश्यकता नहीं है.इतने पर भी मैं ऐसे 'रसायन' का ज्ञाता हूँ जो कि कितने भी लोहे को सोने में बदल सकता है. मेरे जितनी सम्पदा तो आपके पास भी नहीं होगी. इसलिए यह धन किसी गरीब कंगाल को जाकर दीजिए.

राजा ने हाथ जोड़कर महात्मा से कहा, हे प्रभु! मेरी एक प्रार्थना है, कृपा कर मुझे भी वह रसायन सिखा दीजिए. महात्मा ने राजा से कहा,अब बतलाये, कंगाल आप हैं कि मैं? राजा ने कहा हे प्रभु! जैसे भी समझें परन्तु मुझे वह रसायन अवश्य सिखाइये. महात्मा ने राजा को अपने पास ठहराकर, गुरू मंत्र प्रदान कर, उसका अभ्यास करवाकर, आत्मा का साक्षात्कार करवाया, जिस के कारण राजा की हर प्रकार की कामनाएं पूर्ण हुई और कोई भी इच्छा शेष न रही. साथ-साथ महात्मा जी ने राजा को रसायन विद्या भी सिखलाई. राजा ने कहा हे प्रभु! अब तो मुझे राजा बनकर राज्य करने की इच्छा शेष नहीं है, तात्पर्य यह है कि महात्माओं को गरीब नहीं समझना चाहिए. उनके हाथों में अगाध शक्ति है, वे जैसे भी चाहें, वैसा कर सकते हैं.

रागु हुसेनी भजनु

थलः *साधू जन आहिनि*
अजबु अमीर, तिनिजी
जिति किथि आहि जगीर.
1. *चारों साधन चतुरंग*
सैना, बारूदु बिरिह बहीर.
राम नाम धन अनभै
सम्पत्ति, गादी ज्ञान गम्भीर.
2. *जीत्यल इन्द्रियूं निर्मल*
नौकर, शुद्धि बुद्धि आहि वजीर.
शब्दु सुवारी सुरिती राणी, पुत्र विज्ञानी वीर.
3. *सम सन्तोष जो भोजनु खाई, पियनि प्रेम जो नीरू.*
खिमिया वस्तर पहिरे तन ते, सुमरनि श्री रघुवीरू.
4. *मन दुश्मन खे जीते जग में, कनिथा राजु शरीर.*
तुरिया घर में सुख सेजा ते, सुम्हनि शान्ति सुधीर.
5. *सुख दुख में सम रहनि सदाई, कदहिं न त्यागिनि धीर.*
कहे टेऊँ से राजन राजा, जाणनि लोक फकीर.

उस समय वहां के लोग सत्संग में खड़े होकर कहने लगे, अगर सन्तों के हाथ में इतनी शक्ति है तो फिर हम लोग इतने दुःखी क्यों हुए हैं ? हम भी मन में यही आशा रखकर आए हैं कि सन्त हमारे दुःख दूर करेंगे. यहां पर वर्षा न होने के कारण बहुत से गरीब अत्यन्त दुःखी हुए हैं. गायें, भैसें, पशु-पक्षी सभी भूख से व्याकुल हैं. कृपा कर आप सन्त लोग ही हमारा दुःख शीघ्र दूर कीजिए. सतुगुरू महाराज जी ने कहा, ये सब प्रभु के खेल (लीलाएं) हैं. आप किसी बात की चिन्ता न करें. प्रभु सभी की देखभाल करते हैं. हमारा कर्तव्य है उन्हें प्रार्थना करना, शेष ईश्वर सब भला ही करेंगे. ऐसा कहकर सतुगुरू महाराज जी ने 'सारंग राग' में एक भजन गाकर सुनाया.

राग सारंग भजन

टेकः *रिम-झिम कर हरबार, बादल बरसे.*
1. *बादल बन कर बरसण आया, आज सखी मम भवन सुहाया.*
बिजली कर चिमकार.
2. *चौदिश होई अति हरियाली, अवनि भयी अद्भुत उजियाली.*
चिमन खिड़ी गुलिजार.
3. *बुलबुल पपिहा नाचत मोरा, कोयल मैना गूंजत भौंरा.*
मधुर करे झनकार.
4. *सरवर नदियां नाला भरिया, कहे टेऊँ सब कारज सरिया.*
होई जय-जयकार.

यह भजन अर्थ सहित कहकर सतुगुरू महाराज जी ने अभी समाप्त किया ही था कि पूर्व दिशा की ओर से बादल घिर आये, बिजली चमकने लगी और जोर जोर से गर्जना होने लगी. सारी संगत ने मण्डप में खड़े होकर बड़ी बुलन्द आवाज में सतुगुरू महाराज जी का जय-जयकार किया. ऐसी तेज वर्षा होने लगी कि बिजली भी बड़ी ही डरावनी गर्जना कर पास वाले क्षेत्र पर आ गिरी. दो-तीन मनुष्य मर गये. बिजली जाकर गंगा नदी में गिरी. कितने ही लोग मूर्च्छित हो गये.

रात को एक बजे पहाड़ पर से एक नहर टूटी. पानी सीधा बड़े ही वेग से सतुगुरू महाराज जी की छावनी में प्रवेश कर गया. अन्य छावनियों की ओर भी अत्यधिक पानी एकतित्र हो गया. सभी साधु, गृहस्थी कुटियाओं से बाहर आकर चीख पुकार करने लगे. सतुगुरू महाराज जी ने अपने हाथ में लाठी लेकर, कुटिया से बाहर आकर सभी को कहा, आप लोग शान्तिपूर्वक बैठिए. घर बैठे ही गंगा मैया ने आकर दर्शन दिये हैं, अब इन्हें रास्ता दो ताकि जल बह जाए और सतुगुरू महाराज जी ने पानी के निकास के लिए कुदालों से, साधुओं की सहायता से एक नाला बनवाया. सारा पानी बहकर गंगाजी में जा पड़ा. सतुगुरू महाराज जी ने सभी को आश्वासन दिया और ढांढ़स बन्धाया कि आप लोग घबराइए नहीं, ईश्वर सब भला ही करेंगे. भले ही यहां के लोग खुश हों. एक दिन वहां के लोगों ने मिलकर सतुगुरू महाराज जी से प्रार्थना की, हे प्रभु! अब सात आठ दिन हो गये हैं, बरसात बन्द ही नहीं हो रही है, कृपया बरसात बन्द करवा दीजिए. लोग घबरा कर व्याकुल हो रहे हैं. सतुगुरू महाराज जी ने आकाश मण्डल की ओर देखकर कहा, अब वर्षा बन्द होने जा रही है आप किसी बात की भी चिन्ता न करें. करीब एक घण्टे के पश्चात् बरसात बन्द हो गयी. सूर्य भगवान ने दर्शन दिए. सभी प्रेमी बड़े ही प्रसन्न हुए. दूसरे दिन वहां के लोग सतुगुरू महाराज जी के पास आए और सतुगुरू महाराज जी से कहा, हे प्रभु! हमारी ओर से सभी प्रेमियों को, साधुओं को और यात्रियों को पक्का भण्डारा खिलाया जाए. भण्डारा सुखपूर्वक सम्पन्न हुआ.

बसन्त पंचमी के दिन सतुगुरू महाराज जी हवन करने के पश्चात् सभी साधुओं और प्रेमियों के साथ नौकाओं में बैठकर धुनी लगाते हुए उत्तर श्रेणी संगम पर आए. सतुगुरू महाराज जी ने सभी साधुओं और प्रेमियों को संगम स्थल में डुबकी लगवाकर उन्हें जल का छींटा लगाया.उस समय के आनन्द का वर्णन मुख से नहीं किया जा सकता. सभी छावनियां (शिविर) देखने गये. लाखों महात्मा स्वर्ण और चांदी की छतरियों में ध्वज लेकर चल रहे थे. कितने ही नागा महात्मा हर-हर गंगे कहकर स्नान कर रहे थे. वहां से होकर सभी आश्रम घूमते हुए वे एक बांध पर चढ़ गये. वहां से सतुगुरू महाराज जी ने देखा कि एक छावनी मे आग लग गयी है जिसमें रहने वाले कई साधु सन्त, गृहस्थी, छोटे बालक और माताएं चिल्ला रही थी. सतुगुरू महाराज जी को उनके प्रति बड़ी दया आयी. सतुगुरू महाराज जी ने सभी साधुओं और प्रेमियों से कहा कि वे बालू रेत की मुट्ठीयां भर भर कर उस छावनी में फेंके और वे स्वयं भी बालू रेत लेकर छावनी में फेंकने लगे. आग एकदम बन्द हो गयी.सतुगुरू महाराजजी भ्रमण करते हुए वापस अपने स्थान पर आए.

(सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत से)

उज्जयिनी में प्रथम बार प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र (छावनी) का आयोजन

सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज द्वारा

सन् 1944

गौरवमयी अतीत

कुछ दिनों के बाद वार्षिक चैत्र मेले की तैयारियां की गयीं. उस वर्ष सन् १९४४, संवत् २००२ में दो चैत्र मास थे. दूसरे चैत्र मास में विश्व विख्यात कुम्भ मेला उज्जैन (मध्य भारत) में मनाया जाने वाला था, इसलिए मेले के पुरूषोत्तम मास में चैत्र मेला मनाने का निर्णय लिया गया. इसलिए मेले के अवसर पर मेले में आए हुए सब प्रेमियों को उज्जैन में मनाये जाने वाले कुम्भ मेले का महात्म्य भी बताया गया, और इस अवसर पर मेले में आये हुए सब प्रेमियों को उज्जैन में मनाये जाने वाले कुम्भ मेले की सूचना भी दी गयी, कुम्भ मेले का माहात्म्य भी प्रेमियों को बताया गया, और निमंत्रण भी दिया गया. कुम्भ मेले के बारे में सूचना भी दी गयी, जो इस प्रकार हैं, जैसे हल्का बिस्तर, लोटा, गिलास, टार्च, आदि आवश्यक वस्तुओं को साथ लाने और सोने (स्वर्ण) आदि के भूषण पहनकर न आने के लिये भी कहा गया. इसके सिवा कुम्भ मेले में सन्तों की शाहियां देखने, क्षिप्रा गंगा के पवित्र जल में डुबकीयां लगाने, अपने बच्चों को संभालने और कुम्भ मेले में घूमने देखने के लिये बहुत कुछ जानकारी प्रेमियों को दी गयी.सिन्धी समाचार पत्रों द्वारा भी उज्जैन कुम्भ मेले की सूचना दी गयी. यह सूचना भी दी गयी कि सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज की प्रेमप्रकाश छावनी लगायी जायेगी. अन्नक्षेत्र भी खोला जायेगा. कुम्भ मेले में आने वाले यात्रियों के लिये आवास और भोजन का पूरा प्रबन्ध किया जायेगा.चैत्र मेला सुख से समाप्त हुआ, सब प्रेमी विदा लेकर अपने अपने घर गये.

मेले के पश्चात् तुरंत कुम्भ मेले पर जाने की तैयारियां होने लगी. स्वामी जी ने सब सन्तों से मिलकर कुम्भ मेले में प्रेम प्रकाश छावनी लगाने आदि सारी व्यवस्थाओं की सेवा के लिये सन्त चन्दन प्रकाश जी को नियुक्त किया गया.सन्त चन्दनप्रकाश जी सन्त गंगाराम जी और पांच सात सेवाधारियों को लेकर उज्जैन रवाना हुए. वहां पहुंचकर सन्त चन्दनप्रकाश जी ने क्षिप्रा नदी के किनारे नरसिंह घाट पर छावनी के लिये एक बड़ा क्षेत्र (प्लाट) सरकार से लिया, वहां पर सन्तों यात्रियों के ठहरने के लिये तंबू आदि लगवाए. एक बड़ा सत्संग मण्डप भी बनवाया, भोजन सामग्री आदि सब आवश्यक सामान की व्यवस्था की, फिर सन्त चन्दन प्रकाश जी ने स्वामी जी को तार द्वारा सारा समाचार दिया.

कुम्भ मेले की व्यवस्था का समाचार पाकर स्वामी जी ने अमरापुर दरबार की व्यवस्था के लिये सन्तों सेवाधारियों को वहां छोड़कर, सन्त गुरूमुखदासजी, सन्त बसन्तरामजी, सन्त शान्तिप्रकाशजी, सन्त धर्मदासजी, सन्त जीवनमुक्तजी, सन्त ऊधवदासजी,सन्त जयप्रकाश जी, सन्त मुरलीधरजी, सन्त रविप्रकाशजी, सन्त वासुदेवजी,सन्त रामदासजी, सन्तआत्मानन्दजी, सन्त प्रेमानन्दजी, सन्त प्रेमानन्दजी इत्यादि सब सन्तों और सेवाधारियों के साथ गुरूमहाराजजी के मन्दिर में जाकर उनकी मूर्ति को प्रणाम किया. पुष्पमाला चढ़ाई, आज्ञा और आशीर्वाद लेकर टंडेआदम से हैदराबाद के लिये प्रस्थान किया.

दस दिन हैदराबाद में रहकर फिर उज्जैन कुम्भ मेले पर जाने की तैयारी करने लगे. जाने का कार्यक्रम बनाकर स्वामी जी ने उज्जैन में पहुंचने की तार चन्दनप्रकाश जी को भिजवाई. निश्चित तिथि पर स्वामी ने सन्तों सेवाधारियों और सत्संगियों के साथ उज्जैन के लिये प्रस्थान किया. हैदराबाद (सिन्ध) से मीरपुरखास, मारवाड़, अजमेर, पुष्कर, रतलाम से होते हुए उज्जैन पहुंचे. सन्त चन्दनप्रकाश जी, सन्त गंगारामजी और सेवाधारी स्टेशन पर स्वागत के लिये आये.फिर तांगा आदि सवारियों से नरसिंह घाट पर अपनी प्रेम प्रकाश छावनी में पहुंचे. सबने नहा धोकर भोजन किया, लम्बी यात्रा के कारण सब लोग थक गये थे, इसलिये थोड़ी देर सबने विश्राम किया. फिर सब मेले की सेवा में लग गये. सायंकाल बीतने के बाद सब सन्त, सेवाधारी, यात्री सत्संग मण्डप में इकट्ठे हुए. मेले में होने वाली सेवाएं बांट दी गयी. फिर सबने पंगत लगाकर भोजन किया. स्वामी जी और सन्त आराम हुए सेवाधारी अपनी अपनी सेवा करने लगे. प्रातःकाल उठकर स्वामी जी भ्रमण कर छावनी में आये. फिर सारी छावनी का निरीक्षण करते हुए नरसिह घाट पर गये. वहां क्षिप्रा गंगा में स्नान किया. निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सब सन्त, यात्री और सेवाधारी सत्संग मण्डप में उच्च आसन पर सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज की मानव आकार मूर्ति जो बहुत अच्छी तरह से सजाई गयी थी, तीन बार ओहम् का उच्चार कर स्वामी ने उसका पड़दा हटाया,सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज की जय,राम कृष्ण भगवान की जय,क्षिप्रा गंगा की जय,महाकालेश्वर भगवान की जय आदि जयघोषों एवं करतल ध्वनियों से सारा सत्संग मण्डप गूंज उठा. पहले स्वामी जी ने गुरू महाराज जी को फूल माला पहनाकर पूजा की फिर सन्तों और यात्रियों ने पूजा की. पूजा के बाद आरती की गयी, तत्पश्चात् श्रीमद्भगवद्गीता और योगवसिष्ठ के पवित्र ग्रन्थों के पाठ आरम्भ किये गये, फिर हवन और ध्वजा वन्दन कर स्वामी जी ने अपने कर कमलों से सन्त महात्माओं के लिये अन्नक्षेत्र खोला, तत्पश्चात् सबने पंगत में बैठकर भोजन किया. इस तरह कुम्भ मेले का

शुभारम्भ किया गया. शाम को सत्संग आरम्भ हुआ, पहले प्रेमियों ने और सन्तों ने सत्संग किया, फिर स्वामी जो ने तीन बार ओहम् का उच्चार कर देवगुरू की वन्दना कर सत्संग आरम्भ किया. भक्ति के विषय पर बालते हुए स्वामी जी कहने लगे कि भक्ति पर भगवान प्रसन्न होता है, पर भक्ति करना सरल नहीं है. भक्त पर बड़े कष्ट आते हैं.भगवान भी परीक्षा लेता है.

कथाः-कोई एक मजदूर था, दिन भर कंड़ी मेहनत करता था, प्रतिदिन उसे तीन या चार आने मिलते थे, जो कुछ भी मजदूरी का मिलता था, वह सब पत्नी को देता था, पत्नी पतिव्रता थी. पति की कमाई के अनुसार घर का खर्चा चलाती थी. शास्त्रों के उत्तम धर्म को बतलाते हुए स्वामी जी कहने लगे कि मनुष्य का परम कर्तव्य है कि वह अपनी पुत्री का विवाह उत्तम कुल में करे, पुत्र को व्यवहार और परमार्थ की दोनों विद्याएं पढ़ाये. शत्रुओं को विषयों में फंसा दे और उत्तम वस्तु का दान करे.

श्लोकः- *सत्कुले योजयेत्कन्यां, पुत्र विधायु योजयेत्.*
व्यसने याजयेच्छत्रुं, इष्टं धर्मेण योजयेत्.

धर्मशास्त्र को जानने वाला मनुष्य ही व्यवहार और परमार्थ को अच्छी तरह से चला सकता है. स्त्री को चाहिये कि व्यवहार अथवा परमार्थ का काई भी कार्य,अपने पति से पूछने के साथ साथ आज्ञा मिलने पर ही करे. किसी भी कार्य के लिये पति पर दबाव न डाले. कोई भी स्त्री अपने पति से पूछे बिना यदि कोई कर्म करती है तो उसका फल उसे नहीं मिलता. पति से कोई भी चीज या बात न छिपावे. पति से कभी भी झूठ न बोले. पति की कमाई के अनुसार खर्च करे.पति की कमाई से प्रतिदिन कुछ न कुछ बचाकर रखे. सदैव पति की प्रसन्नता में प्रसन्न रहे. पति की पूजा करने से सब देवी देवीताओं और भगवान तक की पूजा हो जाती है उसको फिर किसी मनुष्य ,पितर या ईश्वर की पूजा की आवश्यकता नहीं रहती. केवल सन्त महात्मा ही नहीं, पर साधारण से साधारण व्यक्ति भी सेवा पूजा पर प्रसन्न होता है. इतना ही नहीं पर शत्रु भी सेवा पूजा पर प्रसन्न होता है. पिता चाहता है कि पुत्र मेरी सेवा करे आज्ञा मानें.पति चाहता है कि पत्नी मेरी सेवा करे आज्ञा मानें. सास चाहती है कि बहू बेटा मेरी सेवा करे मेरी आज्ञा मानें. छोटे बड़े सभी सेवा चाहते हैं. पति की प्रसन्नता से अनायास ही स्त्री को समस्त ऋद्धियां प्राप्त हो जाती हैं. कथा-एक मजदूर की पत्नी भी प्रतिदिन घर के खर्च में से कोर कसर कर एक पाई बचाकर रखती थी. जब एक रूपये की पाइयां इकट्ठी हुई तब दुकानदार को देकर रोक रूपया ले आयी. शाम को जब उसका पति आया तब वह रोक रूपया पति को दे दिया. रोक रूपया देखकर मजदूर बहुत खुश हुआ. पत्नी से पूछा कि यह रूपया कहां से लायी? तब उसने बताया कि हे पतिदेव! आपकी कमाई से प्रतिदिन पाई पाई बचाकर इकट्ठा किया है. पत्नी की बात सुनकर उसके मन से एक विलक्षण आशीर्वाद निकली और कहा तुम्हे धन्यवाद है. अच्छा यह रूपया रख लो, किसी समय काम आयेगा. ऐसा कहकर उसने भोजन किया, फिर सो गया. दूसरे दिन यह सवेरे मजदूरी पर चला गया.

चार पांच दिनो के बाद एक महात्मा मण्डली सहित उस नगर में आया, कई लोग सत्संग सुनने जाने लगे. मजदूर की पत्नी ने भी महात्मा के विषय में सुना कि कोई सन्त आया है जो बहुत अच्छी कथा करता है. एक दिन वह भी सत्संग सुनने को चली गयी. कथा चल रही थी, मजदूर की पत्नी भी कथा सुनने बैठ गयी. उस समय सन्ते के लक्षणों का प्रसंग चल रहा था.

चौपाई. *सच बोलत पुनि सच से प्रीती, यही सनातन सन्तनि रीती।*
सन्त वचन अचल नहिं टरहीं, तिस फल देत श्रद्धा जो धरहीं।

सन्त परउपकारी होते हैं. सन्त कभी झूठ नहीं बोलते सच बोलते हैं, सच तोलते हैं. सच ही सन्तो का जीवन है. ऐसे सन्तों के वचन अटल होते हैं. वे कभी टलते नहीं है. यह सत्य बात है. पर फल उसको मिलेगा जिसका वचनों पर पूरा विश्वास होगा.बस इतना सुनकर मजदूर की पत्नी ने उसपर विश्वास कर लिया.वचनों का विचार करती हुई वह घर आयी. दो दिन के बाद एक साधु उस नगर में आया,वह गली गली में जोर जोर से "एक देवे तो दस पावे नहीं देवे तो फिर पछतावे" इस प्रकार की आवाज लगाता हुआ घूम रहा था.जब उसने मजदूर पत्नी के घर के सामने आवाज लगाई तो मजदूर की पत्नी घर से बाहर निकल आयी.साधु से पूछा महाराज! आप क्या बोलते जा रहे हो? जरा समझाकर बताओ. साधु ने कहा माता! जो एक रूपया देगा उसे दस मिलेगा. जो दस रूपया देगा उसे सौ रूपया मिलेगा. जो सौ रूपया देगा उसे हजार मिलेगा. जो हजार देगा उसे दस हजार मिलेंगे.मतलब तो दस गुणा होकर मिलेंगे.मजदूर की पत्नी तो पहले ही कथा में सुनकर आयी थी, वचन याद थे. सो साधु से कहने लगी, आप सच कहते हो? साधु ने कहा बिल्कुल सच कहता हूँ.यह सुनकर मजदूर की पत्नी ने मन में यह सोचकर कि एक दूंगी तो दस मिलेंगे. दस रूपये देखकर मेरा पति बहुत खुश होगा. यह विचार कर घर जाकर रूपया ले आयी, साधु को संशय रहित मन से दे दिया. रूपया लेकर साधु चला गया. मजदूर पत्नी को तो दृढ़ विश्वास था, सो निश्चित होकर घर का काम काज करने लगी.

दुख सुख तो प्रत्येक प्राणी के पीछे लगा रहता है. पांच सात दिनों के पश्चात् मजदूर को बुखार आ गया. जिसके कारण वह मजदूरी पर न जा सका, घर की दशा कुछ ऐसी थी,यदि किसी दिन मजदूरी नहीं मिलती

थी तो भूखा रहना पड़ता था. मजदूर को रूपये का बड़ा भरोसा था. सो पत्नी से कहा कि आज मुझे बहुत तीव्र बुखार आ गया है, मजदूरी पर नहीं जा सकूंगा. भोजन और दवाई तो अवश्य ही चाहिये.रूपया दे दो तो आटा दाल और दवाई ले आऊँ. पति ने जब रूपया मांगा तो वह बेचारी बहुत घबरा गयी. घर की स्थिति को वह जानती थी. पति को बुखार है यह भी जानती थी. भोजन और दवाई कहां से आयेगी. यह विचार कर चिन्ता के गहरे समुद्र में डूब गयी. पति ने फिर कहा जल्दी रूपया ले आओ, तो मै जाऊँ. रूपया इस समय काम न आया तो कब आयेगा. पति की बात सुनकर उसने डरते डरते सारी बात पति को बताकर कहा इस प्रकार मैंने साधु को रूपया दे दिया. स्त्री की बात सुनकर मजदूर को बहुत क्रोध आया. एक बुखार दूसरी निर्धनता, सो जूता उतार कर पांच सात जूते स्त्री के सिर पर कस दिये, जूते लगाकर कहने लगा कि हे महा मूर्ख! यह तुमने किया क्या! तुम्हें मालूम नहीं है, साधु बड़े ठग होते हैं. भोले भाले गरीब लोगों को लूटने ठगने में उन्हें देर नहीं लगती.अब दवाई और रोटी कहां से लाऊंगा, जो हम और बच्चे खायेंगे. फिर स्त्री को एक लात मारकर कहा उठ, दूर जा बैठ! मेरी आंखों के आगे से हट जा, ऐसा कहकर चारपाई पर पड़ गया. पति और बच्चों की हालत देखकर मजदूर की पत्नी अपनी करनी पर पछताने लगी. क्या करती बेचारी. जूतों की मार खाने पर भी चूं तक न बोली. वहां से उठकर आंगन में जाकर बैठ गयी. गरीबों को भला कौन पूछता है. कहीं से उधार मिलने की भी आशा नहीं थी. भूल क्षमा कराने का भी सवाल नहीं था. क्योंकि स्थिति स्पष्ट और सामने थी. पति को तीव्र ज्वर है, बच्चे भूखें हैं. पति को दवाई की आवश्यकता है. बच्चे भूख से और पति ज्वर से तड़प रहे हैं. उस बेचारी को मानसिक व्यथा कितनी होगी, यह कहा नहीं जा सकता.

जब कभी ऐसे बुरी स्थिति बन जाती है, तो बहुत से लोगों (जो सच्चे हृदय से पश्चाताप करते हैं) की टेव (आदत) होती है कि वे सिर नीचे कर धरती को किसी तिनके या लकड़ी से खोदते हैं. अतः शोक संतप्त हृदय वह मजदूर पत्नी भी धरती को खोदने लगी, आंखो से आंसू टपक रहे थे, सन्त के वचन भी विचार रही थी. "एक देवे तो दस पावे" सन्तों के वचन झूठे तो नहीं होते, पर न जाने रूपये कब मिलेंगे. अब मैं क्या करूँ. इस प्रकार सोच भी रही थी और धीरे धीरे धरती भी खोद रही थी यद्यपि पति ने उसे खूब मारा था, बुरा भला कहा था, फिर भी उसके मन में पति के लिये तनिक भी घृणा उत्पन्न नहीं हुई, वह तो अपने को कोसती रही, उसे अपनी नहीं पर पति एवं बच्चों की फिक्र थी. पतिव्रता नारी पर देवता प्रसन्न होते हैं.धन के देवता कुबेर ने व्याकुल देखकर धरती माता को संकेत दिया, धरती को रत्नागर्भा भी कहते हैं, देवताओं के लिए कोई बड़ी बात नहीं है. कुबेर के संकेत को पाकर धरती माता ने दस रूपये वहां रख दिये जहां वह खोद रही थी. दैवात् (अचानक) वहां से एक गांठ निकल आयी, खोली तो बराबर दस रूपये निकले. रूपये देखकर निराशा आशा में, अन्धकार प्रकाश में, शोक हर्ष में बदल गया. रूपये लेकर वह पति के पास आयी, खाट पर पड़ा पीड़ा से कराह रहा था, उसे आवाज देकर कहा कि पतिदेव! रूपये मिल गये, देखो. रूपयों का नाम सुनकर मजदूर उठ बैठा, स्त्री ने रूपया उसके हाथ में दे दिया, मजदूर! जिसने भला जीवन में कभी दस रूपये नहीं देखे थे, सो रूपये देखकर आश्चर्य में डूब गया. बुखार तो जाने कहां चला गया. उसी समय ठीकठाक हो गया. स्त्री से पूछा,ये सारे रूपये इतने में कहां से ले आयी? स्त्री ने कहा की ये सन्त की कृपा से मिले हैं. जब मैं दुखी होकर धरती खोदने लगी तो एक गांठ निकल आयी. खोला तो दस रूपये थे. स्त्री की बात सुनकर मजदूर कहने लगा कि मैं बड़ा मूर्ख हूँ, मुझे क्या पता कि सन्तों कि वचन सच्चे होते हैं. मैंने तुम्हें मारा पीटा है, इसलिये मैं बहुत लज्जित हूँ. अब मेरी आज्ञा है, कोई भी सन्त साधु रूपया मांगे तो दो चार रूपये बड़ी खुशी से दे देना. ऐसा कहकर मजदूर बाजार जाकर सामान ले आया.सबने मिलकर आनन्द से खाया, फिर वह अपनी मजदूरी में लग गया. पांच सात दिनों के बाद फिर वह साधु, वही आवाज " एक देवे तो दस पावे, नहीं देवे तो फिर पछतावे" लगाता हुआ जा रहा था, आवाज सुनकर माई घर से निकल कर बाहर आयी.कहने लगी महाराज! आप सच कहते हो, "एक देवे तो दस पावे, पर बीच के जूते कौन खावे?साधु ने कहा "जो खावे वह ही पावे, दूसरा खड़ा पछतावे " माताजी! जो कोई भी कष्ट संकट में सन्तोष करता है, कडुवे शब्दों और मारपीट को सहन करता है, वह ही सब कुछ पाता है.

दोहाः *साहब का घर ऐसा लम्बा, जैसे लम्बी खजूर.*
चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना चूर.

भक्ति के मार्ग में पहले असहनीय कष्ट आते हैं, तत्पश्चात् जो सुख मिलता है, वह अवर्णनीय है, अनन्त युगों तक मिलता रहता है. इतनी कथा सुनाकर स्वामी जी सारी संगत को कहने लगे कि अविनाशी आत्माराम का घर खजूर के पेड़ की तरह बहुत ऊँचा है, जो कोई चढ़ गया तो ब्रह्मानन्द रूपी अमृत रस का पानकर अमर हो जायेगा. यदि गिरा तो चकनाचूर हो जायेगा. अर्थात् चौरासी के चक्कर में चला जायेगा. एक तो अमृत मिलना कठिन पर उसका पान करना और कठिन है, पीने के पश्चात् उसको पचा लेना और भी कठिन है. इतना होते हुए भी सन्त महात्मा

गतदिन ढंढोरा देते रहते हैं. है कोई पीने वाला.

भजन

कोई पीवे तो मैं देवूं, प्याला प्रेम का भर भर.
नहीं पीवे तो मेरा क्या, खड़ा भटके सो दर दर.
टेक .
हमारा हक का होका, सदा देवूं सो घर घर घर.
वही मन्सूर जो माने, और जग जा सभो डर डर.1 .
बड़ी मुश्किल कठिन बाजी अवल आवे को मर मर मर.
दुर्नि के मोह सागरसे, निकल जावे सो तर तर तर. 2 .
पहले कितनी खुशी करते, पीछे वो जात ठर ठर ठर.
विशनदास कहे साचा, जपन मुश्किल सो हर हर हर.3.

इस विषय पर एक दो भजन गाकर संक्षेप में बतलाकर अर्थ स्वामी जी ने सतूनाम साक्षी, साक्षी शिवोऽहमृ की धुनी लगाकर स्वामी जी ने सत्संग समाप्त किया. इस तरह प्रतिदिन प्रातः सांय सत्संग होता था. भोजन भी चलता था. यद्यपि उन दिनों में मध्यभारत में अनाज और कपड़े का राशन था. परन्तु कुम्भ मेले के प्रधान अधिकारी ने पहले से ही सन्तों को प्रार्थना की थी कि मेरे पास राशन की जो भी चीज होगी, वह सर्व प्रथम आप लोगों को दूंगा. क्योकि "सिन्ध का अन्नक्षेत्र" यह नाम सुनकर हम बहुत खुश हुए हैं. यहां पर सिंधी क्षेत्र पहली बार लगा है. इस कारण सारी छावनी की कुटियाएं, सतूसंगमण्डप आदि सब कपड़े के बनाये गये थे. भोजन भी अखण्ड खोला गया था. सिन्ध के प्रेम प्रकाशी क्षेत्र का भोजन सब सन्त साधु बड़े चाव से खाते थे. आपस में कहते थे कि ऐसा भोजन कुम्भ मेले में खिलाते हैं. उन दिनों में प्रथम श्रेणी में सिन्ध का भोजन, दूसरी श्रेणी में पंजाब का भोजन, तीसरी श्रेणी में गुजरात का भोजन था. भोजन के विषय में, जिन लोगों ने यात्रा की होगी उनको मालूम होगा.भजन और भोजन के कारण सिन्ध की प्रेम प्रकाशी छावनी का नाम पूरे कुम्भ मेले में फैल गया. सन्तो यात्रियों के सिवा स्थानीय लोग भी भोजन लेने आते थे. किसी यात्री को असुविधा न हो इसलिए सेवाधारी सदा सावधान रहते थे. सत्संग भी नियमानुसार चलता रहता था.

दोहा: *सन्तों की ये ही सिधी, काटे कर्म कलेश.*
अति हित मीठे वचन कह, देत सत्य उपदेश.

सन्त महात्मा लोग जादूगरों की तरह कोई जादू या चमत्कार नहीं दिखाते. उनकी सब से बड़ी सिद्धी यह है कि मनुष्य के कठोर क्रूर स्वभाव को भी बदल देते हैं. इतनी कथा सुनाकर सतूनाम साक्षी, साक्षी शिवोऽहमृ की धुनी लगाकर स्वामी जी ने सत्संग समाप्त किया. इस तरह प्रतिदिन सुवह शाम सत्संग होता था. सन्त गुरूमुखदासजी, सन्त बसन्तरामजी, सन्त शान्तिप्रकाशजी, सन्त चन्दनप्रकाश जी, सन्त माधवदास जी, सन्त आत्मानन्दजी, सन्त गणेशानन्दजी, सन्त प्रेमानन्दजी , सन्त धर्मदासजी,सन्त जयप्रकाशजी, सन्त ऊधवदासजी, सन्त मुरलीधरजी, सन्त जीवनमुक्तजी सन्त हरप्रकाशजी, सन्त कृष्णदासजी, सन्त भजनदासजी इत्यादि सब सन्त कार्यक्रम अनुसार सत्संग करते थे, स्वामी जी भी प्रतिदिन सत्संग करते थे. विशेषकर कुम्भ मेले के मुख्य पर्वों पर स्वामी जी, सब सन्त और यात्री लोग क्षिप्रा गंगा में डुबकियां लगाते थे. मुख्य पर्वों पर सन्त और भक्त लोग पक्के भण्डारे करवाते थे, सब सम्प्रदाय के साधु सन्त एक साथ पंगत में बैठकर भोजन करते थे. भोजन भण्डारा रात दिन चालू रहता था,ज भी जिस समय आता था तो भोजन खाकर जाता था. भगवान श्री कृष्णज की विद्यास्थली अवन्तिकापुरी जहाँ भगवान महाकालेश्वर महादेवजी (ज्योतिलिंग भक्तों को वरदान देने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं. स्वामी जी और स सन्त प्रतिदिन उनके दर्शन करने जाते थे.

दूसरे भी अवन्तिकापुरी (उज्जैन) में जितने पुण्यस्थल थे, उ सबके दर्शन करने स्वामी जी एवं सब सन्त जाते थे. पास में नर्मदा क किनारे पर विराजमान भगवान ओंकारेश्वर महादेव (ज्योतिलिंग) के भ दर्शन कर आये. स्वामी जी सन्तों सेवकों को साथ लेकर सभी सम्प्रदाय के सन्तों और महन्तों से मिलने जाते थे अपने सम्प्रदाय के आचा सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज और अपने देश सिंध का परिचय उनको दे थे और उन से भी परिचय लेते थे. कुम्भ मेले में पधारे सब सन्त महात्माओं के दर्शन कर स्वामी जी बड़े खुश होते थे. बराबर एक महीन कुम्भ मेला चला, बड़ा आनन्द हुआ.कुम्भ का मेला सुख से समाप्त हुअ सब यात्री अपने घर गये. (सद्गुरु सर्वानन्द जीवन चरितामृत से)

सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आचार्य सद्गुरू टेऊँराम ज महाराज के महिमा संबंधी भजन संग्रह पुस्तक प्रकाशित की जा रह है जिसमें आचार्य श्री की महिमा के भजन संकलित किये जायेंगे अतः सभी सन्त प्रवर, कवि, गायक,भजनीक, प्रेमी-भक्तजन आपक द्वारा अथवा अन्य कवियों द्वारा रचित महिमा संबंधी भजनों क संकलन करके (शुद्धि करवाकर) सुन्दर लिखावट या कम्प्युटर टाइ करवाकर शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें. सभी भजनों क संकलन कर " सदगुरू टेऊँराम महिमा भजन संग्र पुस्तक" में प्रकाशित किया जावेगा.

आशा है इस पुण्य कार्य में आप सभी प्रयासर रहकर भजन २० मई २००४ से पूर्व भेज देवें.

भजन भेजने का पताः
भजन संग्रह पुस्तक
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड
जयपुर-३०२००१ (राज.) ०१४१-२३७२४२३,२३७२४२

अमृत कुम्भ की अवधारणा

15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश
2004
सिंहस्थ
विक्रम संवत् 2061

वर्तमान समय में श्री वसुधा के ओर-छोर तक किसी न किसी रूप में अखिल कोटि ब्रह्माण्डनायक उस परम प्रभु की व्यापक शासन शक्ति धर्मरूप से निर्बाध दृष्टिगोचर हो रही है. वर्णाश्रमियों की सुदृढ़ता का ही फल है. कि परमपिता परमेश्वर श्री सदेह धरातल पर अवतीर्ण होकर सज्जन, साधु-रक्षा एवं दुष्टों का संहार कर पृथ्वी का भार हल्का करने में अग्रसर होते हैं.

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत.
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्.
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्.
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे. (गीता ४/७-८)

नाना प्रकार के पर्वो का सृजन भी धार्मिक विज्ञानों द्वारा ही हुआ था. सबके मूल में कोई न कोई अलौकिक विशेषता विद्यमान रहती है जिसे विचारशील ही समझ पाते हैं. इन्हीं महापर्वों में कुम्भ पर्व भी है. जो कि भारत के हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, और नासिक इन चार स्थानों में मनाया जाता है.

वैसे कुम्भ शब्द का अर्थ साधारणतः घड़ा ही है. किन्तु इसके पीछे जनसमुदाय में पात्रता के निर्माण की रचनात्मक शुभभावना मंगलकामना एवं जन-मानस के उद्धार की प्रेरणा निहित है. यथार्थतः कुम्भ शब्द समग्र सृष्टि के कल्याणकारी अर्थ को अपने आप में समेटे हुए है.

कुं पृथ्वी भावयन्ति संकेतमन्ति भविष्यत्कल्याणादिकाम महत्याकाशी स्थिताः.
बृहस्पत्यादयो ग्रहाः संयुज्य हरिद्वार प्रयागादितत्रतुण्यस्थान विशेषानुद्दिश्य यस्मिन् सः कुम्भः.

पृथ्वी को कल्याण की आगामी सूचना देने के लिये या शुभ भविष्य के संकेत के लिये हरिद्वार, प्रयाग आदि पुण्य स्थान विशेष के उद्देश्य से निर्मल महाकाश में बृहस्पति आदि ग्रहराशि उपस्थित हो जिसमें, उसे कुम्भ कहते हैं. इसके अतिरिक्त अन्यान्य जन कल्याणकारी भावों को भी कुम्भ शब्द के शब्दार्थ में देखा जा सकता है.

पुराणों में कुम्भपर्व की स्थापना बारह की संख्या में की गयी है जिनमें से चार मृत्युलोक के लिये और आठ देवलोकों के लिये हैं.

देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यैर्द्वादशवत्सरैः, जायन्ते कुम्भ पर्वाणि तथा द्वादश संख्यया.
पापापनुत्तये नहृणां चत्वारि भुवि भारते, अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चेतरैः.

भूमण्डल के मनुष्य मात्र के पाप को दूर करना ही कुम्भ की उत्पत्ति का हेतु है. यह पर्व प्रत्येक बारहवें वर्ष, हरिद्वार,प्रयाग, उज्जैन और नासिक इन चारों स्थानों से होता रहता है. इन पर्वो में भारत के सभी प्रान्तों से समस्त सम्प्रदायवादी स्नान,ध्यान,पूजा-पाठादि करने के लिये जाते हैं.

नार-समुद्र से पर्यवेष्टित भारतभूमि स्वभावतः मलिनता के कलंक पंक से युक्त है. यह पुण्यप्रक्षालित भूमि है. भौगोलिक दृष्टि से इसके चार पवित्र स्थानों में उस अमृत कुम्भ की प्रतिष्ठा हुई थी, जो उस समुद्र-मन्थन से उद्भूत हुआ था.

कालिक दृष्टि से ऐसे ग्रहयोग जो खगोल में लुप्त-सुप्त अमृतत्व को प्रत्यक्ष और प्रबुद्ध कर देते हैं. चारों स्थानों में बारह-बारह वर्ष पर अर्थात् द्वादश वर्षात्मक कालयोग प्रकट होते हैं. तब गंगा (हरिद्वार), त्रिवेणी जी (प्रयाग), क्षिप्रा (उज्जैन) और गोदावरी (नासिक) ये पवितपावनी नदियां अपनी जलधारा में अमृतत्व को प्रवाहित करती हैं.अर्थात् देश, काल एवं वस्तु तीनों अमृत के प्रार्दुभाव योग्य हो जाते हैं. फलस्वरूप अमृतघट या कुम्भ का अवतरण होता है. कालचक्र न केवल जीवन से क्रिया कलाप का मूलधार है अपितु समस्त यज्ञकर्म अनुष्ठान एवं संस्कार आदि भी कालचक्र पर आधारित हैं. कालचक्र में सूर्य, चन्द्रमा एवं देवगुरू बृहस्पति का महत्वपूर्ण स्थान है. इन तीनों का योग ही कुम्भ पर्व का प्रमुख आधार है. जब बृहस्पति मेष राशि पर तथा चन्द्रमा सूर्य-मकर राशि पर स्थित हो तब प्रयाग में अमावस्या तिथि को अति दुर्लभ कुम्भ होता है. इस स्थिति में सभी ग्रह मित्रतापूर्ण और श्रेष्ठ होते हैं. हमारे जीवन में शुभ विचारों का उदय होता है और हमारे जीवन में यह योग ही सुखदायक होता है.

कुम्भ के अवसर पर भारतीय संस्कृति और धर्म से अनुप्राणित सभी सम्प्रदायों के धर्मानुयायी एकत्रित होकर अपने समाज, धर्म एवं राष्ट्र की एकता, अखण्डता, अक्षुण्णता के लिये विचार विमर्श करते हैं. स्नान, दान, तर्पण तथा यज्ञ का पवित्र वातावरण देवताओं को भी आकृष्ट किये बिना नहीं रहता. ऐसी मान्यता है कि इस महापर्व पर सभी देवगण तथा अन्य पितर यज्ञ-गन्धर्व आदि पृथ्वी पर उपस्थित होकर न केवल मनुष्य मात्र, अपतु जीवमात्र को अपनी पावन उपस्थिति से पवित्र करते रहते हैं.

गीता प्रेस

नरेश प्रेम प्रकाशी, अमरापुर स्थान, जयपुर

सिंहस्थ 2004
विक्रम संवत् 2061

सिंहस्थ सिंहावलोक

पुराणों में दी गई समुद्र मंथन की कथा को लेकर सिंहस्थ (कुम्भ पर्व) की परंपरा देव और दानवों में सर्वथा वैमनस्य रहा है. किन्तु एक समय ऐसा भी रहा है तब दोनों में समझौता हो गया था और उन्होंने भूमंडल को घेरे हुए रत्नाकर नामक विख्यात असीम जलराशि का अधिपति सागर जिसमें अमूल्य रत्न तथा अमृत प्रदान करने वाला कुम्भ दबा हुआ है. विलक्षण शक्ति वाले देव-दानवों में अमृत प्राप्ति की सुखद कल्पना को लेकर अदम्य उत्साह था किन्तु समुद्र की खोज और अमृत प्राप्ति कोई साधारण कार्य नहीं था. सागर के अनुवेषण मंथन के लिये मन्द्राचल पर्वत को मथनी बनाने की योजना देव और दानवों द्वारा बनायी गयी तथा सर्पराज वासुकी को रस्सी के उपयोग के लिये आमंत्रित किया गया.

मन्द्राचल को मथनी और वासुकी को रस्सी बनाकर समुद्र मंथन का कार्य आरंभ हो गया. सर्प के मुख की तरफ से दानव और पूंछ की तरफ देवता लोग अपार उत्साह से समुद्र को मथने में जुटे हुए थे. मंथन की भीषणता से तीनों लोक कांप रहे थे. सागर के जीव-जन्तु तथा स्वतः सागर की दुर्गति तो अकथनीय ही थी. आखिर मंथन की इस प्रक्रिया में देव और दानवों की संगठनात्मक शक्ति के आगे रत्नाकर को झुकना पड़ा और अन्यान्य १४ रत्नों के साथ क्रमशः स्वर्ण कलश में बन्द अमृत बाहर आ गया. अमृत प्राप्ति से चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण छा गया, देव और दानवों का श्रम सफल हो जाने से वे अपनी थकान भी भूल चुके थे और दोंनो ही दल अमृत कलश हड़पने की कूटचाल सोच रहे थे कि इसी बीच देवराज इन्द्र ने अपने युवा पुत्र जयन्त को अमृत कलश लेकर भागने के लिये इशारा कर दिया. जयन्त को कलश लेकर भागता देख दानवों को देवताओं की चाल समझते देर नहीं लगी और परिणाम स्वरूप देव और दानवों में भयंकार युद्ध छिड़ गया. कहते हैं कि यह संग्राम देवताओं के १२ दिन अर्थात् मनुष्यों के १२ वर्ष तक चला था इस १२ वर्षों के भीषण संग्राम में जयन्त चार स्थानों पर दानवों की पकड़ में आ गया था. आपसी संघर्ष और छीना झपटी में अमृत की कुछ बूंदें इन्ही चार स्थानों पर छलक पड़ी थी. अमृत कलश हरण करने के लिये दानवों ने सम्पूर्ण शक्ति लगा दी थी किन्तु देवताओं के संगठन एवं कूट चालों ने उन्हें सफल नहीं होने दिया. देवों में से सूर्य चन्द्र और गुरू का अमृत कलश संरक्षण में विशेष योगदान रहा था. अमृत कलश को गिरने से, सूर्य ने फूटने से तथा वृहस्पति ने असुरों के हाथों में जाने से बचाया था.

इस कारण इन तीनों ग्रहों की विशिष्ट स्थिति में तथा उन्ही
तीर्थों में जहाँ अमृत बूदें गिरी थी, यह सिंहस्थ महापर्व मनाये जा
परंपरा है.यह पर्व प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, तथा उज्जैन चारों तीर्थों
कि अमृत बूदें गिरने से अमृत्व पा गये हैं. मनाया जाता है. धार्मिक
का विश्वास है कि अमृत कलश से छलकी बूदों से यह तीर्थ तथा य
पवित्र नदियां गंगा,यमुना,गोदावरी,सरस्वती तथा क्षिप्रा अमृतमयी हो ग
अंत में इस भीषण संग्राम को समाप्त करने के लिये भगवान विष्णु ने म
रूप धारण किया और अपने ही वर्ग देवों में अमृत का पान करा दिय
समुद्र मंथन की कथा में यह स्पष्ट है कि अमृत कलश के संरक्षण
चन्द्र तथा बृहस्पति का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है. अतः इन्ही ग्रहों के
विशिष्ट योग के अवसर पर कुंभ पर्व मनाये जाने की परंपरा है. जिन
ग्रह योगों में चारो तीर्थों में अमृत बूदें गिरी थी, उज्जैन में सिंहस्थ म
मनाये जाने के लिये निम्न ग्रहों की स्थिति एक साथ आ जाने पर ही
जाता है इसके लिये कहा गया है कि

मेष राशि गते सूर्य, राशयां बृहस्पती.
अवन्तिकायां भवेद कुंभ सदा मुक्ति प्रदायकः.

देघताओं के १२ दिन और मनुष्यों के १२ वर्षो में कुल १
पर्व होते हैं. पृथ्वी पर मनुष्यों के लिये ४ कुंभ पर्व लोकान्तर में देवता
होते हैं अमृत बिन्दु के पतन से पृथ्वी पर ४
हरिद्वार,प्रयागराज,नासिक,उज्जैन में मनाये जाते हैं. प्रयाग में कुंभ पर्व
जाने के लिये ग्रह योगों की स्थिति में माघी अमावस्या को मकर राशि
चन्द्र हो तथा वृषभ का गुरू हो दूसरे प्रमाण में मेष का गुरू होवे तो
में कुंभ पर्व होता है. इसी प्रकार हरिद्वार में कुंभ पर्व मनाये जाने के
कुंभ राशि के गुरू में जब मेष का सूर्य आवे तब हरिद्वार में कुंभ पर्व
है. सिंह राशि के गुरू में जब सिंह राशि का गुरू होता है तब गोदाव
नासिक में कुंभ पर्व होता है. आदि प्रमाणों से यहां का कुंभ सिंहस्थ प
राशि के गुरू में मेष का सूर्य आने पर मनाया जाता है. नासिक और
के कुंभ पर्व सिंहस्थ नाम से ही प्रचलित हैं. अतः यहां सिंह का गुरू
पर्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती.

कुमं (सिंहस्थ) जैसे पर्व का काल नि[illegible] परंपरागत प्रमाण
तथा भावी ग्रह स्थिति को दृष्टिगत रखकर ही [illegible]ना चाहिए. परिस्थि

समय परिवर्तन के साथ-साथ वर्तमान राज्य शासन संत महन्तों को निमंत्रित करते हैं और पर्व की व्यवस्था बनाते हैं. इस पर्व पर संन्यासियों के अनेक सम्प्रदाय उज्जैन में आते हैं तथा अपने परंपरागत निर्धारित पड़ाव स्थल पर ठहरते हैं व क्षिप्रा स्नान के समय भावी शोभायात्रा के रूप में नगर के प्रमुख मार्गों से होकर क्षिप्रा स्नान को जाते हैं.

धार्मिक नगरी उज्जयिनी

भारत का सांस्कृतिक राजधानी उज्जयिनी पुराणों के अनुसार प्रसिद्ध पुण्य नगरी है. मालवा की शस्यशामला भूमि पर स्थिति उज्जयिनी (उज्जैन) भारत की सात धार्मिक नगरियों में से एक है. इसे अलग अलग युगों में अनेक नाम से सम्बोधित किया गया है. महर्षि वाल्मीकि ने भी इसका वर्णन किया है. महाभारत काल में भी इसका वर्णन किया गया है. अवन्ति के निकट महिष्मति के हैहयों का वर्णन तो अथर्ववेद में भी मिलता है. उज्जैन को समय-समय पर विभिन्न नामों से पुकारा जाता रहा है जैसे विशाला, कुशस्थली, प्रतिकल्पा, पद्मावती,अमरावती,अवन्तिका,उज्जयिनी,उज्जैन.

उज्जैन विंध्याचल के पठार पर समुद्र सतह से ४९१.७४ मीटर की ऊँचाई पर क्षिप्रा के सुरम्य तट की बांयी ओर बसा है. यहां की जलवायु सम-शीतोष्ण है. कहा जाता है कि कर्क रेखा बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रसिद्ध महाकालेश्वर के शिखर पर से होकर गई है. पुराणों के अनुसार उज्जैन देश का नाभी (केन्द्र बिन्दु) माना गया है. उज्जैन पुरातनकाल में भारत का प्रमुख विद्या केन्द्र था जहां भारत का सर्वोत्तम विद्यापीठ विद्यमान था यही कारण है कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व महर्षि सान्दीपनि के चरणों में बैठकर गीता धर्म के प्रवर्तक भगवान श्रीकृष्ण ने यहां चौसठ कलाओं की शिक्षा प्राप्त की थी. यहां पर ग्यारहवीं सदी में काव्यकारों की परीक्षा होती थीं. सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त, शुद्रक और कालिदास जैसे महान व्यक्तियों ने परीक्षाएं दी थी. ज्योतिष के अनेक ग्रंथो का निर्माण भी यहीं हुआ है. महाकवि वाण की अमर कथाकृति कादम्बरी तो आदि से अन्त तक अवन्तिकी उज्जवल भव्य एवं वैभवशाली कीर्ति से भरी है. विदेशों से आने वाले यात्री अलवेरूनी, व्हेनसांग, सूगमुन, हालमी, वरनियर, हिमेशलब आदि विदेशियों ने अपनी पुस्तको में उज्जैन का भावभीना वर्णन भरा है. ई.पू. छठी सदी से उज्जैन के इतिहास की सामग्री उपलब्ध होती है. महात्मा बुद्ध कालीन शासक राजा प्रद्योत उस समय अवन्तिका का शासक था.

उज्जैन के मोर्य साम्राज्य के अर्न्तगत रहने का भी पता चलता है. अशोक जो भविष्य में महान सम्राट हुआ उज्जैन का वर्षो राजा होकर यहां के इतिहास अनुसार उसने यहीं अध्ययन किया और परीक्षाएं भी दी थीं. यहां न्याय प्रेमी विक्रमादित्य, वीर तेजस्वी और शक विजयी रहे हैं जिन्होंने सारे भारत का चक्रवर्ती राजा बनकर विदेशों पर भी विजय प्राप्त की. ई. के ५७ वर्ष पूर्व इसी महान सम्राट ने अवन्तिका को केन्द्र बनाया था और मालवगढ़ की परंपरा को प्रतिष्ठित किया था. इसके पश्चात् समय अनुसार परिवर्तन होते रहे एवं उज्जयिनी पर विभिन्न शासकों का अधिकार होता रहा. यहां जयसिंह के राज्य के समय मराठों ने हमला कर दिया. जयसिंह इन आक्रमणों से त्रस्त हो गये थे तथा उनकी सलाह से १७४२ ई. में मालवा मराठों को दे दिया. पेशवा ने अपने सरदार सिंधिया को १७५० के लगभग उज्जैन उपहार स्वरूप प्रदान किया. इसके पश्चात् जो उज्जैन आक्रमणों के कारण तहसनहस हो गया था उसका जीर्णोद्धार सिंधिया ने करवाया. महाकालेश्वर तथा और भी मंदिरों का निर्माण सिंधिया ने करवाया.

सन् १९४८ में उज्जैन मध्य-भारत का एक अंग बन गया. सन् १९५६ से राज्य पुर्नगठन के परिणामस्वरूप निर्मित मध्यप्रदेश राज्य में उज्जैन ने अपना गौरवशाली स्थान ग्रहण किया. उज्जैन की गणना जिन सात महान धार्मिक नगरियों में की जाती रही है उसके सम्बन्ध मे यह प्रचलित है कि:- *अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका.*
पुरी, द्वारावती, चैव, शप्ततैंता, मौक्षदायिकाः.
इन सातों नगरियों में काशी सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है, लेकिन उससे भी १० गुना पुण्यदायिनी अवंतिका है ऐसा उल्लेख स्कन्दपुराण में है.

भगवान महाकाल के दर्शन श्रद्धालुओं की प्राथमिकता

भारत के विभिन्न भागों से आने वाले यात्रीगण जब उज्जैन की सीमा में प्रवेश करते हैं तो भगवान महाकाल के दर्शन उनका प्रथम लक्ष्य बन जाता है क्योंकि द्वादश ज्योतिर्लिंग में प्रमुख भगवान महाकाल समस्त मृत्युलोक का भी प्रतिनिधित्व करते हैं. समस्त मानव लोक के अधिपति होने से अवंतिका को सम्पूर्ण मानव लोक की धार्मिक राजधानी के रूप में महत्व तथा गौरव प्राप्त हो गया है. पुराणों में लिखा है-

आकाशे तारकं लिंग पाताले हाट्केश्वरम्.
मृत्युलोके महाकालं लिंगत्रय नमोस्तुते.

भगवान महाकाल का गौरव, प्राचीनता तथा धार्मिक महत्व के दर्शन हमें पुराणों एवं उपनिषदों में होते हैं. बराहक्ती नाभिदेशे महाकाल स्तत्रम्ना तत्र बैहर के अनुसार महाकाल की नाभि देश में स्थित होना बताया गया है. इसी प्रकार काल गणना का संबंध भी महाकाल में ही बताया गया है. कालचक्र प्रवर्त को महाकालः तापनः कहा गया है ऐसे भगवान महाकाल का सुन्दर-आकर्षक एवं विशाल मंदिर यहां स्थित है. इस मंदिर की सीमा में प्रवेश के लिये एक विशाल द्वार सभा मंडप है.

मंदिर एक विस्तृत क्षेत्र को घेरे हुए है, तथा इस क्षेत्र में ओंकारेश्वर, स्वप्नेश्वर, वृद्धकालेश्वर, अनादिअल्पेश्वर एवं सप्तर्षिगण आदि

अनेक शिवालय विद्यमान हैं. मंदिर के पश्चिम भाग में कोटितीर्थ नामक एक मंदिर जलाशय है इसमें आकर्षक फब्वारा लगाया गया है. महाकालेश्वर के सभा मंडप में राम-मंदिर और पीछे अवंतिका देवी की प्रतिमा विराजमान है.

मंदिर की दिनचर्या प्रातः४ बजे की भस्मारती से प्रारंभ होती है. इसके बाद आठ बजे, दिन के ११ बजे तथा सायंकाल ७ बजे भगवान की आरती पूजन होता है. प्रातःकाल की भस्मारती तो शान्त वातावरण में एक विशेष आत्मानंद उत्पन्न कर देती है.

धार्मिक दृष्टिकोण

यह सर्वविदित है कि इस ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व पौराणिक नगरी उज्जयिनीकी अपनी महत्ता है.सम्राट विक्रमादित्य की न्यायप्रियता, महाकवि कालिदास की काव्य स्थली और बारह ज्योतिर्लिंग में प्रसिद्ध भूत भावन महाकालेश्वर यहां विराजमान हैं. भगवान श्रीकृष्ण ने यहीं शिक्षा ग्रहण की है. यहां पुण्य सलिला क्षिप्रा की कल-कल करती धारा प्रवाहमान है जिसके तट पर शक्ति का लास्य रूप हरसिद्धि है तो रूद्र रूप कालिका है. तंत्र रूप से चौसठ योगिनी है तो रक्तरंजित रूप में चौबीसखम्बा देवी है. जहां पर क्षिप्रा तट पर सिद्धवट और मंगलनाथ का वरदहस्त है वहीं राष्ट्रीय एकता के मछन्दरनाथ, वैराग्य प्राप्त करने वाले राजा भर्तृहरि, इस पुण्य भूमि के साथ जुड़े हुए हैं. यहां पर दानी दरवाजे का अनन्तशायी विष्णु मंदिर सांदीपनि आश्रम तथा राम जनार्दन मंदिर वैष्णव भक्ति के प्रमाण हैं. सांदीपनि आश्रम में ही महाप्रभुजी ने चातुर्मास सत्संगकीर्तन कर वैष्णव धर्म की प्रतिष्ठा में योगदान दिया. आदित्य उपासकों तथा ज्योतिर्विज्ञान के अभ्यासकों के केन्द्र के रूप में उज्जयिनी थी ही उसका प्रभाव औखलेश्वर में मिले सैर्य व जयन्त प्रतिमा, कालियादेह का सूर्य मंदिर व अन्यत्र मिले नवग्रह प्रतिमाओं और राजा जयसिंह की वैधशाला है.

उज्जयिनी अत्यन्त प्रचीनकाल से ही एक आध्यात्मिक, धार्मिक एवं व्यापारिक व राजनैतिक केन्द्र के रूप में अत्यन्त विख्यात रही है. शैव, वैष्णव, बौद्ध एवं जैन धर्म की यह नगरी एक प्रमुख केन्द्र रही है. यहां वैधशाला के रूप में ज्योतिष की महान परंपरा चली आ रही है. भारत के हृदय स्थल में विद्यमान होने के कारण यह उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत, पूर्वी भारत व पश्चिमी भारत का केन्द्र स्थल रही है.युगों-युगों से लगने वाला द्वादश वर्षीय कुम्भपर्व प्रति १२ वर्ष में यहां लगता है जिसमें हजारों साधु सन्त व हजारों यात्री स्नान का पुण्य अर्जन करते हैं.

क्षिप्रा का महात्मय

प्रयाग और काशी में जिस प्रकार भागीरथी गंगा के स्नान का महात्मय है उसी प्रकार उज्जयिनी में क्षिप्रा स्नान का महात्मय [illegible] गया है. मालवा क्षेत्र के निवासी इसे गंगा समान ही पूज्य और मो[illegible] मानते हैं. महाकवि कालिदास ने शिक्षा के शीतल, मन्द, सुगन्ध [illegible] विशेषता का वर्णन करते हुए मेघदूत में लिखा है-

दीर्घी कुर्वन् पदु मदकलं कूजितं सारसानां, प्रत्यूषेषू स्फुटितकमलामोदमैत्र
यह स्त्रीणा हरति सरतग्लानिमंगानुकूलः, सिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थना

इसका पद्यानुवाद इस प्रकार है-

प्रातकाल फूले नित कंजन तें भेंटि-भेंटि, रजन हिये को होत गंध सरस
दीरघ करत मदमाते बोल सारस के, सुरन रसीले सुने कान सुख मानो
स्ते गुन साथ तात सिपरा नदी को बात, पौतम समान वीनती में अति स
सुरत ग्लानि हरे सोई तहां नारिन को, गात हितकारी जात याही ते ब

स्कन्द पुराण के अवन्ती खण्ड में क्षिप्रा की महिमा इस लिखी गई है- ***नास्ति वत्स महीपुष्ठे सिप्रायाः सदृशी***
यस्यास्तीरे क्षणान्मुक्तिः कि चिरात्सेवने

अर्थात् पृथ्वी पर क्षिप्रा के समान और कोई नदी नहीं है, जिसके जाने से क्षणभर में ही मुक्ति प्राप्त होती है. यह भी कहते सुना [illegible]

सिप्रा सिप्रेति यो ब्रूयात् योजनानां शतेरपि.
मुच्यतेसर्व पापेभ्यःशिवलोक समच्छति.

अर्थात जो कोई सौ योजन दूर से भी "क्षिप्रा-क्षिप्रा" इस नामोच्चारणं करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है. पु[illegible] अनुसार क्षिप्रा के चार नाम हैं यथा- क्षिप्रा, ज्वरघ्नी, पापघ्[illegible] अमृतसंभवा. स्कन्द पुराण के अवन्ती खण्ड में इन नामों के [illegible] विस्तृत रूप से वर्णन मिलता है.क्षिप्रा के चार रूप हैं- वैकुण्ठ में क्षि[illegible] में ज्वरघ्नी, यमद्वार में पापघ्नी तथा पताल में अमृतसंभवा.

क्षिप्रा के जन्म की भी अनेक कथाएं हैं, एक बार महाक[illegible] क्षुधा से पीड़ित हो कर भिक्षा मांगने विष्णु भगवान के पास पहुंचे [illegible] ने भीख तो नहीं दी, बदले में तर्जनी अंगुली दिखाकर उन्हें निर[illegible] दिया. महाकालेश्वर ने क्रुद्ध होकर उनकी तर्जनी काट दी. उस[illegible] बहने लगा तब भगवान भूतनाथ ने उसके नीचे अपना खप्पर क[illegible] खप्पर भर गया और धार न रुकी. वह नीचे बही. उसी का ना[illegible] हो गया. इसलिये उसे विष्णु देहात्समुत्पन्ने क्षिप्रे कहा गया है.

सिंहस्थ में क्षिप्रा स्नान का बहुत अधिक महत्व है, क्षिप्र[illegible] के लिए गंगा-दशहरा, कार्तिक पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा तथा चन्द्र [illegible] ग्रहण के अवसर पर यात्रियों की बड़ी भीड़ हो जाती है. क्षिप्रा नदी [illegible] के निकट विन्धायचल से निकली है और प्रायः १५० मील बहकर [illegible] में मिल जाती है.उज्जैन मे क्षिप्रा तट पर अनेक घाट और मंदिर [illegible] हैं. घाटों में नरसिंह घाट, रामघाट, छत्रीघाट, गंगाघाट,पिशाच मो[illegible] एवं गंधर्व तीर्थ अधिक प्रसिद्ध है. ग्रीष्म में इसकी धारा बहुत [illegible] जाती है.

रमेश रोचवानी,उ[illegible]

15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश 21
2004
सिंहस्थ
विक्रम संवत् 2061

एक-परिचय

महाकुम्भ पर्व

प्राचीन काल से ही हमारी महान् भारतीय संस्कृति में तीर्थों के प्रति और उनमें होने वाले पर्व विशेष के प्रति बहुत आदर तथा श्रद्धा भक्ति का अस्तित्व विराजमान है. भारतीय संस्कृति में किसी पुण्य-पर्व, धार्मिक कृत्य, संस्कार, अनुष्ठान तथा पवित्र समारोह और उत्सव आदि के आयोजन मात्र प्रदर्शन, आत्मसन्तुष्टि या मनोरंजन आदि की दृष्टि से नहीं किये जाते, अपितु प्रायः ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों का मुख्य उद्देश्य होता है-आत्मशुद्धि और आत्मकल्याण. इसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठान या पर्वों के आयोजन में भी न केवल परम्परा का अनुपालन, अपितु शास्त्रोमानुमोदित प्राचीन भारतीय (वैदिक) संस्कृति की गरिमा से मण्डित पद्धति के निर्वहन का सुप्रयास भी निहित रहता है.

प्राचीन काल में तत्ववेता ऋषियों द्वारा मोक्ष कामना तथा लोक कल्याण की शुभ भावना से प्रेरित होकर गंगा आदि नदियों के तटों तथा प्रयाग, हरिद्वार आदि पवित्र स्थलों पर ज्ञानसत्र के आयोजन धर्मचर्चा तथा भगवत-लीला श्रवण के प्रसंग एक तरफ जहाँ हमारी आध्यात्मिक परम्परा के द्योतक हैं वहीं दूसरी ओर वर्तमान जगत के लिए प्रेरणादायक भी हैं. ऋषि-महर्षि साधु सन्त, और विद्वत जनों का समागम राष्ट्र की ऐहिक तथा पारलौकिक व्यवस्था पर विचार विमर्श का हेतु था. इससे समाज को नवीन चेतना प्राप्त होती थी. और देश-काल एवं वातावरण पर धार्मिक महत्ता का वर्चस्व भी स्थापित होता था. इस प्रकार इस प्रणाली से भारतीय समाज के विघटन को रोका जाता था साथ ही साथ यह सद्विचारों के प्रसार एवं संगठन की एक स्वस्थ व्यवस्था थी. इसके द्वारा आत्मीयता एवं धार्मिक सौहार्द्र का वातावरण तैयार करने तथा सामाजिक समन्वय एवं अखण्ड राष्ट्र की परिकल्पना को भली भांति साकार करने में सहायता मिलती थी. कुम्भ पर्व सम्बधित वेदों में अनेक महत्वपूर्ण मन्त्र मिलते हैं. जिनमें सिद्ध होता है कि कुम्भ-पर्व अत्यन्त प्राचीन और वैदिक धर्म से ओत प्रोत है.

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्न सिन्धुन्.
बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भगा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः (ऋग्वेद १०/७६/७)

कुम्भ पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं दान होमादि सत्कर्मो के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है जैसे कुठार वन को काट देता है. जिस प्रकार गंगा नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है. उसी प्रकार कुम्भ पर्व मनुष्य के पूर्व संचित कर्मो से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है. नूतन घड़े की तरह बादल को नष्ट भ्रष्टकर संसार में सुवृष्टि प्रदान करता है.

कुम्भी वेद्यां मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषिक्ता (ऋग्वेद)
हे कुम्भ पर्व. तुम यज्ञीय वेदी में आयुधों से घृत द्वारा तृप्त होने के कारण कष्टानुभव मत करो.

युवं नरा स्तुवते पज्रियाय कक्षीवते अरदतं पुरंधिम्.
कारोतराच्छफादस्वस्य वृष्णः शतं कुम्भां असिचतं सुरायाः.
(ऋग्वेद १/११६/७)

कुम्भों वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मित्रंग्रे योन्यां गर्भो अन्तः.
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारउत्सों दुहे न कुम्भी स्वधा पितृभ्यः.
(शुक्ल यजुर्वेद १६/७७)

कुम्भ पर्व सत्कर्म के द्वारा मनुष्य को इहलोक में शारीरिक सुख देने वाला और जन्मान्तरों में उत्कृष्ट सुखों को देने वाला है.

आविशन्कलशः सुतो विश्वा आर्वत्रभिश्रियः, इन्दुरिन्द्राय धीयते.
(सामवेद-पू.६/३)

पुर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामों बहुथा नु सन्तः.
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यंकालं तमाहुः परमे त्योमन.
(अथर्ववेद ११/४३/३)

हे सन्तगण ! पूर्ण कुम्भ बारह वर्ष के बाद आया करता है, अनेक बार प्रयागादि तीर्थो में देखा करते हैं. कुम्भ उस समय को कहते हैं जो महान आकाश में ग्रह-राशि आदि के योग से होता है और भी कहा है.

(क) चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि (अथर्ववेद ४/३४/७)
ब्रह्मा कहते हैं-हे मनुष्यों! मैं तुम्हे ऐहिक तथा आयुष्यिक सुखों को देने वाले चार कुम्भ-पर्वो का निर्माण कर चार स्थानों (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक) में प्रदान करता हूँ.

(ख) कुम्भी का दूषीकाः पीयकान्. (अथर्व १६/६/७)
(गीता प्रेस)

संकलन
नरेश प्रेम प्रकाशी, अमरापुर स्थान, जयपुर

दिल्ली आश्रम का फोन नं. बदला
मल्कागंज प्रेम प्रकाश धाम का फोन. 3942126 के स्थान पर अब 55199138 हो गया है और 23969774 पूर्ववत ही है.

15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश
2004
सिंहस्थ
विक्रम संवत् 2

उज्जयिनी मन्दिर दर्शन

श्री बड़े गणेश जी का मंदिर

महाकालेश्वर के उत्तर द्वार से निकलते ही बड़े गणेश जी का मंदिर दिखाई देने लगता है. गणेश जी की विशाल प्रतिमा,सुन्दर सुडौल होने के साथ-साथ कलात्मक भी है. भारत वर्ष में इतनी सुन्दर व विशाल मूर्ति अन्यत्र नहीं है. इसी मंदिर में पंचमुखी हनुमान, राधा-कृष्ण, राम-लक्ष्मण-सीता,कृष्ण एवं देवी आदि की अनेक मूर्तियां हैं.इस विशाल मंदिर का निर्माण पू. दादा जी (स्व.प्रसिद्ध ज्योतिर्विद पं. सूर्य नारायण व्यास) ने कराया था तथा ज्योतिष संस्कृत आदि विषयों का अध्ययन भी स्व.दादा जी इस मंदिर में कराते रहें हैं.

चौबीस खम्बा

महाकालेश्वर से बाजार की ओर जाते हैं तो निकट ही गुदरी बाजार में यह विशाल द्वार सहज ही दिखाई देता है. मालूम होता है कि यह प्राचीन किसी द्वार का अवशेष है. **सहस्त्रपद विस्तीर्ण महाकाल वनं शुभमृ. द्वार महर्घरत्नाद्यैः चर्वित सोम्यदिगम्भवम** इस पद्य के अनुसार लगता है कि कभी यह महाकाल वन में प्रवेश करने हेतु मुख्य द्वार रहा है. द्वार में २४ खम्बे लगे हुए हैं. इस लिए इसे २४ खम्बा कहते हैं. द्वार के दोनों ओर देवी की मूर्तियां है, जिसका एक लम्बे समय से पूजन होता आ रहा है. व्यतीत काल में यहां पड़ो (भैंसा) की बलि भी दी जाती थी.

मंगलनाथ

अंकपात से कुछ आगे जाने पर महा मंगलेश्वर का सुन्दर मंदिर बना हुआ है. **अवीवदेशोद्भव तथा अवन्त्वांचि कुजोजातो मगधेव हिमांशुनः** अनुसार अवन्ति मंगल की जन्म भूमि मानी गयी है. मंदिर के नीचे क्षिप्रा पर सुन्दर घाट बना हुआ है. प्रति मंगलवार एवं कोजी अमावस्या (मंगलवार युक्त अमावस्या) को यहां दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है. वैशाख की अमावस्या को यहां की यात्रा होती है. यहां से भी पैदल पुल पर से सिद्धवट जा सकते हैं.

गोपाल मंदिर

चौबीस खम्बा से होकर उत्तर की तरफ बढ़ते हुए जब मुख्य बाजार छत्री चौक में पहुंचते हैं तो हमें एक विशाल द्वार वाला मंदिर दिखाई देता है, यही सिंधिया वंश का प्रसिद्ध गोपाल मंदिर है. महारानी वायाजाबाई सिन्धे ने इस द्वारकाधीश मंदिर का निर्माण कराया था. मंदिर का शिखर संगमरमर की कलात्मक खुदाई के साथ बना हुआ है.मंदिर के अन्दर गोपाल कृष्ण, राधिका शिव तथा स्वयं वायजाबाई सिन्धे की प्रतिमा है. यहां की सम्पूर्ण व्यवस्था ग्व स्टेट के धार्मिक ट्रस्ट से की जाती है. मंदिर के अन्दर का द्वार बहुमूल पन्ना का बना हुआ है, कहा जाता है. कि सिंधिया ने गजनी को प्राप्त कर यहां देवार्पण कर दिया था जन्माष्टमीके समय यहां भजन, एवं उत्सव का आयोजन किया जाता है. भगवान गोपाल जी के ही चौक में माधवराव सिंधिया की छत्री बनी हुई है. जो एक सुन्दर ब मध्य स्थित है.

गढ़कालिका

गोपाल मंदिर के सीधे जाकर लगभग डेढ़ मील की दूरी पर नाका बस स्टैण्ड के आगे महाकाली देवी कालका मंदिर है. इस कार को गढ़कालिका के नाम से जानते हैं. शक्ति संग तंत्र अवन्ति संज्ञ कालिका तत्र तिष्ठति देकर कालिका उल्लेख किया है. शहर से दूर ह भी नवरात्रि में दर्शनार्थीयों की भीड़ लगी रहती है, ब्राह्मणों द्वारा पूजन देवी पाठ आदि होते रहते हैं. प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार होक मंदिर नवीन भव्य सभा मं[illegible] के साथ आकर्षक बन गया है. इसी के निकट सड़क पर ही स्थिरमन गणेश का प्राचीन मादेर है. गणेश के समक्ष खेत में प्राचीन हनुमान मंदिर है वहीं निकट ही चतुर्भुज वि सुन्दर मूर्ति है. खेत के मध्य में गर भैरव का स्थान है. गणेश म पगडंडी पर आगे बढ़ते जाने पर क्षिप्रा तट मिलता है.

भर्तृहरि गुफा

कालिका मंदिर से निकल कर उत्तर की ओर लगभग एक की दूरी पर क्षिप्रा नदी के सुनसान किनारे पर एक तपोवन है, जो की गुफा के नाम से जाना जाता है. यह जमीन के भीतर प्राचीन गौरव एवं वैराग्य की साधना को अपने आप में छिपाये है. यहां भर्तृ समाधि है.परम तपस्वी महाराज भर्तृहरि विक्रम के ज्येष्ठ भ्राता थे स्थल के पश्चात् आगे जाकर एक छोटे द्वार से गुफा में प्रवेश करने है, यहीं राजा भर्तृहरि योग साधना एवं तपस्या करते रहे हैं.

काल भैरव

शहर के लगभग १२-१३ किलोमीटर की दूरी पर क्षिप्रा के पश्चिमोत्तर तट पर भैरवगढ़ में काल भैरव का सुन्दर मंदिर है. काले पाषाण में बना हुआ भव्य द्वार देखने योग्य है.मंदिर प्रांगण में ही संकुचित द्वार वाली गुफा है जिसमें भगवान शंकर की प्रतिमा विराजमान है. मार्गशीष में भैरवाष्टमी के रोज यहां पूजन होता है, सवारी निकलती है और दर्शनार्थीयों की भीड़ लग जाती है. मंदिर के पास ही नीचे क्षिप्रा का बहुत सुन्दर बड़ा घाट बना हुआ है. मंदिर की बांयी तरफ कुछ आगे जाकर एक विशाल काफी विस्तृत क्षेत्र में किला बना है, जिसमें आजकल सेन्ट्रल जेल है. जिसके पास से २ मार्ग हैं जो कालियादेह महल और सिद्धवट की तरफ जाते हैं.

मोक्षदायिनी क्षिप्रा

स्कन्दपुराण में क्षिप्रा नदी का बड़ा महत्व बताया गया है. यह मोक्षदायिनी है.यजुर्वेद में उल्लेख है कि शिवजी के द्वारा जो रक्त गिराया गया, वही यहां अपना प्रभाव दिखाते हुए नदी के रूप में प्रवाहित है. ऐसी भी कथा वर्णित है कि विष्णु की अंगुली को शिव के द्वारा काटने पर उसका रक्त गिरकर बहने से यह नदी के रूप में प्रवाहित हुई उज्जयिनी उत्तरवाहिनी होने के कारण यह और भी विशिष्ट है.

अंकपात सांदीपनि आश्रम

नगर के उत्तर में मंगलनाथ आने वाले मार्ग पर सांदीपनि आश्रम भारत की गौरव गाथा का एक स्वर्णिम पृष्ठ है. यही वह स्थल है जहां गीता के अमर गायक योगेश्वर श्रीकृष्ण ने बलराम सहित महर्षि सांदीपनि से शिक्षा दीक्षा ली थी. इसी स्थल पर गौमती कुण्ड है जहाँ भगवान अपनी पट्टी धोया करते थे. इसलिये यह क्षेत्र अंकपात्र नाम से विख्यात है. वल्लभ संप्रदाय के श्री वल्लभचार्य ने भी यहीं आकर श्रीमद् भगवत् का पारायण किया था अतः वल्लभ संप्रदाय के लोगों का यह तीर्थ हो गया है. इसी क्षेत्र में वैरागी साधुओं के बड़े-बड़े अखाड़े बने हुए हैं. सिंहस्थ में रामादल के संत यहीं ठहरते हैं, तथा पश्चिम में श्रीराम जनार्दन मंदिर है.

त्रिवेणी संगम

स्टेशन से लगभग ३११ मील की दूरी पर सांवेर रोड़ पर त्रिवेणी संगम नामक स्थान है. जहां क्षिप्रा-क्षाता का संगम हुआ है. इसे त्रिवेणी संगम के नाम से धर्मप्राण जनता जानती है. लिखा है-

यत्र क्षिप्रासरिच्छष्ट्रा-यत्रक्षातासमा-गता उभभाः संगमोत्रत-मुक्ति नेसंशयः शनियोगे यदा मावै जायते सर्वकामदा तदास्नानंतदादान श्रद्धावैत्तुकारयेत्.

शनैश्चरी अमावस के दिन क्षिप्रा क्षाता संगम पर स्नान दान एवं श्रद्धा करने से मुक्ति प्राप्त होती है. यही संगमेश्वर एवं नवग्रह का मंदिर है. शनि युक्त अमावस को यहां दर्शनार्थीयों की भीड़ लगी रहती है और एक विशाल मेला लग जाता है.

चिंतामणि गणेश

वेधशाला के निकट से ही चिन्तामणि गणेश मंदिर जाने का मार्ग है, यहां रोड़ तथा रेलवे का फलेग स्टेशन होने से दर्शनार्थीयों के लिये आवागमन सुगम हो गया है. रेलवे, बस एवं तांगे से जाया जा सकता है इस स्थान का निर्माण अहिल्याबाई ने करवाया था, चैत्र के प्रत्येक बुधवार को यहां यात्रा लगती है.

सिद्धवट

भैरवगढ़ के निकट क्षिप्रातट पर यह पवित्र एवं ऐतिहासिकस्थल स्थित है. प्रयाग में अक्षयवट, नासिक में पंचवट वृंदावन में वंशीवट तथा गया का जो महत्व है वही उज्जयिनी में सिद्धवट का महत्व है. कर्मकाण्ड (उत्तरकर्म) नागबलि, नारायणबलि आदि के लिये इस स्थान का विशेष फल रहा है.वैशाख शुक्ल १४ चतुर्दशी को यहां मेला लगता है मुगल बादशाहों ने इसके धार्मिक महत्व को नष्ट करने हेतु इसको कटवाकर लोहे के मोटे पत्रे जड़वा दिये थे, किन्तु फिर भी इसमें अंकुर फूट आये थे और आज भी वृक्ष हरा भरा है. यहां पर क्षिप्रा नदी की विस्तृत धारा बहती है. दृश्य बड़ा सुन्दर है, सुन्दर घाट बने हैं तथा यहां से पैदल पुल द्वारा मंगलनाथ मंदिर भी जा सकते हैं.

कालियादेह महल

भैरवगढ़ किले के निकट के मार्ग से इसे देखने हेतु पहुंचा जा सकता है. इस भव्य प्रासाद को कालियादेह महल कहते हैं. अवन्ती महात्म के अनुसार यहां ब्रह्मकुण्ड और सूर्यनारायण मंदिर रहा है. भवन के एक भग्न शिलालेख से ज्ञात होता है कि यह स्थान सन् १४५० में मोहम्मद खिलजी के जमाने में निर्माण किया गया है. महल के समक्ष कलात्मक ढंग से बने हुए ५२ कुण्डों में क्षिप्रा की धारा बहती है.जो एक मनोहर दृश्य उपस्थित कर देती है.

वेधशाला

महाकालेश्वर मंदिर से दक्षिण-पश्चिम लगभग दो फर्लांग की दूरी पर राजा जयसिंह के नाम पर जयसिंहपुरे में उक्त वेधशाला स्थित है. अठारहवीं सदी में जिस समय यहां बादशाह की तरफ से राजा जयसिंह सूबा बनकर रहता था. उसने अपने ज्योतिष प्रेम के कारण इस स्थान का निर्माण करवाया था. यहां सम्राट यंत्र,दिगंशयंत्र,नाडिवलय यंत्र तथा दक्षिणोत्तर भित्तीयंत्र आदि मुख्य हैं. जिससे उज्जयिनी का स्थानीय समय, ग्रहों के दिगंशा ग्रह-नक्षत्रों के दक्षिणोत्तर गमन का समय एवं मध्यान्ह वृत पर जाने के समय का ठीक-ठाक बोध हो जाता है. खगोल संबंधी जानकारी का यही एक मात्र साधन है.

कुंभ मेला मेरी नजर में

कभी-कभी मेरे मन में प्रश्न उठता है. हमारे सनातन धर्म में छोटे-छोटे रस्मों रिवाज में भी, हमारे ऋषि मुनियों ने बडी गहरी भाव प्रक्रिया छुपा रखी है. जैसे-माथे पर तिलक क्यों लगाना चाहिऐ. भृकुटि के बीच के स्थान पर आज्ञा चक्र विद्यमान है और जिनके चक्र खुल चुके हैं साधना से अथवा गुरूकृपा से, उनके आज्ञा चक्र से निरन्तर एक आभा प्रवाहमान होती रहती है और तिलक उस आभा को उस ऊर्जा को ढककर रखता है. तो छोटी-छोटी रोजमर्रा की क्रियाओं में भी बड़े-बड़े गहरे कारण हेतू हैं,

तो ऋषि मुनियों ने कुम्भ मेलों की परम्परा शुरू की, तो जी चाहता है कि जिज्ञासु की दृष्टि से खोजा जाये इन महानदियों के पास, इस कुम्भ पर्व को मनाने के पीछे क्या उद्देश्य है.

आज इन्सान के तार्किक दिमाग मे छुपे प्रश्न जो बहुधा फूट पड़ते हैं. वाटरपार्क के पानी में उछलने कूदने में मनोरंजन ढूढ़ने वाले माँ स्वरूपा महानदियों में नहाने तैरने उछलने कूदने का मजा लेकर मनोरंजन करके लौट आते है. क्या मात्र इतने बड़े महाकुम्भ पर्व रखने का मात्र इतना उद्देश्य था. कि आप नदियों में नहा धो लो, मौज मस्ती करो और लौट आओ. और यह कुम्भपर्व खास नदियों के तट पर ही क्यों रखे गये.

हम लाखों की संख्या में पहुंच जाते है इन मेलों पर क्या वाकई हमें इनका महत्व, इनके पीछे हमारे ऋषियों की प्रेरणा, उनकी अहैतुकी कृपा का पता है. नहीं हरगिज नहीं. हम पिकनिक स्पॉट की तरह ही इन मेलों से घूमकर लौट आते हैं और खुश हो जाते हैं पर कभी गहरी दृष्टि से खोजा ही नहीं अगर खोजा होता तो इन कुम्भ मेलों की और बढ़ते कदमों की भावदशा ही बदल जाती. इन आँखों का दर्शन ही बदल जाता, सोचके देखें, भागीरथ ने इतनी तपस्या की माँ गंगा को स्वर्ग से धरती पर उतारा, क्या मात्र किसी वाटरपार्क के पानी में उछलने कूदने जैसा करने के लिए क्या धरती पर पानी की कमी थी. और फिर महान नदियों के पास ऋषियों मुनियों महापुरूषों का कुम्भपर्व लगाना तो इन नदियों में छप छप स्नान करने मात्र से मोक्ष हासिल होना सम्भव नहीं.

मेला क्या है हमारी दृष्टि... जो परमात्मा से मिले मिलाये ... अपने आत्मस्वरूप से मिल चु... ऐसे महापुरूषों को एक ही जगह मिलाने का उद्देश्य है यह महाकुम्भ ... क्योंकि एक ही जगह पर इतनी महान विभूतियों के मिलने से एक ... मण्डल तैयार होता है. एक ऊर्जा तरंग चारों ओर बहने लगती है जि... लाभ साधकों को साधना में उतरने पर बड़े गहरे ले जाता है, ऐसे में ... स्वरूप नदियां अपनी पूरी पवित्रता ममता और वो ऊर्जा शक्ति ... महापुरूषों ने स्नान करके उन नदियों में उड़ेल दी, जब साधकगण ... श्रद्धालुजन स्नान करते हैं तब ये सारी शक्तिपुन्ज माँ उनमें उड़ेल देती ... ये सारा कार्य चुपचाप बिना किसी शोर और विज्ञापन के होता है और ... पवित्र ममतामयी मोक्षदायिनी नदियों में स्नान कर जब साधक उस न... के तट पर उस प्रभु परमात्मा के ध्यान में मग्न हो जाते हैं. तब चारों ... से प्रकृति वायु मण्डल जैसे उनके ऊपर बरसने को तैयार हो जाता है. ... साधकों का सहयोगी हो जाता है.

प्रभु मिलन की बेला ही तो कुम्भ मेला है. जितने भी अवतार ... हैं सबने इन माँ स्वरूप नदियों को इतनी आत्मीयता से प्यार किया है, इ... सम्मान किया है. भगवान श्री कृष्ण का जमुना जी से प्रेम , श्री चै... महाप्रभु का माँ गंगा से प्रेम, आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज का ... नदी से प्रेम, सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द महाराज का माँ गंगा से प्रेम अ... प्रमाण भरे पड़े हैं शास्त्रों में. इतना गहरा रिश्ता है इन महान नदियों ... इनकी गोद में स्नान करना क्या मात्र स्नान है नहीं मेरा मन नहीं मा... जो इन अमृतमयी सुधा स्वरूप नदियों में पूरी भावना से डुबकी लगा... आत्म विभोर होकर माँ की गोद में उतरते हैं जो अपनी प्रार्थना पूर्ण अ... के मोती इन पर चढ़ाते हैं जो भावों के पुष्पों और श्रद्धा की आँख से ... दर्शन करते हैं, जो अपने तार्किक और नास्तिक, कठोरता का नारियल ... देते हैं और इन महान नदियों के संगम तट पर साधना का दीपक ... जलाये रखते हैं. वो ही कुम्भपर्व के अन्तस में छिपे उस अमृतकलश ... अमृत बटोर लाते हैं तो इस बार हमारा कुम्भपर्व जाने का ध्येय ... मनोरंजन न हो हमें पूरा लाभ मिले, हमारा सौभाग्य हमारा आनंद ... साधना और बढ़े, इसी प्रार्थना और उद्देश्य के साथ हम कुम्भ मेले में ...

राधा ठारानी,ग्वालि...



मुम्बई मेला



बाटापारा यात्रा दर्शन

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित नेत्र चिकित्सा शिविर



प्रेम प्रकाश आश्रम मुरैना का उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारो



आश्रम का उद्घाटन करते हुए सद्गुरु महाराज जी



आचार्य श्री का माल्यार्पण करते सद्गुरु महाराज जी



उद्घाटन के अवसर पर बनाया गया भव्य

22 से 26 फरवरी 200



भगवान लक्ष्मी नारायण दर्शन





आचार्य सद्गुरु स्वामी टेउं
जी महाराज दर्शन



सद्गुरु महाराज जी अभिनन्दन करते हुए संत प्रतापराय जी



हवन करते हुए सद्गुरु महाराज जी व संत मण्डल



हवन की पूर्ण आहुति



प्रतिष्ठाता अन्नाधिवास



आश्रम का भव्य सत्संग मण्डप–सत्संग करते हुए संतगण



ब्राहम्ण मण्डल सेवा करते हुए सद्गुरु

प्रेम प्रकाश आश्रम मुरैना का उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह







शोभा यात्रा में संकीर्तन की मौज







स्वामी ब्रह्मानंद जी व सद्‌गुरु महाराज जी

यात्रा





नवनिर्मित श्री प्रेमप्रकाश आश्रम गोदिया

दर्शन





डबरा में प्रेमप्रकाश आश्रम के उद्‌घाटन समारोह पर सद्‌गुरु महाराज जी



नवनिर्मित प्रेमप्रकाश आश्रम डबरा





कम्प्यूटर सेन्टर का उद्‌घाटन करते हुए सद्‌गुरु महाराज जी व स्वामी जयदेव जी



हवन में आहुति देते हुए संत मण्डल

कुंभ मेले में संत महापुरूषों का संग

अविस्मरणीय स्मृतियाँ

आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज जी की अगाध कृपा से उज्जैन नगरी के कुम्भ मेले में प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र (छावनी) का आयोजन होने जा रहा है. जिसमें हजारों-लाखों भक्तों का आगमन हो रहा है. एक बार फिर एक ऐसे मेले का दर्शन होगा जिसमें सभी प्रेम प्रकाशी एक बार फिर एक स्थान पर एकत्रित होकर उस कृष्ण की अदाओं के मस्ताने होंगे. सभी प्रेमी एक दूसरे के हृदयों को छुऐंगे और इन्हीं प्रेमियों में कोई राधा बनने की कोशिश करेगा, तो कोई मंजरी के भावों को छूने की चेष्टा करेगा. सभी प्रेमी भिन्न-भिन्न तरीके से प्रभुकृपा के पात्र बनेंगे.

सभी संतो-महापुरूषों, प्रेमियों, विद्वानों, भावुकों का एक साथ मिलन और उस दयानिधि प्रियतम की पल-पल बरस रही कृपा की हर दिल में अनुभूति, हर दिल में एक ही प्रेमधारा का संचार और हरजन के मन से यही अहोभाव प्रस्फुटित होंगे.

कीचड़ से पाप मेरे, दुर्गन्ध से भरा हूँ
फिर भी गले लगाया,
ये करम नहीं तो क्या है. हमें आपने बुलाया,
ये करम नहीं तो क्या है चरणों में है बिठाया,
ये करम नहीं तो क्या है

वेसे तो इस अभागे मन में संसार के अलावा कुछ सूझता ही नहीं, परन्तु उसकी करूणा अगाध है. हम उनके बच्चे हैं.

बस एकबार कहने भर से ही वो हम जैसे नालायकों की कितनी संभार करते हैं. हमारा हर तरीके से कितना ध्यान रखते हैं. इस अलौकिक अनुभूति को बयान करना तो हमारे वश की बात नहीं.

एक संत लिखते हैं. कि यदि विश्व के समस्त समुद्रों को स्याही बनाकर और सम्पूर्ण भू-मंडल को कागज बनाकर भी यदि उनकी महिमा का लेखन-कार्य किया जाये तब भी उनकी महिमा का पार नहीं पा सकते.

सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की अनंतानंत कृपा हम प्रेम-प्रकाशियों के ऊपर हर क्षण बरस रही है. यह महसूस करने में अभाव है तो हमारे अंदर. संसार भर के सैकड़ों कार्यों के बीच जहां हमें परमात्मा की याद भी नहीं रहती. परंतु संत महापुरूष अपने दयालु स्वभाव के कारण अपने बच्चों को खाली छोड़ना भी तो नहीं चाहते. उन्होंनें तो परम आनंद को प्राप्त करके अपने जीवन का उद्धार कर लिया है. अब वे इसी तरह मेलों के रूप में सेवा-सत्संग-सुमरन एवं स्वसानिध्यता से उस आनंद की अनुभूति कराके हमें भी सत्मार्ग पर चलाकर उस प्यारे से मिलाना चाहते हैं. जैसे- चारों तरफ पहाड़ फैले हुए हैं, मेघ खूब गरज रहे हैं, खूब बरस रहे हैं. चारों तरफ अति सुंदर प्रकृति की छटा छायी हुयी है. और झरने अपने शीतल और सुमधुर संगीत से मनमोहित कर रहे हैं. मन तो ऐसा करता है. इसी तरह हमारा जीवन भी हो जाये तो डूब जायें, मिट जायें इन झरनों में. अर्थात् चारों और गुरू भक्तों, भगवत् दीवानों के मोहन के प्रेमियों की अद्भुत भीड़ फैली हुयी है. इन नैनों से उस मस्तानों को देखते ही एक अजीब सी तृप्ति की अनुभूति हो रही है. गुरूदेव अपने सानिध्य में अपनी सत्संग वर्षा रूपी मुरली वजाते हुए अद्भुत रस कानों में घोले जा रहे हैं. और अपने दोनों हाथों से भर-भर आशीर्वाद के प्याले वो प्रेम के जाम हमें पिला रहे हैं.

सभी कोनों में सिर्फ उन्हीं का कई रूपों में अद्भुत दीदार छाया हुआ है. आहा क्या मस्ती है, क्या खुमारी है इसी खुमारी से भरपूर पिछले कुंभ की एक अद्भुत स्मृति के स्मरण से हृदय बड़ा गद्गद् हुआ जा रहा है. जिसका प्रभु प्रेरित वर्णन इस प्रकार से है-

ऐसे ही एक कुंभ मेले में परम पूज्य गुरूदेव के सानिध्य में एकबार प्रभु श्री रामजी के किसी मन्दिर में जाना हुआ. वहां गुरूदेव ने अपनी मधुर व ओजस्वी वाणी से एक भजन गाया और ऐसा आनंद छाया कि सभी लोग एकाएक मंत्रमुग्ध हो गये. उसके बाद गुरूदेव ने वहां उपस्थित सभी प्रेमियों के मस्तक पर अपने पवित्र कर कमलों द्वारा चंदन का टीका लगाया और सभी कृत-कृत्य होते हुए बाहर आते गये. यह दृश्य देखते हुए मैं भी बड़ी आनंदित हो रही थी. गुरूदेव अपने हाथों से टीका लगाकर सभी के मस्तक को सुशोभित कर रहे थे और यही सब देखती हुयी मैं मन ही मन बड़ी आनंदित हो रही थी. इसी बीच किसी दास ने गुरूदेव को भी टीका लगाया. परन्तु न जाने क्यूं गुरूदेव ने मुझे तो टीका नहीं लगाया. तब मेरी एक सखी ने (जिसे गुरूदेव ने तिलक लगाया था) अपने माथे का थोड़ा-सा चन्दन मेरे माथे पर लगा दिया और मैं बहुत खुश हुयी. बार-बार ऐसा लग रहा था, देखो गुरूदेव कितने दयालु हैं. जो सभी प्रेमियों को अपने हाथों से टीका लगाया, परंतु मुझे अपने प्रेमियों से लगवाया अर्थात् उन्होंने अपने प्रेमियों में से सबसे आखिरी वाला दर्जा मुझे दिया. मुझ गुनहगार को सबसे आखिरी का ही सही पर स्वीकार तो किया. धन्यभाग हुए आज मेरे जो उन्होंने मुझे अपने स्पर्शात्मक टीके के लायक समझा. यही सब सोचते हुए उन्हें धन्यवाद दिये जा रहे थे और सभी बाहर आ गये. तत्पश्चात् बाहर एक कुर्सी पर गुरूदेव विराजित हुये. प्रेमियों ने विनय की कि स्वामीजी सेवा का मौका दें ओर कुछ जलपान करें. परंतु स्वामीजी ने ऐसी आज्ञा की कि आश्रम पर भोजन तैयार है, अब भोजन

पायेगें और प्रेमियों से कहा कि राम मंदिर के जिसने भी दर्शन नहीं किये. वे दर्शनार्थ वहां जाकर चंदन का तिलक लगाकर आयें. तो कुछ प्रेमियों को चंदन के टीके की बात समझ में नहीं आयी. उन्होंने गुरूदेव से पुनः पूछा तो गुरूदेव ने सहज ही मेरी तरफ संकेत करते हुए कहा कि जैसा मैंने (समता) को लगाया है. मैं तो बड़ी विस्मता में पड़ गयी. मन में सोचा कि गुरूदेव ने तो मुझे टीका लगाया ही नहीं है और वो मेरी तरफ इशारा करते हुए ऐसा कह रहे हैं. मैं नादान उनके इस राज को समझ न सकी.

तभी अचानक उन्होंने मुझसे पूछ ही लिया कि समता-तुझे टीका मैंने लगाया था न ? तो मैंने कहा-कि हां सांई, ये आपके ही पावन स्पर्श से परिपूर्ण है. पर आपने मुझे अपने हाथों से नहीं लगाया.

यह सुनकर वे करूणेश्वर स्वयं खड़े हुए और उन्होंने अपने माथे का टीका अपने ही हाथों से उतारकर मेरे माथे पर लगा दिया और मैं आश्चर्यचकित हुयी स्तब्ध खड़ी रह गयी। ज्यों की त्यों बांवरी सी उन्हीं की ओर एकटक निहारने लगी और वो भी बड़ी मीठी-मीठी नजरों से निहारते हुए मुस्कराने लगे. और भीग गया मेरा ये मन, हो गया रोंमाच तन पुलकित हुआ, कंठ गद्‌गद् और ह्दय हर्षित हुआ.

नित्य सुख नस-नस समाया, रो दिये हम रो ...
जब हुयी सत्‌गुरू की दाया, रो दिये हम रो ...

और बड़ी भोली अदा से मुझसे कहने लगे कि अब तो तू ... है न. परन्तु वो घड़ी तो (खुश) शब्द से कोसों पार जा चुकी थी औ... बस मुस्करा ही दी. वो क्षण आज भी यदि कभी याद आता है. तो उ... वो मोहिनी मुस्कान, वो मंदिर, वो चंदन का टीका. मन किसी दूसरी दुनिया में खो जाता है. जिसका वर्णन इस लेखनी से तो कभी हो ही ... सकता. ये तो सुहावनी घड़ियां सिर्फ अनुभव ही की जा सकती हैं और ... अनुभव सिर्फ एक शिष्य को ही हो सकता है. पूर्ण गुरूकृपा के साथ ... गुरूभक्त को ही मिल सकता है ऐसा आनंद. वो ही गोपियां ले सकती उस महारास का महाआनंद, जिसे कृष्ण ने छलकाया है और ... महाआनंद रूपी झरने में दिल करता है कि बस अब डूब ही जायें, ... मिट भी जायें, अब मर जायें.

सारा जीवन ही कुर्बान बलिहार जाऊँ अपने प्रियतम पर जो ... की बरसात, क्या करेंगे ऐसे अधूरे-अधूरे जी कर के.

जहां कभी संसार चाहिये, कभी पैसा चाहिये, कभी पति चा... तो कभी सन्तान चाहिये. अब सभी इच्छाओं का त्याग केवल उसी ... शरण हो जाएं, केवल उसी की ओट लें केवल उसी का ले आधार, हो ... से बेड़ा पार.

उज्जैन (कुंभ) से यही प्रार्थना यही पु...
समता, ग्वालियर

क्या कुम्भ स्नान से मोक्ष प्राप्त होता है

कुम्भ काल एक पवित्र समय है लेकिन हमें क्या कुम्भ स्नान से मोक्ष प्राप्त होगा? यह धारणा हमारे मन में है ... गलत है. अगर हमारे मन में कई पाप विराजमान हैं हमारी इन्द्रिया सांसारिक सुख में लिप्त हैं. हमें हमारे पूर्व के कई ... वर्तमान में किये हुए हिसाब चुकाने हैं तो मोक्ष कहां से प्राप्त होगा. हमारे द्वारा किए हुए छल कपट ठगी चोरी हमें सद... नजर आती है भले ही हम संसार के सामने दानवीर,धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति बने रहें लेकिन परमात्मा सब कुछ जा... है. परन्तु अपने अहं के कारण हम स्वीकार नहीं करते.

कुम्भ में जाने से फायदा होता है सन्तों सत्पुरूषों से मिलन, कुम्भ का मतलब होता है सन्तों से समागम. कुम्भ ... पर कई सच्चे संत महात्मा, नागा संत, महंत अनेक अनजाने (जिनको हम नहीं जानते) महामण्डलेश्वर, महंत आते हैं जि... दर्शन मात्र से सच्चा सुख मन की शान्ति प्राप्त होती है उनके दर्शन होते हैं. उनके प्रवचन सुनते हैं जितना भी समय हम ... उनके साथ बीतता है उतना पुण्य फल हमें प्राप्त होता है. स्नान का पुण्य तो होता ही है जिस तरह हमारे रिश्ते... अलग-अलग जगह पर बसे होते हैं. लेकिन किसी एक की शादी में हमें सभी रिश्तेदारों के दर्शन होते हैं उसी तरह कु... पर्व पर हमें अनेक संतों के दर्शन एक ही जगह हो जाते हैं उनसे हम धन्य होते हैं.

ऐसा नहीं है कुम्भ स्नान का महत्व नहीं है. हम स्नान के महत्व को नकार नहीं सकते परन्तु कुम्भ स्नान के ... अगर किसी एक भी सच्चे साधु के दर्शन हो गए तो जीवन धन्य समझो. साधु का मतलब है मार्गदर्शन अगर हमारी अ... किसी संत के उपदेश को ह्रदय से आत्मसात करे तो समझो हमारा जीवन सार्थक हो गया.

हमारा जीवन भी एक बैंक के खाते की तरह है जितना भी जमा करोगे वो बचत हो जायेगी जब हमारे पाप ... निशेष होंगे और पुण्य फल अर्जित होंगे तो मोक्ष की बात तो बाद में आती है.

लालचंद रोहिरा, ग्वालियर

कुंभ मेले में मुझे क्या मिला

स्मृति एक सखी की

सच बताऊँ तो मैं जाना ही नहीं चाहती थी. कुम्भ मेले में हालांकि मैं भी एक साधक हूं. पर मेरा विश्वास डगमगा रहा था मुझे लगता था. जो भगवान के रास्ते चलते हैं. उन्हे कोई कष्ट दुख नहीं आते हैं. परमात्मा अपने भक्तों के दुख हर लेते हैं पर मेरे जीवन में यकायक परिस्थितियाँ इतनी बदलती जा रही थी. दिनों दिन बिगडती जा रही थी. कि यहाँ लिखने बैठूँ तो आधी पत्रिका यूँ ही भर जाये. मैं रोज प्रार्थना करती पर कोई फायदा नहीं धीरे-धीरे मेरा विश्वास टूटने लगा. लगता था सब व्यर्थ है. कहने की बातें. वो करूणावान है भक्तों के कष्ट देख नहीं सकता, प्रार्थना से बड़ी से बड़ी बात पूरी हो सकती हैं. फिर मेरी उलझने सुलझती क्यों नहीं है इसलिए मेरा मन हमेशा बैचेन रहता. मैं चिड़चिड़ी और उदास रहने लगी थी. मेरी सारी सखियाँ कुम्भ मेले जा रही थी और वो सबकी सब मेरे पीछे पड़ गईं,. तुम भी साथ चलो. मैंने बहुत बहाने कर टाल मटोल की. पर सबने मेरे को मना लिया और मेरी एक न चली और मेरा कुम्भ मेला जाना निश्चित हो गया.

हम सब कुम्भ मेले में पहुंचे. सतों की टोलियाँ तपस्वियों वैरागियों के दर्शन कीर्तन करते हुये साधुजन, प्रसाद मालाओं की दुकानें चारो और अगरबत्ती धूप की खुशबू बीच-बीच में आरती शंखनाद जयकारों की आवाजां में सब कुछ थोडी देर के लिऐ भूल ही गई. मेरा मन प्रफुल्लित और शांत हो गया. हम सब नाचते मस्ताते अपने रहने के स्थान पर पहुँचे हम सब बहुत खुश थे. जल्दी से कपड़े उठाये और माँ गंगा की गोद में स्नान करने चले.मां गंगा का स्पर्श पाते ही मेरी आखों से अश्रु जल छलकने लगा और माँ गंगा में अश्रुकण विलीन होते जा रहे थे. फिर हमने श्री गुरू महाराजजी के दिव्य दर्शन किये. विग्रह स्वरूपों की नूरानी छवि दर्शनों की छाप दिल में उतर गई. भोजनादि करने के बाद शाम के प्रवच नों का समय हुआ, मैं सब सखियों के साथ वहाँ गई प्रसंग चल रहा था. सच्चा गुरू क्या करता है?सच्चा सदगुरू परिस्थितियाँ नहीं बदलता. सच्चा गुरू मन की स्थिति बदल देता है. एक व्यक्ति के जीवन में अपने अपने कर्मानुसार न जाने कितनी परिस्थितियाँ बदलती हैं. शारीरिक, मानसिक आदि कई तरीकेकें क्लेश होते हैं. समझलो एक सदगुरू के २० हजार शिष्य हो और एक शिष्य के जीवन में १०० घटनायें तो ऐसी घटती होगी. जो वह कभी नहीं चाहता धन की हानि, बच्चा न होना, कोई बड़ी बीमारी किसी से दुश्मनी आदि और सारे शिष्य ही यही चाहते हैं. गुरू महाराज हमारी सुने हमारे दुख दूर करें. अब इतने सारे शिष्य अपने और एक सद्गुरू सांसारिक इच्छाओं और प्रपंचों का ही निपटारा करता रहे तो साधना सुमरन योग लक्ष्य की प्राप्ति ये सब कब होगा. तो गुरु परिस्थिति नहीं मन, की स्थिति को बदलने की प्रेरणा और शिक्षा देते हैं परिस्थितियाँ तो पांडवों के जीवन में क्या कम आईं, भगवान कृष्ण परिस्थितियाँ बदलने में क्या कम समर्थ थे. फिर कितनी परिस्थितियां बदली जो उत्तरा के पेट में परीक्षित को बचा सकते हैं तो द्रोपदी के पाँच पुत्रों की एक साथ मृत्यु हो गई उन्हें नहीं बचाया.

भगवान कृष्ण के स्वयं का पूरा यादव कुल एक योगी के श्राप से नष्ट हो गया दस लाख पुत्र एक साथ मृत्यु को प्राप्त हुये. उन्हें नहीं बचाया, स्वयं भगवान होकर राम ने भी तो बनवास भोगा, चौदह साल पत्नी को भी जंगल में भटकाया. परिस्थितियाँ नहीं बदली पर मन की स्थिति बदल दी. बाहर ज्ञानी अन्दर से निर्लिप्त होकर सारी क्रियाएं करते हैं. सो परिस्थितियाँ सदगुरू से भगवान से कितनी बदलवाओगे, सच्चे सदगुरू का सानिध्य पाकर मन की स्थिति ही बदल दो. मन की स्थिति बदलते ही सारी परिस्थितियाँ परमात्मा की लीला नजर आने लगती है. प्रार्थना वही पूरी होती है. जिसमें हमारा सच्चा हित छिपा हो पारमार्थिक हित छिपा हो।

बस प्रवचनों का एक-एक शब्द मेरे अन्दर समाता चला गया. मैं धन्यवाद से अहोभाव से भरती चली गई मेरे अन्दर की सारी कल्मष सारी अज्ञानता धुल गई. मैं रोती जा रही थी, रोती जा रही थी तभी मैंने महसूस किया कि मुझे देखकर सामने श्री गुरूमहाराज अपने विग्रह स्वरूपों से बड़े प्यार से मुझे देखकर मुस्करा रहे थे और प्रवचन समाप्त होने पर जैसे ही उठी. इतनी भीगी हुई आनन्दित इतनी हल्की, जैसे जेठ की गर्मी की झुलसन से निकलकर सावन की पहली बारिश में भीग कर निकल आई हो. मेरे सोचने का ढ़ंग बदल गया और मैं नयी विचारधारा के साथ जीने लगी. ये कुम्भ मेला ही था. जहाँ मेरा सच्चे ज्ञान से मिलन हुआ.

सेवा में– राधा ठारानी, ग्वालियर

सिंहस्थ 2004
विक्रम संवत् 2061

कुंभ मेले में क्या कुंभ स्नान से ही मोक्ष संभव

गुरू महाराज के परम पावन, सुकोमल श्री चरणों में अनंत-अनंत वन्दना करते हुए इस प्यारे से लेख की शुरूआत करते हुए अपने भाग्य को उनकी कृपानुसार रोशन कर रही हूं.

हमारा परम पवित्र प्राण प्यारा सनातन धर्म, जो कि उत्सवों की खान है. उसी खान में से परम पिता की अगाध कृपा से एक हीरा और निकलने जा रहा है. जिसके चमत्कारिक उजाले की चमक ५ अप्रैल से ४ मई तक सम्पूर्ण उज्जैन में रोशन होने जा रही है.

जिसमें अनगिनत सन्त, सिद्धेश्वर, योगेश्वर, मण्डलेश्वर, विद्वान, साधु, सेवाधारी, प्रेमी और हजारों की तादाद में प्रियतम के प्यारे बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं और इस क्षिप्रा नदी के तट पर अपने छोटे-छोटे श्रद्धा सुमन अपिंतकर अनका आशीर्वाद प्राप्तकर प्रेम की पराकाष्टाओं के शिखर को छूने जा रहे हैं. और प्राप्त करने जा रहे हैं-

महाउल्लास को प्राप्त करने की कुंजी.

वास्तव में हमारे जीवन का लक्ष्य यही होना चाहिये. क्योंकि जिन्दगी के इस सफर में हमने महापुरूषों के दर्शन तो बहुत किये होंगे. सेवाएं भी बहुत की होंगी. सत्संग भी खूब सुने होंगे और भी कई सुन्दर आनन्दित क्षण गुरूदेव की छत्रछाया में हमने खूब गुजारे होंगे. परन्तु इन सबके पीछे जो परम शांति की खोज है. जिसे पाकर के हम संसार के ज्वलंत कोप से मुक्त होना चाहते हैं. उस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हम जाते तो हमेशा हैं. परन्तु उसे प्राप्त किये बगैर ही लौट आते हैं.

हम जाते है, कोशिश भी करते हैं. हजारों में से एक-आध के कुछ कदम भी बढ़ते हैं. पर प्राप्त करने से हमेशा चूक ही जाते हैं. और इस अप्राप्ति का मुख्य कारण है. जिसे प्रभु के प्यारों ने बार-बार दोहराया है कि **हम गुरू को तो मानते हैं, मगर गुरू की नहीं मानते हैं**. सुनेंगे सभी की पर करते वही हैं जो हमारा मन हमसे कहता है आखिर मन के नौकर जो ठहरे.

और जिस दिन हमने उस पर विजय प्राप्त कर ली, उसी दिन उसी क्षण उसी घड़ी में हमारा उद्धार न हो यह असंभव है. प्रत्येक व्यक्ति खोज में अंधी दौड़ के दौरान भागा जा रहा है. आम आदमी सोचता है शायद वो सुख पैसे में मिल जाये, प्रेमिका सोचती है शायद प्रेमी में मिल जाये. परंतु यह सब सोचकर अपने दिल को मिथ्या तसल्ली में रखकर हम जरूर सुख पा सकते हैं, मगर सच्चाई को नहीं जान सकते .

कुछ लोग सोचते हैं कि इसी तरह शायद कुंभों के स्नान से सुकून मिल जाये. ऐसे सुकून और शांति हमें तीर्थों पर मिलते हैं और मिलेंगे भी क्यों नहीं. क्योंकि उस स्थान विशेष का अपना एक अलग प्रभाव होता है. मगर याद रखें यह उस स्थान का प्रभाव है. यह अपनी अनुभूति नहीं है और जब तक अपना निजी अनुभव नहीं हुआ तब तक ये सारे कुंभ के आनंद, तीर्थों के स्नान, संतो का सानिध्य तभी तक आनंददेय है. जब तक हम वहां हैं ये सारे आनंद क्षणिकमात्र है. सच्चा आनंद असली अनुभूति जहां भी जैसे भी हमें हो वो ही कुंभ है और सबसे महान महत्व है अपनी श्रद्धा का, अपनी कोशिश का, अपनी अपने आप पर कृपा का.

जहां हमने अपने आप को पूर्ण-पूर्ण संपूर्ण तरीके से दांव पर लगाया बस वहीं पर मंजिल को पाया. वहीं परमात्मा को अपने नजदीक पाया. वहीं प्रेम की पराकाष्ठा को अपने अंतस में पाया. इस कुंभ में हम जा तो रहे हैं. मगर पूरी-पूरी तैयारी के साथ जायें. कि इस बार तो अपने आप को मिटाकर ही वापिस आना है. उज्जैन = उच्च जय अर्थात् मोक्ष प्रदायिनी, संत समागम, क्षिप्रा नदी, पूर्ण गुरू का सानिध्य, महाकुंभ पर्व सभी प्रेमियों का परस्पर हार्दिक मिलन.

पूरे गुरू का सुन उपदेश, पारब्रह्म निकट कर पेख
हर जगह से बह रही है वो कृपा जो जहां से भी ले
पड़ा कुंभ का दरिया, नहा लो जिसका जी चाहे

हर तरफ से वो मस्ती बरस रही है. बस देर है तो हमें झोलियां फैलाएं और भर जाएं. यही तो वह रास्ता है. जहां से होने वाला है-दिलबर का दीदार. अरे-यहां नहीं मिटेंगे तो कहां मिटेंगे.

हम सभी उसकी पूर्ण शरणागत होकर रहें हम सभी साधकों पर वह जरूर बरसेगा. क्योंकि ये उसी का वादा है कि-

तुम पग चलते एक जो मैं पग चलता साठ और जिस हीरे का जिक्र शुरूआत में हुआ है उसी कुंभ रूपी हीरे से हम इतने रोशन हो जाएं कि जब उज्जैन से लौटें तो संपूर्ण संसार में हमारे अंदर से परमात्मा की अद्‌भुत छवि जगमगाए. हमारे गुरूदेव की सारी मेहनत सारी उम्मीदें पूरी हो प्रत्येक प्रेम प्रकाशी के अंतःकरण में बैठे हुए उस परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि मुझे भी ऐसा आशीर्वाद दें. जो मैं भी इस महाकुंभ के महाआनंद में सराबोर होकर अपने भाग्यों को उदितकर इस मानव जीवन को सफल कर सकूं. उसी विनय के साथ-

कुंभामृत की प्यासी
समता, ग्वालियर

कुंभ मेले में किन से बचें

सावधानियाँ

अक्सर देखा गया हैं. माताओं और बहनों का हदय बहुत सरल और कोमल होता है वे बहुत जल्दी दूसरों पर विश्वास कर लेती हैं. बिना सोचे समझे फैसला ले लेती हैं.

जहाँ ऐसे कुम्भपर्वो में सच्चें सन्तों, तपस्वियों, महापुरूषों की कोई कमी नहीं है. पर सिक्के का दूसरा पहलू भी है. वहीं ढोंगी, चालाक, धूर्तो की भी कोई कमी नहीं है. जिनका भेष तो साधुओं का होता है, जिनकी जबान पर तो रामनाम होता है पर इनकी गिद्ध दृष्टि सिर्फ अपना उल्लू सीधा करने में लगी होती है और ऐसे लोग महिलाओं की सरलता का फायदा उठाकर दान पुण्य के बहाने परिवार की रक्षा का लालच देकर, कुछ चमत्कार सिद्धियाँ, दिखाकर सब कुछ लूटके चले जाते हैं सो विशेषकर महिलाएं कुछ सावधानियाँ ध्यान में रखें.

१. अकेले में कभी किसी साधु संत से ना मिलें, अनजान व्यक्तियों के साथ रिश्ता न रखें बहुत कीमती वस्त्र पहनकर या जेवर लादकर मेले न जावें.

२. किसी भी चमत्कार या सिद्धी को देखकर लालच में न आवें. अगर मेले में ज्यादा दिन रहने का इरादा हो तो परिवार के किसी पुरूष को साथ जरूर ले जायें, अकेले कभी न घूमें, समूह के साथ जायें. चटोरेपन से बचें, बोलने की आदत कहना तो गलत है, शायद बीमारी होती है इस बीमारी को मौन की दवा दें. कम से कम बोलें.

३. बहुत छोटे बच्चों वाली महिलायें न जायें. पवित्र नदियों के तट पर मलमूत्र न करें, बच्चों का विशेष ध्यान रखें, नदियों के तट पर कपड़े न धोयें, उन्हें दूषित न करें

कुम्भ मेले में ज्यादा से ज्यादा क्या करें

१. जितना हो सके सेवा करें, नित्य कुछ करने का संकल्प करें और उसे पूरा करें. मालिक बनकर नहीं धनवान बनकर नहीं सेवादारी बनकर रहें.

२. मैं साधक हूं इस भाव से रहें, ज्यादा से ज्यादा बुजुर्गों का सहयोग करें, पवित्र नदियों के आगे जो भी किया जाये वह अनन्त गुना होकर फलीभूत होता है इसलिए निन्दा, चोरी, चुगली, भूलकर भी इन तीर्थो पर न करें. ध्यान, सुमरन, भजन, कीर्तन शास्त्र अध्ययन प्रार्थना आदि ज्यादा से ज्यादा करें, क्योंकि यह अनन्त गुना होकर फलीभूत होकर हमें साधना में अग्रणी बना देगा.

३. महापुरूषों का सानिध्य प्रवचन का पूरा-पूरा लाभ लें. शुभ मौके बिल्कुल न चूकें. तीर्थों पर दान-पुण्य अवश्य करें. किसी के भी अवगुण न देखें. व्यर्थ की अफवाहों पर न चर्चा करें न ध्यान दें, सदैव अपने साथ टार्च कॉपी पेन रखें. अमृत वेले उठें.

४. समय मिलने पर अपने भक्तिमय पलों को अविस्मरणीय प्रसंगों को रात को सोने से पहले जरूर लिख लें. कानून व्यवस्था के नियम कभी न तोड़ें न किसी को तोड़ने दें.

५. जितना हो सके सादा भोजन खाये. नींद भी कम आयेगी और भजन सुमरन में भी बाधा नहीं पड़ेगी. हमारी जो भी बुरी आदते हैं वो छूट जायें, उसका संकल्प लेकर और आशीर्वाद लेकर आयें. हमें पूरा विश्वास है, आप अपनी गलत आदतों से जरूर मुक्त हो जायेगें.

आप और हम इस मेले से भरकर लौटें, अपार गुणों से पूर्ण होकर लौटें. इसी आशा और प्रार्थना के साथ.

सेवा में– राधा ठारानी, ग्वालियर

प्रेम प्रकाश आश्रम भोपतवाला हरिद्वार आने वाले यात्रियों के लिए सूचना

१. हरिद्वार आश्रम में आने से पूर्व आप जिस शहर के हों वहां के आश्रम से चिट्ठी पत्र अवश्य लावें.

२. यात्री आश्रम में ३-४ दिन रह सकता है.

३. प्रत्येक व्यक्ति को प्रातः व सांयकाल सत्संग आरती में भाग लेना व रात्रि ६ बजे से पूर्व अन्दर आना अनिवार्य है.

४. आश्रम में नशेदार वस्तु का सेवन करना व मांस-मच्छी-शराब आदि वर्जित हैं.

५. आश्रम पर ठहरने वाले यात्री भोजन व चाय समय पर (घंटी पर) उपस्थित होकर लेना चाहिए.

६. यात्री जाते समय आश्रम के व्यवस्थापक से मिलकर जावें.

७. यात्री कमरा खाली करते समय सफाई (सेवा कार्य) का विशेष ध्यान दें. नियमानुसार चलने वाले प्रेमी ही आश्रम पर रह सकेंगे.

प्रेम प्रकाश आश्रम भोपतवाला हरिद्वार

15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश
2004
सिंहस्थ
विक्रम संवत् 20

श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र छावनी

सिंहस्थ साधु संतों के समागम और पवित्र नदियों मे स्नान का पर्व मात्र नहीं है यह साधु और समाज के संबधो को साकार करने वाला एक ऐसा पर्व है जो इस बात की ओर इशारा करता है कि हमारी जड़ें सनातन संस्कृति से जुड़ी हुई हैं. कहा जाता है कि यदि कोई उज्जैन में चावल का थैला लेकर निकले और एक-एक दाना भी एक एक मंदिर पर चढ़ाऐ तो थैला खत्म हो जाऐगा. फिर भी मंदिर शेष रह जायेंगे. उज्जैन पृथ्वी का नामि स्थल है उज्जैन के सिंहस्थ में पाँच प्रमुख गतिविधियां है (१) कल्पवास (२) संत दर्शन (३) सत्संग (४) स्नान (५) पर्यटन सिंहस्थ ही ऐसा अवसर है जहां सभी प्राप्त होते हैं. श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने प्रेमियों के लिये सन् १९२६ में प्रथम बार सिन्ध प्रदेश से आकर कुम्भ में छावनी लगायी तब से आज तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डल अपने सद्गुरू के सानिध्य में प्रेम प्रकाश मण्डल अन्न क्षेत्र (छावनी) के नाम से लगाता रहा है. सन् २००४ में भी प्रेम प्रकाश संत मण्डल प्रेमियों के साथ सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के सानिध्य में जन्तर मन्तर रोड़ लाल पुल के पास विशाल कुम्भ मेला लग रहा है छावनी का प्रवेश द्वार सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के टण्डे आदम दरबार के प्रवेशद्वार के समान ५० फीट ऊँचाई धारण किये हुऐ है. जिसकी सुन्दरता देखने के लिये दूर-दूर से जन समूह के साथ-साथ देवता भी देख हर्षित हो रहे हैं. यह प्रवेश द्वार सारे कुम्भ मेला क्षेत्र का आकर्षण बना हुआ है. यहां से अन्दर जाने के लिए हरियाली के मध्य ५० फीट लम्बा रास्ता है, जिसके अगल बगल में बड़े सुन्दर से फूलों के बगीचे हैं. सामने देखते ही पवन देवता के वेग में लहराती हुई केसरिया ध्वजा जिस पर आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का महामंत्र ॐ श्री सतनाम साक्षी अंकित सनातन धर्म का शंखनाद करती हुई यह पताका लहरा रही है. ध्वजा के पास में ही घास फुस से निर्मित १८-१८ फीट से बनी हुई कुटियाएं है. यहां पर मेले में सद्गुरू की शरण में रहकर प्रेमी अमरापुर यज्ञशाला के हवन कुन्ड में आहुतियां डालकर पुण्य प्राप्त करेंगे. आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं सद्गुरू देवों का विशाल सुन्दर आकर्षक मन को मोहने वाला मंदिर बना हुआ है जो प्रेमियों के मन की आक्षांओं को पूर्ण करने वाला है. केन्द्र में ही वर्तमान परम पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का निवास स्थान बना हुआ है. जहां प्रेमी गुरूदेव दर्शन लाभ लेकर परम आनन्द को प्राप्त होगें. आश्रम में आज तक कुम्भ का सबसे बड़ा विशाल सत्संग पण्डाल १५००० वर्ग फीट में बना हुआ है जो पीताम्बरा एवं श्वेत रंग से बना हुआ है जिसमें मंच पर आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँ जी महाराज एवं सद्गुरू देवों के साथ वर्तमान श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं महिमावान संत मण्डल प्रव कर धर्मप्रेमियों को उपदेश करेंगे इस कुम्भ मेले में आने वाले प्रेमीयों के उत्साह को देखकर गुरूवर की आज्ञा पाकर संत शंम्भूलाल जी द्वारा प के १६-१६ के बड़े-बड़े सुविधा युक्त कमरे साथ ही बड़े जन समूह के अ के कारण २५० कमरे भी बनवाये गये है. जो प्रेमी रूककर अपनी थका दूर करेंगे आश्रम में प्रेमीयों की भीड़ को देखकर बड़े आकार का भोजना बनवाया गया है. जिसमें ५०० भक्त एक साथ बैठकर भोजन कर सके रात्रि में सत्संग की व्यवस्था खुले हुऐ मैदान में समुचित प्रकाश के साथ गई है. जहां पर बैठकर प्रेमी स्वयं को सतयुग के आश्रम का सुख प्र करेंगे आश्रम से मात्र १ मिनट की दूरी पर क्षिप्रा की धारा प्रवाहमान इसकी विषेशता यह है कि शाहीस्नान के समय भी प्रमी यहां पर स्नान लाभ प्राप्त कर सकेंगे एवं मोक्ष की प्राप्ति करेंगे मेले में आने वाले प्रकाशीयों के लिये स्टेशन के पास भी रविशंकर कॉलोनी में पुराने पी. ओ ऑफिस में रूकने की व्यवस्था की गई है यहां से प्रेमी श्री प्रेम प्रक मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी में पहुँच सकता है. मेले में आऐ हुए प्रेमी वि भी प्रकार की असुविधा को दूर करने के लिये इन नम्बरों पर सम्पर्क सकते है. 0734–5033319

संत शम्भूलाल जी –94250–5398
सुरेश सांवल प्रेम प्रकाशी–98931–0952
प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र
जंतर-मंतर रोड, लाल पुल के पास, उज्जै

सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज का ७४वाँ जन्मोत्सव

३० अप्रेल शुक्रवार से ४ मई २००४ मंगलवार तक
श्री अमरापुर स्थान सहित समस्त आश्रमों में मनाया जायेगा

सद्गुरू हरिदासराम श्लोकाष्टक

4 मई जयंती विशेष

धर्मध्वजा रक्षण तत्पराय, लोकोपकारार्थ समर्पिताय ।
सत्संग-करणेऽतिधुरंधराय, नमः हरिदास गुरूवराय ।। १ ।।

धर्मध्वजा की रक्षा में तत्पर लोक (संसार) या लोगों के उपकार के लिए समर्पित, सत्संग करने में धुरन्धर श्री हरिदासराम जी को प्रणाम है.

शास्त्राण्यधीत्य सकलानि गुरूपदेशम्, श्रुत्वा निधाय मनसि तपसा रराज ।
त्यक्त्वाखिलं जगन् मोहकरं विनाशीं, वासं चकार भूवि श्री हरिदासरामः ।। २ ।।

सभी शास्त्रों को अच्छी प्रकार पढ़कर, गुरू के उपदेश को सुन और उसे मन में धारण करके तपस्या से देदीप्यमान हो गये और इस सारे संसार को मोह का कारण और विनाशशील मानते हुये इसे छोड़कर विरक्त भाव से भूमि पर निवास किया.

मोहान्धकारे पतितान् नरान् सःअज्ञानदुःखोपहतान् दयार्हान् ।
उद्धर्तुकामः हरिदासरामः गीतोपदेशं भृशमाचचार ।। ३ ।।

मोह रूपी अन्धकार में पड़े हुये और अज्ञान तथा दुःख से पीड़ित, दया के योग्य सांसारिक लोगों के उद्धार के लिए गीता का बार-बार रहस्य और उपदेश सुनाया .

वेदान्त सांख्यादिनि दर्शनानि, गीता समेतं सद्ग्रन्थमुख्यान्
स्थित्वा गुरोः पादतरोः समीपे, सोऽध्यैष्ट पूज्यः हरिदासरामः ।। ४।।

वेदान्त, सांख्य, योग आदि दर्शनों को तथा गीता रामायण आदि मुख्य ग्रन्थों का गुरू के चरण वृक्ष के नीचे बैठकर बहुत अभ्यास और अध्ययन किया.

कामादिषट् शत्रुजिताय तस्मै, दिव्यस्वरूपाय जितेन्द्रियाय ।
सदा जपे तत्परमानसाय, नमः हरिदासगुरूवराय ।। ५ ।।

काम क्रोध आदि छः शत्रुओं को जीतने वाले, दैवीय सम्पति से संयुक्त होने के कारण, दिव्य स्वरूप वाले, इन्द्रिय विजयी, सदा जप में तत्पर मन वाले श्री हरिदासराम जी को प्रणाम है.

विघ्नं विना यो हि जजाप नित्यम्, एकाग्र चित्तेन गुरोश्च नाम ।
चान्ते जपन् नाम विहाय लोकम्, हरिः प्रतस्थे अमरापुराय ।। ६।।

जो निर्विघ्नतया एकाग्र चित्त होकर गुरू का नाम जपते थे तथा अन्त में उसी सिद्ध मंत्र को जपते हुये इस लोक को छोड़कर स्वर्ग लोक (देवलोक) को प्रस्थान कर गये.

अदीक्षत शिष्यगणं सिषेवे, धर्म तथा यो हि जिगाय कामम् ।
पपौ गुरूनाम रसामृतं हरि, र्दुदोह ज्ञानं सद्ग्रन्थधेनोः ।। ७ ।।

उन्होने शिष्यों को दीक्षित किया, धर्म की सेवा की, काम (सभी मनोरथों) को जीत लिया, नाम जप रूपी रसामृत का पान किया और सद्ग्रन्थ रूपी धेनु से ज्ञान रूपी दूध का दोहन किया.

सर्वानन्द गुरू मनन्य
मनसानित्यं सिषेवे बुध :
पन्थास्यास्य प्रवर्तकस्य
चरणे यस्य रतिः निश्चला
सत्यं यो ह्यवलम्ब्य
शास्त्रविहितांचर्चा सदाचिन्तयत्
तस्मै श्री हरिदासराम गुरवे पूज्याय देवैः नमः ।। ८ ।।

जिन्होंने अपने दीक्षा गुरू श्री सर्वानन्द जी महाराज की अनन्य मन से सेवा की, इस प्रेम प्रकाश पन्थ के प्रवर्तक सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चरण कमलों में जिनकी निश्चल (स्थिर) रति (अनुराग) थी, जो सत्य का आश्रय लेकर शास्त्र में कही गई चर्चा का सदा चिन्तन और विचार करते थे ऐसे देवों के द्वारा भी पूज्य गुरूवर श्री हरिदासराम जी महाराज को पुनः-पुनः नमस्कार है. ।।इति।।

सुनिल कुमार शर्मा प्राध्यापक
प्राचरू विद्यापीठ आचार्य महाविद्यालय
आमेर मार्ग, जयपुरम्

प्रश्नावली 2 के उत्तर

१. श्री चेलारामजी माता कृष्णादेवीजी २. खिल्लू ३. जयपुर के श्री अमरापुर स्थान में ४. सच्चा सौदा नाम का ५. श्रीमती सुधा जौहरी ६. (१) कौए जैसी चेष्टा (२) बगुले जैसा ध्यान (३) श्वान निद्रा (४) अल्पाहार (५) एकांत ७.उज्जैन ८. जयपुर, चैत्रमेला ९. स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज १०. ढोढा-चटनी.

सही उत्तर भेजने वालों के नाम- जयपुर से-राधादेवी गंगवानी,जय प्रेमप्रकाशी,भारती दत्तवानी,भावना टिलवानी,विशाल सतवानी,आशी-लक्ष्मी रामवानी,लाजवन्ती नरयानी,दीपक मनवानी,प्रतीक बच्वानी,भावना पारवानी,खंडवा से-नीतू मोटवानी,चन्द्रभान गुरबख्शानी,कामठी से-रवि मुलानी,गोदिंया से-हरीश कुमार वेडवानी,धमतरी से-सुरेश-लक्ष्मीदेवी पंजवानी,कृष्णा चांदवानी,नेहा-सरिता वाधवानी,मोहन राजकुमारी वाधवानी,रेखा किशोर वाधवानी,पुरूषोत्तम-निशा-चन्दर वशानी,अशोक मीना वाधवानी,गोघूमल सुशीला हिन्दूजा,खैरथल से-रूपा नौतानी, भाटापारा से-आत्माराम गोईंदानी,सिवनी से-रेनु श्याम सुंदर माखीजा,पुष्पा मोहनानी,दीपा इन्दरलाल मोहनानी,दीपा रामचंद माखीजा,अहमदाबाद से-श्रीमती रश्मि मनोज कलवानी, कोरबा से-होलु व श्रीमती मधु वाधवानी,जौधपुर से वैयजन्ती मनवानी,दीपा बादलानी,भानुप्रतापपुर से-मायादेवी प्रेमप्रकाशी,बिलासपुर से-रानी सखाराम पाहूजा, ब्यावर से-मनीष संगीता वासवानी,नानकराम रंगवाला, पिंकी शिवानी,अजमेर से-जय शिवनानी.

४ मई जयंती पर्व पर विशेष

मर्यादा पुरूषोत्तम सद्गुरू हरिदासरामजी महार

भारत की तपोभूमि पर अनेक महापुरूषों का अवतरण हुआ है ऐसे महापुरूषों में उत्कृष्ट एवं दुर्लभ विशेषता से ओत-प्रोत कुछ विरले ही महापुरूषों की श्रेणी में हैं. ऐसी ही विशेष आभा एवं दुर्लभ विशेषता पायी गयी परम पूज्य सतूगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज में.

आपका शुभ अवतरण अविभाजित भारत के सिन्ध प्रान्त के "ठोड़न" नामक गांव में विक्रम संवत् १६८७ सन् १६३० की वैशाख माह की १३ को पिता श्री हीरानन्द व माता मोतिलबाई के घर में हुआ. बचपन से ही आपको भक्तिमय वातावरण प्राप्त हुआ कारण कि आपके घर में सन्तों महात्माओं का आगमन होता रहता था. सन्तों महात्माओं के रहन-सहन से आप बचपन से ही वैराग्य के संबंध में सदैव चर्चा करते रहते थे. २४ वर्ष की आयु में आपको प्रातः स्मरणीय महर्षि सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ. आपने उनसे विधिवत "गुरू दीक्षा" प्राप्त की एवं उसी समय अपना पूरा जीवन गुरू महाराज के चरणों में समर्पित करने का संकल्प लिया. सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का प्रत्यक्ष संसर्ग पाकर आपने मानसिक उन्नत दशा को प्राप्त किया. अपने गुरूवर की तरह आप समय के बहुत पाबन्द थे उन्ही की तरह समय की पाबन्दी व सादगी को आपने आत्मसात कर लिया. अपने गुरूवर के महानिर्वाण पश्चात् आपने अपना पूरा समय महापुराणों-उपनिषदों के गहन-अध्ययन में लगाया. प्रेम प्रकाश मंडल के सत्-साहित्य के प्रकाशनों का निर्देशन का कार्य पूर्ण गंभीरता से किया. परम पूज्य सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज के महा-निर्वाण के पश्चात् आपको प्रेमप्रकाश मंडलाध्यक्ष की बागडोर सौंपी गयी. आपने अपने उपदेशों से प्रेमियों व जिज्ञासुओं को सत्योपासना का मार्ग बताया. अपनी सत्संग वर्षा के माध्यम से अनेक गूढ़

रहस्यों पर प्रकाश डाला आप त्याग की आदर्शमय मि
थे. आपका जीवन वैराग्यवान था इसकी झलक अ
प्रवचनों में स्पष्ट महसूस की जाती थी. आप नीति म
व धर्म के सम्पूर्ण जानकार थे. आपके प्रवचनों को सम
के लिए बुद्धि को एकाग्र करना पड़ता था. प्रेम प्र
मण्डल के आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महारा
आपकी गहन श्रद्धा थी, आचार्यश्री के महामन्त्र "सत्
साक्षी" का विस्तार कर इस महामन्त्र को विश्व के अ
देशों तक पहुंचाया. "धर्म" के संबंध में सतूगुरू महा
जी कहते हैं कि संसार में धर्म ही मनुष्य का वास्त
साथी है. जो हमेशा उसके साथ जाता है चर्म धोने से
नहीं धुलते वे तो धर्म से ही धुल सकते हैं. धर्म के
आस्था तथा विश्वास जरूरी है बिना आस्था के धर्म
दिखावा और खुद के साथ छल है. स्वामी जी कहते है
सम्मान सभी धर्मों का करो पर अनुष्ठान अपने धर्म
तब ही जीवन में तत्व की प्राप्ति संभव है. आग का ध
जलाना पानी का धर्म है बुझाना इसी प्रकार इंसान का
है इंसान के काम आना. सिद्धान्तों के सम्बन्ध में सत
जी का कथन है कि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है
बुनियादी उसूल रखो अपने सिद्धान्तो पर रहकर जो चुनौ
का सामना करता है वही इतिहास का निर्माण करता
"दृष्टि" व चरित्र के सम्बन्ध में सतूगुरू जी कहते हैं
जीवन चरित्र का बड़ा महत्व है जैसी दृष्टि वैसी स
दिखायी पड़ेगी. सोये हुए आदमी के पास जाने से नीं
आयेगी. इसलिए जागे हुए महापुरूषों की शरण में पहुँच
चरित्र-निर्माण करो, जिससे आत्म-सम्मान संभव हो."जी
जीवन को सजगता से तथा मृत्यु को सहजता से स्वी
करना चाहिए जीवन से हमारी यात्रा प्रारम्भ होती है
मृत्यु में जाकर समाप्त हो जाती है जीवन के प्रति अस
की भावना मृत्यु के प्रति भय प्रकट रकती है. जब

निश्चित है कि एक दिन सभी को जाना है तो सत्य को स्वीकार क्यों न करें. पांच तत्वों से निर्मित यह काया एक दिन इन्ही में मिल जायेगी इसलिए निरर्थक अहंकार को मत पालो. जीवन एक कला है जो इस कला को समझ लेता है वह मृत्यु के प्रति सहज हो जाता है. स्थिरता के सम्बन्ध में स्वामी जी कहते हैं कि सत्संग आत्म ध्यान आदि के लिए स्थिरता से ही सत्संग आत्म ध्यान में मन लगेगा, परमशांति प्राप्त होगी. सौ बार माला फेरते हुए मन स्थिर नहीं है. तो माला फेरने का कोई लाभ नहीं. "परम तत्व" की प्राप्ति के लिए अपनी "रसना" को जगाओ. जब ईश्वरीय शक्ति के साथ सम्बन्ध स्वतः ही स्थापित हो जाता है. विकृति हमेशा पांच मूल तत्वों में ही होती है. तो प्रकृति के ये अंश कर्ता के अधीन हो जाते हैं. उस पर चलना कठिन हो जाता है जो जगदीश के सम्बन्ध को चाहता है अपने विश्वास पर स्थिर अटल रहता है वह "प्रेम प्रकाशी" बन जाता है. जब तक अपने जीवन में जड़ व चेतन की ग्रन्थि का पता नहीं लगा लेते तब तक जीवन में परम शांति की अनुभूति नहीं हो सकती जिसने अपनी मन बुद्धि अपने गुरू को अर्पण कर दी उसे ही जीवन में परम तत्व की प्राप्ति हो सकती है.

अपने भीतर उस विज्ञान को जानने की इच्छा जाग्रत करो जिसके बाद तुम्हे इस जगत में और कुछ जानना बाकी नहीं रह जायेगा. प्रयास करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी. प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक आचार्य सतूगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज में ही सभी सन्त-महात्मा निहित हैं अतः उन्ही का ध्यान उन्हे ही मन-बुद्धि अपर्ण करने का आह्वान भी करते हैं. एकादशी एवं शनिवार का दिवस श्रावण माह २६ अगस्त २००० को उनकी आत्म ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गयी परन्तु आलोक आज भी स्पष्ट महसूस करते हैं.

अपने अल्पकाल मण्डलाध्यक्ष के रूप में प्रेम प्रकाश मंडल की आभा को गगनचुम्बी मुकाम तक पहुंचाया, समाज को नई दिशा देकर प्राण फूंकने जैसा मार्गदर्शन दिया आपको हमारा बार-बार नमन है. बी.डी टेकवानी, अमरापुर स्थान, जयपुर

प्रेम प्रकाश आश्रम किशनगंज ब्यावर का वार्षिकोत्सव

ब्यावर- हमारे अजमेर के सेवाभावी सहयोगी मोहन कुमार शिवनानी के अनुसार ७ से ११ मार्च २००४ तक श्री अमरापुर स्थान से आयी सन्त मण्डली सन्त नरेशलाल जी,सन्त शंकरप्रकाश जी,सन्त राजा प्रेमप्रकाशी, सन्त जय प्रेम प्रकाशी,सन्त भोलानाथ प्रेम प्रकाशी की उपस्थिति में प्रेम प्रकाश आश्रम (महिला मण्डली) दादी सती की दरबार किशनगंज ब्यावर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ. ११ मार्च को पाठों के भोग व आम भण्डारे के साथ विशेष सत्संग सभा में पल्लव पाकर वार्षिक उत्सव सम्पन्न किया गया.

चैत्र मेला दिवस मनाया गया.

बुरहानपुर (म.प्र.) से श्री अशोक चावला द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार ४ अप्रेल २००४ रविवार को चैत्र मेला दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया गया. चैत्र मेले की वीडियो कैसेट द्वारा सत्संग वर्षा भजन-गायन,शहनाईवादन आदि व भण्डारे के साथ चैत्र मेला दिवस सम्पन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में बुरहानपुर के प्रेमीयों ने भाग लिया.

भाटापारा के प्रेम प्रकाश मंदिर में चेटीचण्ड की धूम

भाटापारा २२ मार्च २००४ सोमवार- गत १० वर्षों से जनसेवा में समर्पित प्रेम प्रकाश मण्डल भाटापारा द्वारा ११वें वर्ष में पर्दापण करते हुए रेलवे स्टेशन पर निःशुल्क शीतल जल सेवा का शुभारम्भ चेटीचंड के पावन दिवस पर पूज्य सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष श्री दयालदास गोईंदानी द्वारा भगवान झूलेलाल की आरती कर दीप प्रज्वलित कर किया गया. रेल्वे स्टेशन पर मिठाई, प्रसाद व ठंडा शर्बत का वितरण किया गया और यात्रियों को भी ट्रेन में शर्बत प्रसाद बांटकर सिन्धुत्व दिवस का उत्सव मनाया गया. प्रेम प्रकाश आश्रम में दोपहर को वरूण देवता की विधिवत् पूजा,आरती,भजन द्वारा यह दिन धूमधाम से मनाया गया. चेटीचण्ड के दिवस पर वरूण देवता की जीवनी पर श्री घुमणमल गेहाणी ने रोशनी डाली अन्त में आमलंगर का सभी ने आनन्द लिया.

आत्माराम गोईंदानी, प्रेम प्रकाश आश्रम भाटापारा से

समाचार-दर्शन

भगवान झूलेलाल जयंती

(विशेष शोभायात्रा-शहनाई वादन-बर्फ झांकी-छेज की धूम)

जयपुरः आयोलाल झूलेलाल जेको चवन्दो झूलेलाल-तहिंजा थीन्दा बेड़ा पार, लाल जा झाटी चओ झूलेलाल, आदि भक्तिमय उद्घोष के साथ पावन गुलाबी नगरी जयपुर में चेटीचण्ड महोत्सव विभिन्न स्थानों पर पूज्य गुरूवर सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डल के पावन सानिध्य में मनाया गया.

भगवान श्री झूलेलाल का आविर्भाव दिवस २२ मार्च २००४ को प्रातः श्री अमरापुर स्थान में प्रार्थना-सत्संग-प्रवचन, भगवान झूलेलाल महिमा के भजन व मुख्य द्वार पर रंगोली आदि द्वारा श्रद्धा भवना के साथ मनाया गया. प्रत्येक वर्ष की भांति पूज्य महाराज श्री व संत मण्डली के सानिध्य में वरूणावतार भगवान श्री झूलेलाल जयंती चेटीचण्ड महोत्सव पर विभिन्न स्थानों में सत्संग प्रवचन दीप प्रज्वलन मंदिर उदघाटन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए.

प्रातः १० से ११ बजे जवाहर नगर सेक्टर २ में पूज्य पंचायत द्वारा महाराज श्री का भव्य स्वागत गया. तत्पश्चात् लाल कोठी सब्जीमण्डी में विशाल झांकी ६० फुट ऊँची बड़े सुन्दर तरीके से सजाई गई जिसमें श्री झूलेलाल भगवान व श्री सद्गुरू टेऊँराम को विराजमान किया गया.अत्यन्त ही सुन्दर मनोहारी झांकी सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी मुरलीधर टेवानी, श्री गोवर्धनदास ने महाराज श्री का अभिन किया तत्पश्चात् २२ गोदाम स्थित पूज्य सिन्धी पंचायत निर्मित भगवान श्री झूलेलाल मन्दिर का उदघाटन गया. दोपहर २ बजे प्रति वर्ष की भांति गणगोरी बा स्थित मंदिर से ज्योति प्रज्वलित कर भव्य विशाल शोभा का शुभारंभ किया गया. इसी भक्तिमय वातावरण के चेटी चण्ड महोत्सव जयपुर में मनाया गया.

जयपुर में चैत्र मेला दिवस

जयपुर-८२ वर्ष पूर्व आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा निरन्तर मनाया जा रहा है. महाराज श्री की परम्परानुसार इस वर्ष भी अमरापुर दरबार में ३ अप्रेल शनिवार का दिन चैत्र मेला दिवस के रूप में मनाया गया वैसे तो इस मेले की तैयारियां लगभग २-३ माह से शुरू हो जाती हैं पर इस वर्ष कुम्भ मेले के कारण श्री दरबार में बड़ा सादगी पर भव्य सजावट से चैत्र मेले का प्रथम दिन मनाया गया.

चैत्र मेले के प्रथम दिन चैत्र सिन्धी १२ तारीख व शनिवार ३ अप्रेल कितना ना अनूठा संगम रहा आचार्य श्री का जन्मोत्सव व चैत्र मेले का दिन. आज श्री दरबार में प्रेमीगण जब प्रवेश करने लगे तो श्री दरबार के मुख्य द्वार पर रंगोली व पुष्पों की आकर्षक सजावट देखकर पूर्व के चैत्र मेले की याद आ गई. वहीं गुरूमुख द्वार की सीढ़िया चढ़कर ज्योंहीं अन्दर प्रवेश किया तो सम्पूर्ण परिसर प्रेमियों से भरा देखकर मन झूम उठा, प्रार्थना के स्वर में गूंजे तो हृदय आनन्दित होकर झूम उठा.

सत्संग मंच पर सम्माननीय सन्तगण शोभा पा थे, वहीं पास में सद्गुरू सर्वानन्द जी की सिद्धहस्त चिन्ता प्रतिमा विराजमान थी. महाराज श्री की प्रतिमा को नम करके ज्योंही समाधि स्थल में प्रवेश किया तो नेत्रों आनन्दकारी दृश्य का आभास हुआ. पुष्पों व लताओ इतनी मनोहरकारी सजावट कि कोई भी प्रेमी देखे अचंभित होकर अपलक नेत्रों से देखता ही रहे.
वहीं श्री मन्दिर में भी बड़ी आकर्षक सजावट की प्रातःकाल व सायंकाल को सत्संग गंगा चली जिसमें प्रेमीगण सत्संग का लाभ उठा रहे थे. दर्शनार्थी प्रातःका दर्शनों के लिये आने लगे जो देर रात्रि तक चलता रहा. प्रकार भक्तिमय वातावरण के साथ शनिवार ३ अप्रे चैत्र मेला दिवस मनाया गया.

भरत गुड़िया प्रेम प्रकाशी जय

सत्संग ज्ञानामृत

यात्रा दर्शन

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संतमण्डली का देशाटन

गाँधीधाम १६ से १८ मार्च

दिल्ली में चार दिन प्रेमियों को अमृतपान कराने के पश्चात् पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने संत मण्डली के साथ १४ मार्च २००४ को आला हजरत ट्रेन से गांधीधाम के लिए प्रस्थान किया. महाराज श्री का जयपुर, ब्यावर, अलवर, खैरथल, अहमदाबाद तथा कई अन्य स्टेशनों पर आये हुये प्रेमियों ने दर्शनकर स्वागत किया. १५ मार्च दोपहर १.३० बजे पूज्य महाराज श्रीजी एवं सन्तमण्डली का गांधीधाम पहुंचने पर बड़ी संख्या में उपस्थित भक्तों ने गगनभेदी जय-जयकार करते हुये फूलमालाओं के साथ स्वागत किया. स्टेशन से बाहर आकर एक विशाल शोभायात्रा के साथ पूज्य महाराजश्री व सन्तमण्डली को प्रवास स्थल श्री भगवानदास के निवास पर लाया गया. भोजन एवं विश्राम करने के पश्चात् सायंकालीन सत्संगसभा का आयोजन हुआ. सर्वप्रथम सन्त लक्ष्मण ने ईश्वर तेरे द्वारे आया हूँ भिखारी तथा संत श्रीमुक्त, संत झामनदास ने भी अपने भजनों द्वारा भक्तों को आनंदित किया तत्पश्चात् पूज्य महाराजश्री ने अपनी अमृतवाणी में बताया-

संभारे थो जो सत्गुर खे, गुरू भी तहं संभारीन्दो
अटल विश्वास आ जहिंजो न, सत्गुर तहं विसारीन्दो

जो गुरू को-प्रभु परमात्मा को याद करते हैं उन्हें भी गुरू परमात्मा याद करते हैं. द्रोपदी भगवान को कहती है-भगवन् आने में देरी कर दी तो भगवान कहते हैं मैंने आने में देरी नहीं की तुमने पुकारने में देरी की. तुमने जब कुलगुरू कृपाचार्य, गुरू द्रोणाचार्य को पुकारा तो तुम्हारी सहायता के लिए कोई भी नहीं आया परंतु जब तुमने मुझे पुकारा तो मैं तुम्हारी पुकार सुनकर दौड़ा चला आया. कहने का तात्पर्य यह है कि भक्त जबतक सच्चे हृदय से पुकारता नहीं तब तक प्रभु परमात्मा प्रकट नहीं होते. हम उस प्रभु परमात्मा को सच्चे हृदय से पुकारें तो वह जरूर दर्शन देगें. अन्त में पल्लव पाकर महाराजश्री ने अपनी वाणी को विराम दिया.

इसके पश्चात् गांधीधाम के गणमान्य प्रेमियों भगवानदास मोटवानी, किशोर भाई [illegible]नंद मोतियानी, सुरेश बदलानी, उमेश माखीजानी, शंकरलाल बदलानी व अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का हार्दिक अभिनन्दन किया.

रतलाम में भी सद्गुरु टेऊँराम ज्ञानगंगा का अवतरण

१६ मार्च २००४ को प्रातःकालीन सत्संगसभा ८.३० से १०.०० बजे तक श्री झूलेलाल मंदिर में सम्पन्न हुई. प्रार्थना गायन व अन्य संत महात्माओं द्वारा सत्संग कीर्तन के पश्चात् सद्गुरू महाराज जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में प्रेमियों को बताया- **मनड़ा तोखे आऊं समझायां** आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपने मन को समझाते हैं. क्योंकि ओरों को समझाना बहुत सरल है परंतु अपने मन को समझाना बहुत ही कठिन है-**मन की तरंग मार ले बस हो गया भजन भक्ति** उसीका नाम है. सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने भी अपने मन को गुरू चरणों में समर्पित कर दिया था. भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में लिखा है-जो भक्त अपने मन और बुद्धि को मुझे अर्पण कर देता है वही मेरा सबसे प्रिय भक्त है उसे मैं संसार सागर से जल्दी पार लगा देता हूँ. इतना कहकर पूज्य स्वामीजी ने अपनी वाणी को विराम दिया.सायंकालीन सत्संगसभा भाई प्रताप ग्राउण्ड में सम्पन्न हुई.

१७ मार्च २००४- श्री झूलेलाल मंदिर में प्रातःकालीन सत्संगसभा में प्रार्थना गायन के पश्चात् संत श्रीमुक्त, संत श्री झामनदास ने सत्संग भजन द्वारा प्रेमियों को अमृत पिलाया तत्पश्चात् पूज्य महाराजश्री ने अपनी सारगर्भित वाणी में बताया- **कबीर सुता क्या करे उठ के जपहै मुरार, एक दिन सौवन होयगा लम्बे पैर पसार** कबीरदास अपने को जगाते हैं अभी तक तू सोया हुआ है तुझे प्रभु परमात्मा ने जन्म दिया इस जन्म में तू अगर सोता रहेगा तो फिर किस जन्म में उस प्रभु परमात्मा को प्राप्त करेगा. सन्तों की कृपा भी हुई जो सत्संग मिला, प्रभु कृपा से मनुष्य शरीर मिला परंतु एक कृपा अभी और करनी है कौनसी कृपा? **पहले अपने आप पर कृपा करे जन जोय, कहे टेऊँ तिस मनुष्य पर सबकी कृपा होय** पूज्य सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज कहते थे संसार से अपने आप को जगाना है न कि संसार से भाग जाना. जो मनुष्य संसार में रहते हुये भी अपने आप को संसार से अलग रखता है वह इस संसाररूपी समुद्र से पार हो जाता है. सत्संग समाप्ति के पश्चात् स्वामी लीलाशाह नगर में नवनिर्मित प्याऊ का उद्घाटन भी पूज्य स्वामीजी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ.

इस अवसर पर स्वामीजी ने अपने संदेश में कहा कि जल ही हमारा जीवन है तथा सबसे बड़ी सेवा भी यही है कि दूसरों की प्यास बुझाना, यही मनुष्य का कर्तव्य है.

सायंकालीन समापन सत्संगसभा भाई क्रिकेट ग्राउण्ड पर शुरू हुई. आज गांधीधाम के अतिरिक्त आदीपुर व अन्य समीपस्थ क्षेत्रों से आये हुये प्रेमियों से सत्संग सभागार खचाखच भरा हुआ था. संत लक्ष्मणजी ने मेरे सतुगुरू टेऊँराम मुझ पर कृपा करना, भूले न नाम तेरा बस इतनी दया करना, संत श्रीमुक्त ने गोपाल कृष्ण धुनी द्वारा लोगों को आनंदित किया. संत झामनदास ने सतूगुरू तुहिंजे द्वारे आयुसि भिखारी तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्षा करते हुए बताया-धीरज धर मन मुहिंजा सतूगुरू भाग बणाईदों, बेड़ा पार लगाईदों जो उस प्रभु परमात्मा की शरण लेता है प्रभु उसे इस भवसागर से पार कर देते हैं भले ही वह किसी भी जाति वर्ण कुल का हो जात पात पूछे नहीं कोई हरि को भजे सो हरि को होई भगवान गुरू जाति या कुल नहीं देखते. जिस प्रकार भक्त प्रहलाद का इतिहास पढ़कर देखें, राक्षस कुल में पैदा हुआ भक्त प्रहलाद उसके मन में विश्वास हो गया कि भगवान मेरे पिता नहीं वो तो स्वयं भगवान श्री हरि विष्णु हैं ऐसा जब उसके मन में विश्वास पड़ गया तो भगवान ने उसकी कदम-कदम पर रक्षा की. सतुगुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने अपने सदूगुरू के ऊपर विश्वास रखा वे कहते थे- आसू मास्तर तव्हांजे लाय आहे, पर मुहिंजे लाय अल्लाह आ भले ही औरों के लिए वे मास्टर हों पर मेरे लिए वे प्रभु परमात्मा के रूप हैं वे ही मेरे सब कुछ हैं. ऐसा दृढ़ विश्वास उन्होंने अपने गुरू के प्रति रखा. हमारे ऊपर भी उन महापुरूषों की कृपा बनी रहे. हम भी पल्लव में ऐसी वस्तु मांगे जो कभी नाश न हो.

१८ मार्च २००४- प्रातःकालीन सत्संगसभा शिव टॉकीज के पास श्री झूलेलाल मंदिर में सम्पन्न हुई तत्पश्चात् पूज्य सदूगुरू महाराज जी ने संत मण्डली व प्रेमियों के साथ आदीपुर के लिए प्रस्थान किया. गांधीधाम से ७ किलोमीटर दूर आदीपुर पहुंचने पर महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया. सदूगुरू महाराज के आगमन से प्रेमियों के हृदय में खुशी की लहर दौड़ पड़ी- सदूगुरू बादल बरसिया आंगन मेरे आज, कहे टेऊँ मंगल भया पूरण होया काज स्वागत सत्कार के पश्चात् पूज्य स्वामीजी व संतों को किशोर भाई के घर पर लाया गया. यहां पर प्रेमियों व संतों का भंडारा हुआ. सायंकालीन सत्संग स्वामी शांतिप्रकाश भवन में सम्पन्न हुआ. जहां पर बड़ी संख्या में प्रेमियों ने संतदर्शन, सेवा व सत्संग का लाभ लिया. संत दयाप्रकाश, संत झामनदास, संत लक्ष्मण, संत संजय, संत श्रीमुक्त भी स्वामी जी के साथ यात्रा में सम्मिलित थे.

अहमदाबाद १९ मार्च

गांधीधाम से अहमदाबाद एक दिवसीय प्रवास के अंतर्गत श्री
जवाहरलाल के निवास पर स्वामीजी के सत्संग व प्रवास की व्यवस्था
थी. यहां पर स्वामीजी ने नवीन आश्रम के लिए ली गई भूमि का
अहमदाबाद के वरिष्ट प्रेमियों के साथ किया.

उज्जैन २० मार्च

भगवान भूतभावन महाकाल की पावन नगरी जहां सिंह
आयोजित किया जा रहा है. क्षिप्रा गंगा के तट पर प्रेम प्रकाश
(छावनी) की तैयारियों का अवलोकन करने के लिए अहमदाबाद से
द्वारा पूज्य स्वामीजी संतमण्डली के साथ उज्जैन पधारे. जहां
शम्भूलाल के नेतृत्व में छावनी की व्यवस्थाओं में लगे हुये भक्तों व
के प्रेमियों ने महाराज श्री का भव्य स्वागत करते हुये अन्नक्षेत्र नि
समस्त पहलुओं की जानकारी स्वामीजी को सविस्तार दी व दिशा नि
प्राप्त किए.

जयपुर २१-२६ मार्च

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर धाम
जयपुर शहर में आयोजित चेडी चड व अन्य कार्यक्रमों में भाग ले
सदूगुरू महाराजजी द्वारा हजारों प्रेमियों को अमृतपान कराया गया.

दिल्ली २७-३१ मार्च
प्रेम प्रकाश धाम का वार्षिकोत्सव

भारत की राजधानी दिल्ली के मलिकागंज क्षेत्र में स्थापि
प्रकाश धाम का वार्षिकोत्सव शनिवार २७ मार्च से बुधवार ३१ मार्च
तक भव्य हर्षोत्साह श्रद्धा प्रेम के साथ पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्र
महाराज की पावन अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ. स्वामीजी के प्रेम प्रका
पहुंचने पर संत जयदेवजी महाराज व संत लालूप्रकाशजी के सानि
स्वामी जयप्रकाश सेवासमिति के सदस्यों ने महाराजश्री का भव्य
किया. २७ मार्च प्रातःकालीन सत्संग सत्र में अमृत छकने के पश्चा
संख्या में प्रेमियों ने हवन व श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावंदन कार्यक्रम
लिया. सायंकालीन सत्संगसभा में पाटों का आरम्भ भी संतों द्वारा हुअ
मार्च को सायं ४ बजे सदूगुरू भगवान व लीलावतार भगवान के
स्वरूपों के साथ आश्रम से एक भव्य शोभायात्रा सदूगुरू महाराज
सानिध्य में निकली. हरिनाम कीर्तन की मस्ती व गुरूदेव का सानिध्य
की तो बस सब ओर से मौज ही मौज हो गयी. मार्ग में अनेक स्थ
सदूगुरू महाराज व संतों प्रेमियों का स्वागत पुष्पवर्षा करके जल-शर्बत
वितरण के साथ किया गया.

२९-३० मार्च को प्रातः ८ से १० बजे तक सत्संगामृत
सराबोर हुये. ३१ मार्च को प्रातः आश्रम में स्थापित श्री विग्रहों का
पूज्य स्वामीजी व संतमण्डली के द्वारा किया गया. सायंकालीन ४
१० बजे तक समापन सत्संगसभा में तो जैसे दिल्ली में रह रहे प्रे
कोर कसर छोड़ना ही नहीं चाहते थे. प्रेम प्रकाश धाम की ओर अ
सभी मार्ग प्रेमियों से भरे दिखाई पड़ रहे थे. दिल्ली प्रदेश की अनेक
भजन मंडलीयों द्वारा प्रस्तुत भजन-संध्या से प्रेमी मंत्रमुग्ध होकर
झूमने लगे. इसके पश्चात् संतो व सदूगुरू महाराजजी के प्रवचनों क
धारा से ओत-प्रोत हुये प्रेमीजन. सत्संग की समाप्ति के पश्चात्
महाराज द्वारा पल्लव पाकर महोत्सव का समापन किया गया. पां

भोजन भंडारे में बड़ी संख्या में प्रेमियों ने सद्गुरू महाराज का पावन-प्रसाद सश्रद्धा ग्रहण किया.

जयपुर १-२ अप्रेल

दिल्ली धाम का उत्सव पूर्ण करने के पश्चात् कुम्भ मेले की तैयारियों के संबंध में पूज्य महाराजश्री अमरापुर धाम पधारे. जहां से कई वाहनों में सद्गुरू महाराजजी के निर्देशन में छावनी से संबंधित सामान को प्रेमियों के साथ सिंहस्थ उज्जैन के लिये रवाना किया गया.

रतलाम २-५ अप्रेल

प्रेम प्रकाश आश्रम उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारोह

जयपुर से रेलमार्ग द्वारा चलकर पूज्य सद्गुरु महाराजी संतमण्डली के साथ रतलाम में २ अप्रेल को रात्रि ६.३० बजे पहुंचने पर बड़ी संख्या में उपस्थित सिंधी समाज के प्रमुखजनों व प्रेम प्रकाशियों-भक्तों ने महाराजश्री की अगवानी बैंड-बाजों के साथ की. धन गुरू टेऊँराम-सारा जग तारिया की मधुर ध्वनि के साथ पुष्पवर्षा करते हुये सद्गुरू महाराजजी व संत मण्डली को कारों की एक रैली के रूप में आश्रम लाया गया. जहां पर पूर्व में उपस्थित प्रेमियों ने संत सुंदरदासजी के नेतृत्व में सद्गुरू महाराज की अगवानी की. आश्रम का दर्शन करने के पश्चात् स्वामीजी को श्री मनोहर लाल जी के निवास पर लाया गया. यहां पर स्वामीजी के प्रवास की व अन्य संतो व प्रेमियों के निवास की व्यवस्था समीपस्थ अन्य प्रेमियों के घरों पर की गई थी. ३ अप्रेल प्रातः १० बजे अपार संख्या में प्रेमियों की उपस्थिति में पूज्य स्वामीजी ने वेद-मंत्रों उच्चारण के साथ भारी हर्षध्वनि के मध्य आश्रम का उद्घाटन रिबन काटकर किया. इसके पूर्व गत २ दिनों से प्रकाण्ड विद्वान ब्राह्मणों द्वारा आश्रम उद्घाटन व मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा के निमित हवन यज्ञ व पूजन अर्चन पूर्ण वैदिक रीति के साथ कराया जा रहा था. पंचदिवसीय पाठ भी संत सुंदरदासजी के सानिध्य में रखे गये. आश्रम उद्घाटन के साथ ही सद्गुरु महाराजजी व संतमण्डली ने आश्रम में प्रवेश किया और इसी के साथ चल रहे त्रिदिवसीय हवन यज्ञ की पूर्णाहुति पूज्य स्वामीजी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न होकर भगवान लक्ष्मीनारायण-आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के श्रीविग्रहों का अनावरण भी स्वामी जी द्वारा किया गया. और भगवान व आचार्य श्री के स्वरूपों के दिव्य दर्शन पाकर उपस्थित हजारों प्रेमी भक्तिभाव से विभोर हो उठे. इस अवसर पर सद्गुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा के रतलाम अवतरण की बधाईयां सद्गुरू महाराज द्वारा सारी संगत को दी गयी. प्रतिदिन प्रातः ८.३० से ११ बजे तक व सायं ५ से ८ बजे तक शंकरलाल नारवानी (अजमेर), संत श्रीमुक्त, संत लक्ष्मण, संत संजय, संत हरिओमलाल, संत जयदेवजी व सद्गुरू महाराजजी द्वारा निःसृत ज्ञानगंगा का पान प्रेमियों द्वारा बड़े मनोयोग से किया गया.

५ अप्रेल को प्रातः ८ से ११ बजे तक सत्संग, पाठों के भोग, ध्वजावंदन कार्यक्रम के साथ आम-भंडारे में भी हजारों रतलामवासी देश-विदेश से आये हुए प्रेमियों के साथ सम्मिलित हुये. सायंकालीन सत्संगानंद के पश्चात् सद्गुरू महाराजजी ने पल्लव पाकर महोत्सव का समापन किया.

उज्जैन ६-७ अप्रेल

पूज्य सद्गुरू महाराज जी रतलाम उद्घाटन महोत्सव पूरा करने के बाद उज्जैन श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी) में पधारे. यहां पर जयपुर सहित देश के अलग-अलग शहरों से आये प्रेमी भी पहुँच चुके थे. सद्गुरु महाराज जी की अध्यक्षता में सन्तों व प्रेमीयों की बैठक में छावनी को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने के लिए सेवा कार्यों का दायित्व सन्त मण्डली के नेतृत्व में प्रेमियों को सौंपा गया. समस्त सेवा कार्यों की देखरेख पूज्य सद्गुरू महाराज जी स्वयं कर रहे हैं.

इन्दौर ८ से १२ अप्रेल

स्वामी मुरलीधर, स्वामी गंगाराम, स्वामी चेतनप्रकाश वर्सी उत्सव

पूज्य सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज उज्जैन सिंहस्थ कुम्भ मेला छावनी से ७ अप्रेल रात्रि को काटजू कालोनी स्थित प्रेमप्रकाश आश्रम पधारे. सन्त शंभूलाल जी के नेतृत्व में उत्साही प्रेमियों ने महाराजश्री का जोरदार स्वागत किया. पूज्य स्वामी मुरलीधर जी महाराज, स्वामी गंगाराम जी महाराज, स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज का वर्सी उत्सव ८ से १२ अप्रेल तक पूज्य सद्गुरू महाराज जी की पावन अध्यक्षता में मनाया गया.

८ अप्रेल को प्रातः हवन कार्यक्रम से उत्सव का शुभारम्भ हुआ, श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावंदन के साथ पंच दिवसीय पाठों का आरम्भ भी हुआ. प्रतिदिन प्रातः८ से १० व शाम ४ से ७:३० बजे तक सत्संग की मौज में हजारों इन्दौर वासियों के साथ देश विदेश के अनेक भागों से आये प्रेमी भगवत् -गुरू-भक्ति के प्रेम में झूम उठे. १० अप्रेल को प्रातः ६ बजे मंदिर में स्थापित भगवान गुरू महाराज जी के दिव्य श्री विग्रहों का अभिषेक किया जाकर सुन्दर वस्त्राभूषण पहनाकर मनोहारी श्रृंगार किया गया. इसी दिन दोपहर इन्दौर के सिन्धी साधु समाज ने बड़ी संख्या में आश्रम आकर भण्डारे में भोजन प्रसादी पायी. ११ अप्रेल को दोपहर सन्तों का भण्डारा किया गया. १२ अप्रेल को सांयकालीन सत्संग सभा के पश्चात् ७:३० बजे सद्गुरू महाराज जी ने इस पंचदिवसीय मेले का समापन पल्लव पाकर किया.

इन्दौर में प्रेम प्रकाश संदेश सदस्यता वृद्धि अभियान

पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी मेले के अवसर पर श्री राजू ठकुरेल जी द्वारा अपने सहयोगियों के साथ प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान में बड़ी संख्या में नये सदस्य बनाये गये व पुराने सदस्यों का नवीनीकरण भी किया गया.

अमरलोक धाम का भूमि पूज

असीम कृपा से सत्संग रूपी बगीचे में एक नया, अलौकिक सुगन्ध फैलाने के लिये, सुन्दर फूल खिलने जा रहा है जिसका बीजारोपण भूमि पूजन २४ मार्च २००४ को पूज्य सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा प्लाट नं.४०४ आदर्श नगर जयपुर में बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया.

यह अमरलोक धाम रूपी फूल आचार्य श्री सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कृपा एवं सद्गुरू सर्वानन्द जी महाराज की प्रेरणा से प्रफुल्लित होने वाला है.

इस अवसर पर सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का कार द्वारा उतरते ही भावभीना फूलों से महकता हुआ भव्य स्वागत किया गया. पूज्य आचार्य श्री सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जयकार के साथ यह काफिला प्रारम्भ हुआ. दोनों तरफ से संगत हाथों में गुलाब के फूलों से भरी थालियां लिये सुशोभित हो रही थी एवं पूज्य सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के ऊपर दोनों तरफ से हल्की-हल्की फूलों की प्रेममयी सुमन से बरखा कर रही थी. वह दृश्य ऐसा अद्भुत व अविस्मरणीय है मानों एहसास यू हो रहा था कि वास्तव में ही अमरलोक से अमृतमयी अमर फूल बरस रहे हों. सद्गुरू महाराज जी संतो के साथ थोड़ा आगे बढ़े तो जयकारे के बाद एक भावमयी प्रेम रस सींचता हुआ एक भजन गूंजने लगा-जिसे सुन कर सभी आनन्दित हो साथ देने लगे

अमरापुर से सतूगुरू आये लेकर ये पैगाम
आये भूमि पूजन करने, बने अमर लोक यहीं धाम
धन गुरू टेऊँराम-धन गुरू टेऊँराम-२
वास करेंगे यहां पे आकर सतूगुरू टेऊँराम
सतूगुरू के ही गुन को गाकर, पायेंगे सब विश्राम
हर मुद्रा में हो उसकी मूरत, करे दर्शन सब अभि
सत्संग का दीवान सजे यहां, हर सुबह और शाम
संतो की हो टोली यहां, और प्रेम से गूंजे हरि ना
ज्ञान की गंगा ऐसी बहे यहां, पायें सब ही आत्मर
सर्वानन्द दे चरनों में वासा, मन में ये ही आसा
तेरे ही दर्शन की है प्यासा, मेटो सद्गुरू ये त्रासा
तेरे ही गुणगान हो लब पर, रहूं अमरलोकत्व धाम

भजन के साथ-साथ स्वामी जी आगे बढ़ते रहे फूलों की वर्षा होती रही एवं भूमि पूजन स्थल पर जहां पर शिला का पूजन करके पूज्य स्वामी जी के कमलों के सहारे नीचे गड्डे में स्थापित किया गया अवसर पर पूज्य श्री सद्गुरू महाराज जी ने प्रवचन किया.

हमारा मन जो संसार की अग्नि में जल सतूगुरू के ज्ञान से ही वो जलन मिट सकती है सतूगुरू अपना बना लेता है, अपनी प्यारी शरण लेता है वो सब चिंताओं से मुक्त हो जाता है. मन शीतल हो जाता है, सतूगुरू बड़े कृपालु होते हैं. ये या आश्रम बनाये जाते हैं वो अपने लिये नहीं बन उनका एक ही ध्येय होता है कि किसी ना किसी जनसाधारण को सत्संग का लाभ मिले. परमात्मा की जगे क्योंकि सत्संग से ही संत गुरू का सानिध्य प्राप्त है और सद्गुरू की प्राप्ति होती है सतूगुरू फिर परमा मिलाते हैं. अंत में शिलान्यास समारोह का समापन महाराज ने पल्लव पाकर किया. संकलन-अमरलोक

अभिनंदन

सदी के प्रथम सिंहस्थ के पावन अवसर पर पुण्य सलिला क्षिप्रा के तट पर स्थित पवित्र देवनगरी उज्जैन में पधारने वा श्रद्धालुओं का हृदय से सादर अभिनन्दन.

किसी भी स्नान पर्व के दौरान घाट का महत्व नहीं होता, बल्कि नहीं होता, बल्कि नदी के जल का विशेष मह है, कालान्तर में घाट बदलते रहे किन्तु नदियों का जल आज भी प्रवाहित हो रहा है, सदी के प्रथम सिंहस्थ में उज्जैन आने वाले सभी श्र से निवेदन है कि घाट विशेष का ध्यान न रखते हुए जहां स्थान मिले वहां पर पुण्य सलिला क्षिप्रा के जल में स्नान कर पुण्य लाभ लें.

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की आशीष एवं पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज के स्नेहाशीष से नेत्र (रोगों) से पीड़ित निर्धन रोगियों की सेवा में सदा समर्पित स्वामी शांति प्रकाश धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय.

प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर ग्वालियर (निःशुल्क नेत्र आपरेशन, प्रति रविवार) लैंस प्रत्यारोपण की निःशुल्क सुविधा उ

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आयोजित
सभी शहरों के भक्तजनों के लिए

दोहा स्मरण प्रतियोगिता

परिणाम
22 जून 2004 मंगलवार

सुनाने की अंतिम तिथि
13 जून 2004
रविवार

पुरस्कार वितरण
23 जून 2004 बुधवार

सुनाने के स्थान

१. संत मुरलीधर, खैरथल
२. संत नंदलाल, हरिद्वार
३. संत लालूराम, दिल्ली
४. संत शम्भूलाल, इन्दौर
५. संत श्यामलाल, कोटा
६. संत संजय, मीरा मंदिर बड़ौदा
७. मोहन शिवनानी, अजमेर
८. महेन्द्र प्रेम प्रकाशी, सीकर
९. कैलाश बदलानी, टौंक
१०. भगवंती दीदी, आगरा
११. सांवल प्रेम प्रकाशी, मुरैना
१२. मीनू प्रेम प्रकाशी, हथीन
१३. संत भोलाराम, ब्यावर
१४. श्रीचंद पंजवानी, ग्वालियर
१५. संत परसराम, डबरा
१६. संत राजूराम, चित्तौड़गढ़
१७. संत महादेव, वाराणसी
१८. संत हरीशलाल, गोर्दिया
१९. ताराचंद श्यामवानी, जोधपुर
२०. रामचंद करनानी, निवाई (टौंक)

नियम

- इस प्रतियोगिता में किसी भी शहर, जातिवर्ग एवं आयुवर्ग के भक्तजन भाग ले सकते हैं.
- प्रतियोगिता में शांति के दोहे कैसेट के माध्यम से ६० दोहे १३ जून २००४ तक याद करके श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त उल्लेखित अन्य स्थानों पर भी सुनाये जा सकते हैं.
- शांति के दोहे अमरापुर स्थान द्वारा प्रकाशित फोल्डर अथवा प्रेम प्रकाश संदेश अप्रैल अंक, नित्य नियम प्रार्थना पुस्तिका से देखकर याद किये जा सकते हैं.
- दोहे सुनाने वाले प्रतियोगी अपना पूर्ण नाम, पता, आयु व फोन नम्बर लिखवायें.
- प्रथम-द्वितीय व तृतीय पुरस्कार श्री अमरापुर स्थान जयपुर में स्वरबद्ध सुनाने पर चयन करके दिये जायेगें.
- दोहे सुनाने वाले प्रतियोगी अपना पूर्ण नाम, पता, आयु व फोन नम्बर लिखवायें.
- प्रतियोगीयों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सभी को सांत्वना पुरस्कार २३ जून सद्‌गुरू टेऊँराम जन्मोत्सव अवसर पर दिये जायेगें.

प्रतियोगिता संबंधित जानकारी के लिए फोन– 0141–5107558 पर संपर्क करें.

15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश
2004 सिंहस्थ
विक्रम संवत् 2061

प्रतियोगियों को ये दोहे याद करके सुनाने हैं

शान्ति के दोहे

१. भक्त वत्सल भय हरन हरि, करूणा शील निधान।
कह टेऊँ कलि काल में, लाज राख भगवान ।।

२. हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बंधु दातार ।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भण्डार ।।

३. मै मांगत नहिं और कुछ,सन्त दरस हरि देह ।
कह टेऊँ दर्शन करे, सफल करूं तन एह ।।

४. इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, नहिं मांगूं धन धाम ।
कह टेऊँ मुझ दीजिये, हे हरि अपना नाम ।।

५. जितने कणके रेत के, उतने अवगुण मोहि ।
कह टेऊँ गुरू बख्श ले, शरण पड़ा हूं तोहि ।।

६. सतगुरू मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास ।
कह टेऊँ नित सुमति दे,सन्तन माहिं निवास ।।

७. सतगुरू तुम पूरण करो, मेरी यह अर्दास ।
कह टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस ।।

८. सतगुरू आत्मज्ञान दे, हरो देह अभिमान ।
कह टेऊँ सब घट विषे, दिखलाओ भगवान ।।

९. रे मन राखो राम में, पूरण तुम विश्वास ।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुख नास ।।

१०. राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग ।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग ।।

११. चिन्ता भोजन वसन की, टेऊँ करते काहिं ।
हरि विश्वम्भर दे सबहिं, क्या तुम देवहिं नाहिं ।।

१२. उदर भरण के कारने, भटकत काहिं अजान ।
त्यागे चिन्ता पेट की, स्मरो श्री भगवान ।।

१३. कह टेऊँ संसार में, वात यही है सार ।
[illegible] विषय विकार ।।

१४. कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक ।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक ।।

१५. मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार ।
कह टेऊँ तिहं याद कर, सुमरो सत्कर्तार ।।

१६. मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण धन, जिंह दीनी नर देह ।
कह टेऊँ तिस राम का, नित सुमरण कर लेह ।।

१७. पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार ।
कह टेऊँ तिहं सफल कर, सुमरे सृजणहार ।।

१८. चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज ।
कह टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज ।।

१९. गफ्लत में न गंवाइये, मानुष देह महान ।
कह टेऊँ तुम जाग के, भज ले श्री भगवान ।।

२०. कह टेऊँ तुम चेत ले, अब कुछ बिगड़ी नाहिं ।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन माहिं ।।

२१. सोए अविद्या नींद में, कह टेऊँ बहु काल ।
अब तो गफ्लत छोड़ के, सुमरो दीन दयाल ।।

२२. हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निद्रा माहिं ।
कहे टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नाहिं ।।

२३. अमृत वेले ऊठ के, छोड़ कल्पना काम ।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर, सुमरो गुरू का नाम ।।

२४. प्रातः काल जो ऊठ के, करत हरी गुण गान ।
कह टेऊँ सो जगत में, होवत संत सुजान ।।

२५. निशदिन कर शुभ भावना, हरि को जान हजूर ।
कह टेऊँ मन से करो, अशुभ भावना दूर ।।

२६. नीच ऊँच निर्धन धनी, सब में [illegible] ।
कह टेऊँ शुद्ध [illegible] सबका कर सत्कार

२७. बुरा भला जिन [illegible]
कह टेऊँ [illegible]

२८. बुरा किसी का ना करो, सबका भला विचार ।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार ।।

२९. कल्प वृक्ष है आत्मा, कह टेऊँ सब माहिं ।
जांकी जैसी भावना, तैसा फल दे ताहिं ।।

३०. मन पर साक्षी होय तुम, धर विवेक वैराग ।
कह टेऊँ जे दोष हैं, तांका करो त्याग ।।

३१. थोड़ जीवन हेतु तुम, करो न पाप अजान ।
कह टेऊँ मन जीत कर, पुण्य करो प्रधान ।।

३२. निश्चल मन से मिलन है, निश्चल आत्म राम ।
टेऊँ मन निश्चल करे, पाओगे सुख का धाम ।।

३३. इष्ट देव भगवान की, करे उपासन जोय ।
कह टेऊँ तिस मनुष्य का, निश्चल शुद्ध मन होय ।।

३४. कर्म धर्म जप ध्यान तप, योग यज्ञ व्रत दान ।
कह टेऊँ हरि हेत कर, छोड़ ममत अभिमान ।।

३५. जप तप सेवा कर्म शुभ, तीर्थ दान स्नान ।
श्रद्धा बिन फल देत नाहि, कह टेऊँ सत् मान ।।

३६. प्रेम बिन पहुँचे नहीं, को जन हरि के धाम ।
कह टेऊँ ताते जपो, प्रेम सहित हरि नाम ।।

३७. प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान ।
कह टेऊँ संतो करो, हरि से प्रेम प्रधान ।।

३८. जिन जिन हरि के प्रेम में, दीना तन मन प्रान ।
टेऊँ तिन के कदम पर, झुक झुक पड़त जहान ।।

३९. बेमुख हो करतार से, करत जगत से प्यार ।
कह टेऊँ तिस मनुष का, कबहुँ न होत उद्धार ।।

४०. संत गुरू परमात्मा, साचे संगी जान ।
कह टेऊँ इन तीन से, करले प्रेम सुजान ।।

४१. हरि मेली हैं सन्त जन, हरि से देत मिलाय ।
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरणी आय ।।

४२. जैसे जल में रहत है, अहनिश कमल अलेप ।
कह टेऊँ तिमि जगत में, संत रहत निर्लेप ।।

४३. संत राम में भेद नहिं, संत राम स्वरूप ।
कह टेऊँ रट राम को, भये राम के रूप ।।

४४. स्वार्थ बिन सेवा करे, सबको दे सन्मान ।
टेऊँ समता में रहे, सांई संत पछान ।।

४५. जग में जीते जो मरे, तजे देह अभिमान ।
कह टेऊँ संसार में, सो नर मुक्ता मान ।।

४६. जीवित जग में मरत जो, तां पर छत्र झुलंत ।
टेऊँ जग तिहं पूजते, जान रूप भगवंत ।।

४७. क्षमा जांके मन बसे, तिस हरि अंतर नाहिं ।
कह टेऊँ सुर नर सभी, दर्शन चाहत ताहिं ।।

४८. क्रोध त्याग क्षमा धरे सो है पूजन योग ।
कह टेऊँ तिहं दरस ते, मिट जावत सब रोग ।।

४९. कलि काल में कठिन है, योग यज्ञ तप ध्यान ।
साधु संग हरि नाम से, टेऊँ हो कल्यान ।।

५०. संत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं ।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं ।।

५१. पार करत भव सिन्धु से, सत्संग परम जहाज ।
कह टेऊँ तामें चढ़ो, छोड़ जगत की लाज ।।

५२. सत्संग से सत्गुरू मिले, सत्गुरू से निज ज्ञान ।
कह टेऊँ निज ज्ञान से, मिलहैं पद निर्बान ।।

५३. सत्गुरू बुद्धि के नैन में, डारे अंजन ज्ञान ।
कह टेऊँ तम भ्रम हर, दिखलावे भगवान ।।

५४. कह टेऊँ भगवान से, सत्गुरू अधिक पछान ।
कर्मो का फल देत हरि, गुरू दे मुक्ति दान ।।

५५. गुरू बिन रंग न लागहीं, गुरू बिन ज्ञान न होय ।
कह टेऊँ सत्गुरू बिना, मुक्ति न पावे कोय ।।

५६. पूरन सत्गुरू देव से, पूरन ले उपदेश ।
कह टेऊँ तिहं सुमर के, पाओ पूरन देश ।।

५७. सर्व व्यापक जान हरि, सबकी करिये सेव ।
कह टेऊँ सब पाप हर, देखो आत्म देव ।।

५८. ब्रह्म आत्मा एक है, सत्चित् आनन्द रूप ।
कह टेऊँ ज्ञानी जिसे, जानत निज स्वरूप ।।

५९. साक्षी चेतन ब्रह्म का, सब घट में है वास ।
कह टेऊँ शशि सूर्य में, तांका है प्रकाश ।।

६०. साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुनि आकाश ।
कह टेऊँ तिहं जान के, पाओ सुख अविनाश ।।

सद्गुरु टेऊँराम वर्षी उत्सव
२० मई से २४ मई २००४ तक

42

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का सत्साहित्

हिन्दी

1. श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	301/–
2. सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग)	50/–
3. सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय–अंतिम भाग)	75/–
4. अमृत वाणी (भजन संग्रह)	30/–
5. अमर कथा	10/–
6. अमरापुर दर्शन	5/–
7. यमराज नचिकेता (कविता)	5/–
8. चूड़ाला शिखरध्वज (कविता)	5/–
9. श्री प्रेम प्रकाश दोहावली	2/–
10.प्रार्थना	10/–
11.ब्रह्मदर्शनी (पद)	10/–
12.स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग)	5/–
13.स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग)	10/–
14.साक्षी दर्शन	2/–
15.स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/–
16.सद्गुरू टेऊँराम चालीसा	1/–
17.गुरू आराधना (सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन)	15/–
18.गुरू वन्दना (स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन)	10/–
19.हे मेरे मन जागो ! (स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के प्रवचन)	10/–
20.वामन बली (कविता)	5/–
21.कवितावली छन्दावली	2/–
22.जन्म साखी (सद्गुरू टेऊँराम जी)	3/–
23.नित्य नियम प्रार्थना	5/–
24.स्वामी शान्तिप्रकाश जीवन चरित्र	30/–
25.स्वामी टेऊँराम महिमा भजन	25/–
26.स्वामी गुरूमुखदास भजन माला	2/–
27.स्वामी गुरूमुखदास दोहावली	2/–
28.गुरू पद लागो (स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के प्रवचन)	10/–

गुरूमुखी

1. श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	501/–
2. जन्म साखी (सद्गुरू टेऊँराम जी)	2/–

सिंधी

1. श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	151/–
2. सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग)	50/–
3. सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय–अंतिम भाग)	50/–
4. स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम–भाग)	25/–
5. स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय–भाग)	10/–
6. स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/–
7. अमरापुर वाणी (देवनागरी लिपि)	30
8. स्वामी शान्ति प्रकाश जीवन चरित्र	30
9. साक्षी दर्शन	
10.गुरू अराधना (सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन)	2
11.प्रार्थना	10
12.भजन बहार भाग–प्रथम (देवनागरी लिपि)	5
13.भजन बहार भाग–द्वितीय (देवनागरी लिपि)	30
14.नित्य नियम प्रार्थना	30

अंग्रेजी

5

1. सद्गुरू टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग)	10
2. प्रार्थना	3
3. ब्रह्मदर्शनी	50
4. स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम–भाग)	5
5. स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय–भाग)	50
6. अमरापुर दर्शन	2
7. गुरू आराधना (सद्गुरू टेऊँराम महिमा भजन)	10
8. स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25
9. नित्य नियम प्रार्थना	5
श्री अमरापुर विजय पचांग (हिन्दी,सिंधी)	10

कैसेट्स

1. सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज–प्रवचन कैसेट	20
2. सद्गुरु शान्तिप्रकाश जी महाराज–प्रवचन कैसेट	20
3. सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज–प्रवचन कैसेट	20
4. सद्गुरु भगतप्रकाश जी महाराज–प्रवचन कैसेट	20
5. भजन सुधा (स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज)–भजन कैसेट	20
6. आहिंन तुहिंजे आसिरे जे–भजन कैसेट	25
7. नमः नमः गुरुदेव नमः–हिन्दी भजन कैसेट	20
8. सत्नाम साक्षी सर्व आधार–भजन कैसेट	20
9. सत्नाम साक्षी बोल–भजन कैसेट	20
10.अमरापुर वाणी–तीन भजन कैसेट सेट	50
11.ब्रह्मदर्शनी–पांच कैसेट सेट	100
12.शान्ति के दोहे–दोहा कैसेट	20
13.सांई टेऊँराम अमृतवाणी टी–सीरिज–दोहा कैसेट	20
14.गुरू वन्दना–भजन कैसेट	20
15.सद्गुरू टेऊँराम अमृतवाणी–दो दोहा कैसेट सेट	50
16.सत्नाम साक्षी सर्व आधार–धुनी कैसेट	25
17.सद्गुरू टेऊँराम चालीसा–चालीसा कैसेट	25
18.सद्गुरू सर्वानन्द चालीसा–चालीसा कैसेट	25
19.स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी–भजन कैसेट	25
20.गुरू प्रार्थना–आरती–प्रार्थना कैसेट	25

सीडी,विडियो सीडी,विडियो कैसेट भी उपलब्ध हैं

प्राप्तिः श्री अमरापुर स्थान,जयपुर, यात्रा समय कांउटर कुम्भ मेला छावनी व समस्त प्रेमप्रकाश आश्रमों में उपल

ाद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का ६४वाँ वार्षिकोत्सव

स्वामी माधवदासजी महाराज का २०वाँ वार्षिकोत्सव

रविवार 16 मई से सोमवार 24 मई 2004 तक

कार्यक्रम रविवार 16 मई 2004 18वाँ सामूहिक विवाह समारोह

स्वामी माधवदासजी महाराज का वार्षिकोत्सव

सोमवार17 मई 2004–प्रातः 5 बजे प्रभातफेरी, सायं 4 से 6 बजे तक रामध्वनि व सत्संग, सायं 7 बजे श्रीराम चरितमानस का अखण्ड पाठ प्रारम्भ.

मंगलवार 18 मई 2004–प्रातः 7 से 1 बजे तक सत्संग, रात्रि 9 बजे से श्री रामचरित मानस का अखण्ड पाठ सम्पन्न.

बुधवार 19 मई 2004–प्रातः 5 से 8 बजे तक सत्संग–कीर्तन, प्रातः 8 से 9 बजे तक हवन पुनः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक सत्संग, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ एवं श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ आरम्भ, सायं 4 से 8 बजे तक सत्संग एवं समाधि पर ज्योति प्रज्वलन.

आयोजन स्थल

प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर, अजमेर

फोनः– 0145–2441850, 098292–70850

सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का वार्षिकोत्सव

गुरूवार 20 मई 2004–प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग कीर्तन, सायं 5 से 7 बजे तक शोभायात्रा आदर्शनगर में, सायं 7 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग कीर्तन.

शुक्रवार 21 मई 2004–प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग–कीर्तन व गुरु ग्रंथ साहिब का अखण्ड पाठ प्रारम्भ, सायं 4 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग–कीर्तन.

शनिवार 22 मई 2004–प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग–कीर्तन तथा सायं 4 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग–कीर्तन.

रविवार 23 मई 2004–प्रातः 5 से 7 बजे तक सत्संग, 8 से 11 बजे तक हवन, ध्वजावंदन, बैंड व शहनाई वादन, दोपहर 11 से 1 बजे तक संत समागम, पाठों के भोग और आम भंडारा, सायं 4 बजे सद्गुरू महाराज के श्री विग्रहों का अभिषेक एवं रात्रि 9 बजे तक सत्संग एवं पल्लव.

सोमवार 24 मई 2004–श्री प्रेम प्रकाश आश्रम पुष्करराज में प्रातः 8 से दोपहर 1 बजे तक सत्संग व भंडारा.

प्रश्नावली – 3 *क्या आप जानते हैं ?* आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तर

प्र.1 कुम्भ मेला कौनसे चार पवित्र स्थानों पर लगाया जाता है ?
उ. ....

प्र.2 कुम्भ मेले में आचार्यश्री द्वारा स्थापित छावनी किस नाम से प्रसिद्ध है ?
उ. ....

प्र.3 उज्जैन कुम्भ मेले के अंतर्गत चैत्र मेला कौनसी तारीख को मनाया जा रहा है ?
उ. ....

प्र.4 इस वर्ष कौनसा चैत्र मेला मनाया जा रहा है ?
उ. ....

प्र.5 चैत्रमेला कौनसे माह की सिंधी तीख को मनाया जाता है?
उ. ....

प्र.6 स्वामी गुरुमुखदासजी का समाधि स्थल कहाँ स्थापित है ?
उ. ....

प्र.7 स्वामी गुरुमुखदासजी की कौनसी पुण्यतिथि मनाई जा रही है ?
उ. ....

प्र.8 सदगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज का जन्म कौनसे महीने की सिंधी तारीख को मनाया जाता है
उ. ....

प्र.9 सत्य की खोज नामक पुस्तक में किस महापुरूष के प्रवचनों का संकलन किया गया है ?
उ. ....

प्र.10 प्रेम प्रकाश मण्डल की चतुर्थ गुरू गद्दी की बागडोर किस महापुरूष ने संभाली ?
उ. ....

इस आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी में कोई भी भक्तजन भाग लेकर हमें इसके उत्तर लिखकर भेज सकता है. सही उत्तर भेजने वालों के नाम अगले अंक में प्रकाशित किये जाएगें.– संपादक प्रेम प्रकाश संदेश

प्रेम प्रकाश संदेश परिवार

नयी सदस्यता व नवीनीकरण कार्य के के

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की मासिक हिन्दी पत्रिका प्रेम प्रकाश संदेश के माध्यम
सद्गुरू भगवान के यश को फैलाने में सहायक भारतवर्ष में फैला हमारा परिवा

जयपुर — श्री अमरापुर सत्साहित्य भंडार श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर प्रतिदिन प्रातः ८ से ११ व सायं ५ से ७ बजे तक	**जयपुर** — प्रेम प्रकाश संदेश स्टॉल श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर शनिवार व रविवार प्रातः ८ से ११	**जयपुर** — श्री कुमार नारायणदास चंदनानी राजस्थान ऑयरन एण्ड हार्डवेयर स्टोर, 93-त्रिपोलिया बाजार, जयपुर ☎2310160(दु.),2614817(घर)	**जयपुर** — श्री नारायणदास रामचंदानी पूजा कटपीस स्टोर, धावाजी का खु रामगंज बाजार, जयपुर ☎2612059(दु.),2331476(घ
अजमेर — श्री मोहनलाल शिवनानी 385/3,गली नं. १,लौगिंया मोहल्ला, ईश्वरीबाई दरबार के सामने, अजमेर ☎2627236(ऑ.),2621778(घर)	**अहमदाबाद** — श्री नरोत्तम भाई परियानी 4. स्वामी सर्वानन्द सोसायटी, सरदार नगर, लोटस हाऊस के पास, अहमदाबाद ☎2120081(ऑ.) मो. 98240-11685	**अमरावती** — श्री नारायणदास तेजूराम हेमराजानी महेश कार्ड हाऊस जवाहर रोड, अमरावती ☎2678287(ऑ.),2670001(घर)	**आगरा** — श्री विनोद कुमार साजनानी दीपक पुस्तक भण्डार, शाहगंज, आगरा ☎2211499(दु.),2275958(घर
अलीगढ़ — श्री अर्जुनदास माखीजा 6/710, सिंधी धर्मशाला के पास, नई बस्ती, अलीगढ़ ☎0571-2403682	**अलीगढ़** — श्री ज्ञानचंद माखीजा 6/662, सिंधी धर्मशाला के पास, नई बस्ती, अलीगढ़ ☎2420628, 2001479	**अहमदनगर** — श्री श्रीचंद तेजूमल तलरेजा तुलसी लॉटरी एजेन्सी-तुलसी शूज आशा टॉकीज रोड, अहमदनगर ☎2344582(दु.),2327482(घर)	**अलवर** — श्री माणिकलाल संगीत मास्टर परिवाली हवेली के पास, वार्ड-५ खैरथल, अलवर ☎223648 पी पी
इन्दौर — श्री राजू कन्हैयालाल ठकुरेल 121-द्वारिकापुरी, 60 फीट रोड, आकाश प्रॉपर्टी के पास, इन्दौर ☎2785291	**इन्दौर** — श्री संत नरेशलाल प्रेमप्रकाशी प्रेम प्रकाश आश्रम 534-द्वारिकापुरी कॉलोनी, इन्दौर ☎27829282	**जोधपुर** — श्री ताराचंद (अशोक) श्यामवाणी जय सर्वानन्द जनरल स्टोर, 14/1022 हाऊसिंग बोर्ड, चौपासनी, जोधपुर ☎2709149	**ब्यावर** — श्री नानकराम उत्तूमल पारवा इंडियन कलर कंपनी, चांग चितार रोड, ब्यावर ☎250477
कोटा — श्री मनीष कुमार मांधवानी प्रेम प्रकाश निवास, 2/143 गणेश तालाब, कोटा ☎2400916	**कोटा** — श्री संत श्यामलालजी प्रेम प्रकाश आश्रम, श्रीपुरा सिंधी चौक, कोटा ☎	**गोंदिया** — श्री रवि कुमार मुरलीधर खूबचंदानी सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश रेडीमेड, डॉ. कारड़ा के पास, सिंधी कॉलोनी, गोंदिया ☎226701	**कानपुर** — श्री मनोज कुमार टेकचंदानी 112/363, स्वरूप नगर कानपुर ☎22292495
रायपुर — श्री अमृतलाल कालरा नीलम वॉच पार्टस्,बी-२,एम.जी.रोड, आर.एस. कॉम्पलेक्स, रायपुर ☎2533176(दु.),2422369(घर)	**भाटापारा** — श्री लक्ष्मणदास थारानी विक्रम टेड्रर्स संत कंवरराम वार्ड, भाटापारा ☎220128(ऑ.),220428(घर)	**चाम्पा** — श्री वरियलदास गुरनानी मंशाराम कमलमल क्लॉथ मर्चेन्ट सदर बाजार,चाम्पा, छत्तीसगढ़ ☎2450044(दु.),2244215(घर)	**सूरत** — श्री रमेश कुमार राजपाल फ्लेट-8, दूसरी मंजिल, वासुनगरी अपार्टमेंट, रामनगर, सूर ☎2475910(ऑ.),2768656(घ
गोंदिया — श्री गोपीचंद लधानी श्री अमरापुर ट्रेडर्स जनता सहकारी बैंक के नीचे, गोंदिया ☎230705(दु.),231636(घर)	**फरीदाबाद** — श्री गुरमुखदास अरोड़ा 3/31, सैयदवाड़ा, फरीदाबाद शहर ☎25262730(आ.),25297061(घ)	**डबरा** — श्री जितेन्द्र कुमार तलरेजा ललित एम्पोरियम 27, विद्या मार्केट, डबरा ☎222278, 224150(घर)	**खंडवा** — श्री अशोक कुमार मूलचंदानी मकान 249, गली नं.-4, सिंधी कॉलोनी, खंडवा ☎228666, 227649(घर)
राजपुरा — श्री गुरदास सचदेवा 1985 ए, प्रेम प्रकाश मंदिर राजपुरा टाउन (पंजाब) ☎226658	**धमतरी** — श्रीमती लक्ष्मीदेवी पंजवानी श्री राजेश गोपालदास पंजवानी रामसागर पारा, श्री चौक, धमतरी ☎	**जलगाँव** — श्री पंकज चंदूलाल किंगरानी 29, समाधा नगर सिंधी कॉलोनी, जलगाँव ☎2224719(दु.),2227947(घर)	**मुंबई** — श्री संत सुंदरदास जी प्रेम प्रकाश मंदिर, 1 बी., 9वां रोड, खार डांडा, खार (w) मुंबई ☎
बुरहानपुर — श्री अशोक कुमार चावला श्री ट्रेडर्स, गांधी भवन के पास, बुरहानपुर ☎253461,252977	**गांधीधाम** — श्री टेकूमल रामचंद टिलवानी मकान 585,9/बी., भारत नगर, राधास्वामी सोसायटी, गांधीधाम ☎	**वाराणसी** — श्री संत महादेव जी प्रेम प्रकाश आश्रम, 34, सिंधु नगर कॉलोनी, वाणारसी ☎225585	**फैजाबाद** — श्री संत भावनदास जी प्रेम प्रकाश आश्रम, 24/4, रामनगर कॉलोनी, फैजाबाद ☎246159
दिल्ली — श्री लालू प्रकाश जी प्रेम प्रकाश धाम, [illegible] दिल्ली ☎ [illegible]	**खैरथल** — श्री हीरालाल भूरानी विजय स्पोर्ट्स एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स, के.जी.रोड,खैरथल (अलवर) ☎222431, 222631	**हरिद्वार** — श्री नन्दूराम जी प्रेम प्रकाश आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार ☎260144, 260815	**पूना** — श्री ओम प्रकाश बजाज 11/128, लुल्ला नगर, पूना-40 ☎

दिमागी कसरत

आध्यात्मिक वर्ग पहेली क्रं.- 6

एँ से दाएँ

विक्रम संवत् प्रारंभ होने वाले इस माह को आम भाषा में कहते हैं, हिन्दू नववर्ष प्रारम्भ माह. (२)
चेटीचंड श्री वरूणदेव भगवान.....की जयंती के रूप में मनाते हैं. (४)
. तपस्या करने वाला. (३)
. .....(हाथी) और ग्राह की लड़ाई में विष्णु भगवान ने .... को बचाया, वारि, कुंचर. (२)
ं.अग्नि, आग, पावक. (३)
).सूर्य का पर्व जिस दिन तिल दान करते है, राशि (३.३)
३.चंचल....को वश में करने हेतु आत्म संयम व नियत्रंण आवश्यक है, नम का उल्टा.(२)
५.सृष्टि के रचनाकार ब्रह्मा. (४)
८.स्थान जहां भूतों का वास हो. (३)
६.किसी को नीच समझकर उसका....करना महापाप है. (४)
२.सत्य प्रायः....(कटु) होता है. (३)
३.सीता ने स्वयंबुर में राम का.....किया. (३)

ऊपर से नीचे

. महान कृष्ण भक्त जो कृष्ण के भजन गाकर नृत्य में मग्न हो जाते थे, बंगाल के प्रसिद्ध संत. (३,४)
. किसी अभीष्ट के सिद्धि अथवा देवता को प्रसन्न करने को करते हैं,..... बाल रचहिं प्रपंच विधाता. (२)
. चित्रगुप्तजी प्राणियों के पाप-पुण्य कर्मों का....रखते हैं.(२)
. ऐसी लागी.....मीरा हो गई मग्न. (३)
. श्रीकृष्ण ने सुदामा के तंदुल अत्यंत प्रेम से.....किए. (३)
. कमल जो विष्णु के हाथ में विराजता है, पंकज (३)
०.आम तौर पर प्राणी परमात्मा को....समय आने पर याद करता है.(३)
२.संत व सज्जनों की....(साथ) दुर्गुणों का नाश करती है. (३)
४.प्रातः सूर्य..करने से शरीर को ऊर्जा व स्फूर्ति मिलती है,नमन,प्रणाम. (४)
६.महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियां...कथाएं कहलाती हैं. (३)
७.पर्वत, गिरि. (३)
०.नाद, शब्द, वर का उल्टा. (२)
१.कृष्ण ने...भूमि में अर्जुन को गीता का संदेश दिया. (२)

प्रस्तुतिः सुधा जौहरी, तिलकनगर, जयपुर

1	2	ॐ	3	4		5	ॐ
6		7	ॐ		ॐ	8	9
	ॐ		ॐ	ॐ	10		
11			12			ॐ	
	ॐ	ॐ		ॐ	13	14	ॐ
15	16	17		ॐ	ॐ		ॐ
18			ॐ	19	20		21
ॐ	22			ॐ	23		

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-5 का सही हल

1 प्रा	ण	2 प्र	3 ति	ष्ठा	ॐ	4 ना	5 ना
र्थ	ॐ	6 सा	ल	ॐ	7 कं	द	रा
8 ना	9 र	द	ॐ	10 चा	ॐ	ॐ	य
ॐ	वि	ॐ	11 ची	र	12 ह	र	ण
13 स	दा	चा	र	ॐ	रि	ॐ	ॐ
14 र	स	ॐ	ॐ	ॐ	15 छा	प	16 र
स्व	ॐ	17 मी	ॐ	18 क्षी	र	ॐ	ही
19 ती	र्थ	रा	ज	ॐ	ॐ	20 श्या	म

सही हल के लिए आगामी अंक देखें - सही हल भेजने वालो के नाम आगामी अंक मे प्रकाशित किये जाऐगें. सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर 5 मई तक कार्यालय में भिजवायें

प्रेम प्रकाश संदेश, गाढ्वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर - 474001

आध्यात्मिक वर्गपहेली-५ (सही हल भेजनें वालों के नाम-)
यपुर से-यशिका बच्वानी, जय प्रेमप्रकाशी, गौरव ममतानी, भारती दत्तवानी, माला टिलवानी, आशा घवानी, रवि तीर्थानी, आशी-लक्ष्मी रामवानी, हरीश टहलानी, लाजवन्ती नरयानी, दीपक नवानी, भावना पारवानी, अजमेर से-कु.ममता शिवनानी, ब्यावर से-मनीष, दीप, सपना, संगीता, शांतू शिवानी, लोकेश रेखा [illegible]वानी, राजू अमीता पारवानी, पिंकी-पद्मा [illegible]वानी, चन्द्रा पारवानी, इन्दौर से-हरीश बालानी, खंडवा से-कु. नीतू मोटवानी, चन्द्रभान रबख्शानी, धमतरी से-सुरेश पंचवानी, श्रीमती लक्ष्मीदेवी पंजवानी, डिंपल पंजवानी, अनिल [illegible]वानी, कृष्णा चांदवानी, नेहा वाधवानी, कमल सरला वाधवानी, सुधीर ठाकुर, सोनम वाधवानी, कु. [illegible]कना हिन्दूजा, गोधूमल-सुशीला हिन्दूजा, श्रीमती किशोर वाधवानी, मोहनलाल राजकुमारी [illegible]धवानी, पुरुषोत्तम निशा-चन्दर वशानी, अशोक-मीना वाधवानी, बालाघाट से-शोभा-सरिता आहूजा, कोटा से-कन्हैयालाल छावड़ा, कामठी से-रवि मूलानी, भानुप्रतापपुर से-[illegible] प्रेम प्रकाशी, भाटापारा से-आत्माराम गाईदानी, गांधीधाम से-रेखा किशन वाधवानी, शालू चेलानी हरेश दुम्बवानी, जयती एम. भक्तानी, खैरथल से-रूपा नौतानी, प्रेमप्रकाशी शालू हेमलता नीतू [illegible] तलरेजा, रायपुर से-पूजा खुबचंदानी, कु.गीता चंदरलाल गुरनानी, [illegible] से-रेनू श्यामसुंदर माखीजा, श्रीमती पुष्पा मोहनानी, दीपा इंदरलाल मोहनानी, [illegible] रामचंद माखीजा, [illegible] से-श्रीमती राखी वेदवानी.

2004 सिंहस्थ
विक्रम संवत् 2061

ॐ श्री अमरापुर धाम, जयपुर

ग्रीष्मकालीन दैनिक समय सारण

दर्शन
सुबह : 6:00 बजे से 12:00 बजे तक
सायं : 3:00 बजे से 9:00 बजे तक

सत्संग
सुबह : 7:00 बजे से 8:20 बजे तक
सायं : 5:00 बजे से 6:30 बजे तक

आरती सायं : 6:30 बजे

झांकी दर्शन सायं : 5:00 बजे से 9:00 बजे तक (गुरुवार व शनिवार)

रविवार सत्सं
सुबह : 7:00 बजे से 9:30 बजे
(सत्संग-अमृत प्रवचन कैसेट
सायं : 5:00 बजे से 7:00 बजे
(सत्संग-भजन-आरती)

गुरू-शनि सत्संग
सुबह : 7:00 बजे से 8:30 बजे
(सत्संग-गुरू प्रार्थनाष्टक पाठ
सायं : 5:00 बजे से 7:00 बजे
(भजन-आरती-सत्नाम साक्षी मंत्र
समाधि स्थल पर पुष्पों का श्रृंगा

श्री मंदिर व मुख्य द्वार दोपहर 12 से 3 व रात्रि 9 से प्रातः 6 बजे तक बंद रहेगा.

उज्जैन में 29 अप्रेल को भव्य शोभायात्रा निकलेगी

रेलवे स्टेशन से मात्र डेढ़ किलोमीटर दूर चार लाख वर्ग मीटर के विशाल भू-भाग में निर्मित श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी) का मुख्यद्वार जो ५० फुट की ऊँचाई लिये हुए, टण्डे आदम अमरापुर दरबार की स्मृति को सजीव रूप दे रहा है तो प्रवेश करते ही अमरापुर धाम, टण्डा आदम, खण्डूग्राम, भिट्टशाह ग्राम का निर्माण भी बरबस ही प्रेमियों आगन्तुक भक्तों को सिन्ध की ओर ले जाता है. श्री अमरापुर यज्ञशाला में जहां सद्गुरू महाराज सन्तो के सानिध्य में भक्तगण हवन यज्ञ से वातावरण के साथ-साथ अपने आपको भी पावन कर सकेगें वहीं सद्गुरू विश्रामगृह कक्ष, सन्त निवास व यात्री निवास का निर्माण भी आगन्तुक यात्री भक्तों को आनन्दित करेगा. इस सारे निर्माण व व्यवस्थाओं सेवाओं के लिये पिछले काफी समय से पूज्य स्वामी जी के निर्देशन में तैयारियां चल रहीं थी. छावनी के सामने ही क्षिप्रा तट पर अस्थाई रूप में बनाया गया सद्गुरू स्वामी टेऊँराम घाट भी साधकों को ध्यान साधना की ओर प्रेरित करने वाला है.

१५ अप्रेल को छावनी का शुभारम्भ सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के कर कमलों से हवन व श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजा वन्दन करके किया गया. इस अवसर पर एक हजार से अधिक प्रेमी भक्तों के सा प्रकाश मण्डल का सन्त मण्डल उपस्थित था. जैसा कि आपको प है कि ८३ वां चैत्र मेला भी कुम्भ मेले के साथ २६ अप्रेल से ३ म मनाया जाऐगा. २६ अप्रेल को सांय ४ बजे अन्नक्षेत्र से एक भव्यशो भी निकाली जायेगी. चैत्र मेले के समापन के पश्चात् ४ मई को स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्म दिवस भी अन्नक्षेत्र में जायेगा. अब तो बस आप अपने यहां से सुलभ साधनों के द्वा निकल पड़िये उज्जयिनी सिंहस्थ मेले में प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र की ओ हल्का, बिस्तर, जिसमें चादर, तकिया व लोटा गिलास टार्च भी अव आवें. हां आपने छावनी का पता तो नोट कर ही लिया होगा नहीं तें साथ ही छावनी का फोन नं. भी घर पर नोट करवायें व स अपने पास नोट करें. जिससे आपका परिवार भी समय असमय सम्पर्क कर सके. छोटे बच्चों के साथ न आवें महिलाऐं घर के के या समूह के साथ ही आवें.

पता-श्री प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र (छावनी)
जन्तर मन्तर रोड,लालपुल के पास उज्जैन
फोन-0734.5033319 मो0-94250-53982.98931-0

15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश
सिंहस्थ 2004
विक्रम संवत् 2061

सांई टेऊँराम बाबा की लीलाएँ

चित्रकथा—३

चित्रांकन, लेखन-सुधा जौहरी, जयपुर



15 अप्रैल 2004
प्रेम प्रकाश संदेश
2004
सिंहस्थ
विक्रम संवत् 2061



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

13 अप्रैल से 5 मई	2004 तक	उज्जैन	-094140-41864,098290-14850
6 मई	2004	यात्रा	-094140-41864,093290-14850
7 मई से 8 मई	2004 तक	फैजाबाद	-05278-246159
9 मई से 11 मई	2004 तक	वाराणसी	-0542-225585
12 मई से 13 मई	2004 तक	इलाहाबाद	-0532-2655214
14 मई से 16 मई	2004 तक	कानपुर	-0512-2215747
17 मई से 18 मई	2004 तक	लखनऊ	-0522-2211901
19 मई	2004	जयपुर	-0141-2372424,2372423
20 मई से 23 मई	2004 तक	अजमेर (आदर्शनगर)	0145-2441850,2440279
24 मई से 28 मई	2004 तक	जयपुर	-0141-2372424,2372423
29 मई से 31 मई	2004 तक	खैरथल	-01460-2441850,098290-14850
1 जून से 6 जून	2004 तक	जयपुर	-0141-2372424,2372423
7 जून से 9 जून	2004 तक	अहमदनगर	-0241-2323397,098290-14850
10 जून	2004	औरंगाबाद	-094140-41864,098290-14850
11 जून	2004	जालना	-094140-41864,098290-14850
12 जून से 15 जून	2004 तक	मुंबई	-022-26057711,26057579
16 जून से 19 जून	2004 तक	जयपुर	-0141-2372424,2372423
20 जून से 23 जून	2004 तक	अजमेर (दिल्लीगेट)	-0145-2423993,2625416
24 जून से 2 जुलाई	2004 तक	जयपुर	-0141-2372424,2372423

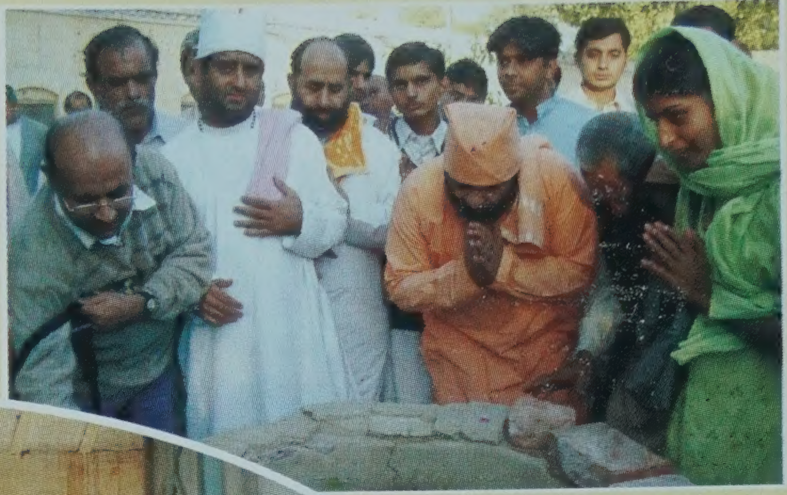
तीज - त्यौहार

15 अप्रेल 2004	गुरुवार	वरुथिनी एकादशी व्रत
19 अप्रेल 2004	सोमवार	सोमवती अमावस्या
21 अप्रेल 2004	बुधवार	चन्द्रदर्शन
22 अप्रेल 2004	गुरुवार	अक्षयतृतीया (अखण त्रीज)
23 अप्रेल 2004	शुक्रवार	श्री गणेशचतुर्थी व्रत
25 अप्रेल 2004	रविवार	सद्गुरु टेऊंराम चौथ
1 मई 2004	शनिवार	मोहिनी एकादशी व्रत
4 मई 2004	मंगलवार	बुद्ध पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत सिंहस्थ कुम्भ का शाही स्नान, खग्रास चन्द्रग्रहण-सूतक सायं 3 बजे से ग्रहण स्पर्श-रात्रि 12:20 से मोक्ष 3:40 बजे
7 मई 2004	शुक्रवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
14 मई 2004	शुक्रवार	वृषभ संक्रान्ति
15 मई 2004	शनिवार	अचला एकादशी व्रत
18 मई 2004	मंगलवार	पितृ कार्य श्राद्ध की अमावस्या
19 मई 2004	बुधवार	देव कार्य अमावस्या, वट सावित्री व्रत
20 मई 2004	गुरुवार	चन्द्र दर्शन, सद्गुरु टेऊंराम वर्सी उत्सव शुरु
23 मई 2004	रविवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
24 मई 2004	सोमवार	सद्गुरु टेऊंराम चौथ, सद्गुरु टेऊंराम पुण्यति

सिंध यात्रा दर्शन



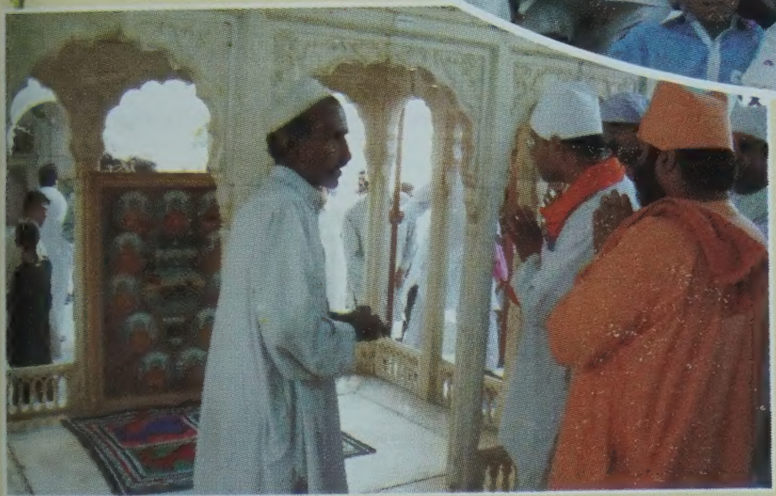
दरियाशाह पर सद्गुरु महाराज जी



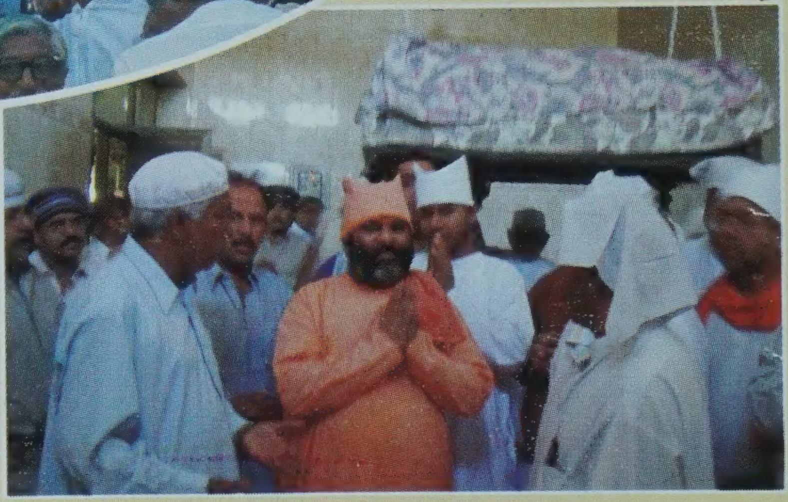
अमरापुर दरबार सिंध में समाधि स्थल का दर्शन करते हुए सद्गुरु महाराज जी



अमरापुर दरबार सिंध के मुख्य द्वार पर सद्गुरु महाराज जी व प्रेमीगण



साधु बेला तीर्थ स्थल का दर्शन करते हुए पूज्य सतगुरु महाराज जी

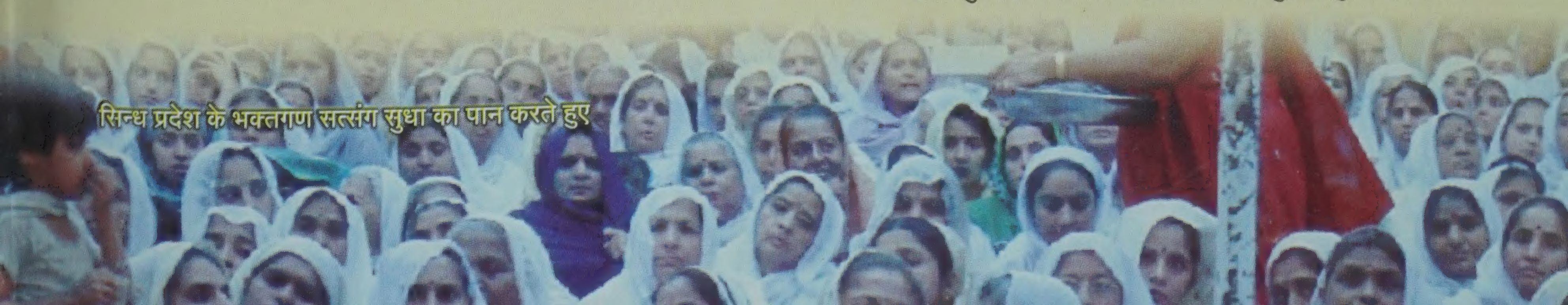


खट वाली दरबार के दर्शन करते हुए सद्गुरु महाराज जी व संत मण्डल





अमरापुर दरबार सिंध में सत्संग वर्षा करते हुए सद्गुरु महाराज जी



सिन्ध प्रदेश के भक्तगण सत्संग सुधा का पान करते हुए

डाक रजि. ग्वालियर संभाग – 161/2002–05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th)

भा. शा. -



श्री अमरापुर दरबार टण्डाआदम सिंध



सद्गुरू टेऊँराम
गौशाला मानसरोवर
जयपुर।





सूच

समस्त सम्माननीय सदस
सूचनार्थ उनके प्रेषण प
ऊपर सदस्यता क्रमांक
संख्या व शुल्क अवधि लिख
है, कृपया उसे अच्छी
जाँचकर अपनी सदस्यता
अवधि समाप्त होने से पह
अपनी सदस्यता का नवीनी
सदस्यों को करा लेना चाहिए

– व्यवस्थ

सदस्यता क्रमांक

श्रीमान्

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की आध्यात्मिक हिन्दी, अंग्रेजी व सिन्धी पत्रिकाएं

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश संदेश

सदस्यता शुल्क

भारत में		विदेश में	
वार्षिक	50/-	वार्षिक	350/-
त्रैवार्षिक	140/-	त्रैवार्षिक	1000/-

पत्रिका मंगवाने का पता

संपादक : प्रेम प्रकाश संदेश, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर
फोन : 0751-2454183

अंग्रेजी त्रैमासिक पत्रिका

अमरापुर संदेश

सदस्यता शुल्क

भारत में		विदेश में	
वार्षिक	200/-	वार्षिक	500/-
त्रैवार्षिक	550/-	त्रैवार्षिक	1400/-

पत्रिका मंगवाने का पता

संपादक : अमरापुर संदेश, श्री अमरापुर स्थान, एमआई रोड, जयपुर
फोन : 0141-2372424

सिन्धी त्रैमासिक पत्रिका

सतूनाम साक्षी संदेश

सदस्यता शुल्क

भारत में		विदेश में	
वार्षिक	150/-	वार्षिक	350/-
त्रैवार्षिक	400/-	त्रैवार्षिक	1050/-

पत्रिका मंगवाने का पता

संपादक : सत्नाम साक्षी संदेश, श्री अमरापुर स्थान, एमआई रोड, जयपुर
फोन : 0141-2372424

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर हरिओम ऑफसेट, कम्पू से मुद्रित करवाकर कार्यालय : स्वामी सर्वानन्द समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया। सम्पादक : शंकरलाल सबनानी फोन : 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751-2454183 आवरण मुद्रण-गणपति, जयपुर फोन : 9414072251